सैटअप शादी

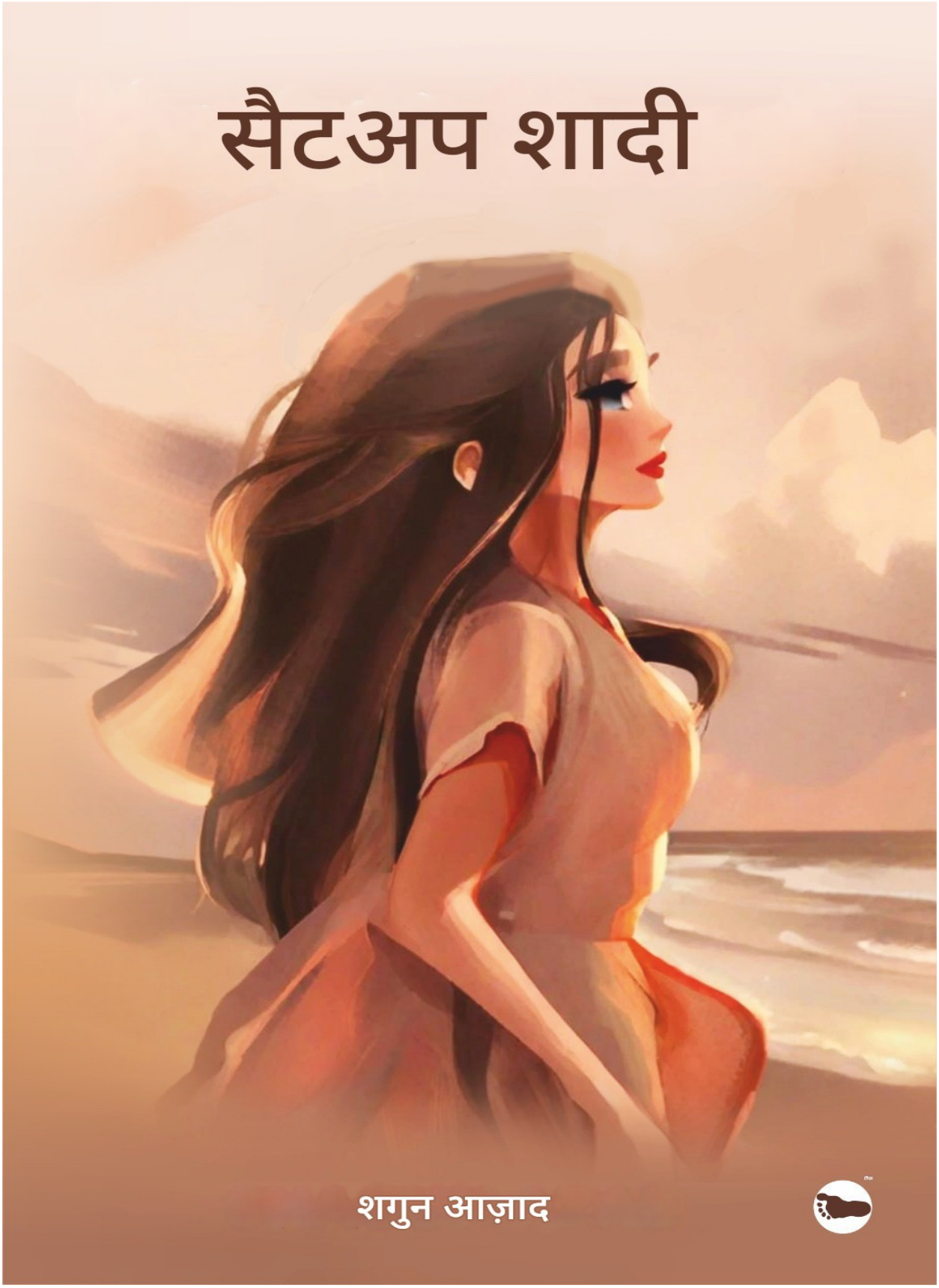

शगुन आज़ाद

Shutup Shaadi

SHAGUN AZAD

SHUTUP SHAADI

SHUTUP SHAADI

[redacted]

B!gfoot Publications
Because, there's a writer in everyone.

INDIA
MALAYSIA
UNITED KINGDOM

लेखक का नोट

आह, दुनिया! ग्लोब घुमाइए, कहीं भी उंगली रखिए, आपको एक बात हमेशा एक जैसी मिलेगी: महिलाओं पर थोपी गई हर जगह की अपेक्षाएँ। प्रिय पाठक, आज की दुनिया में एक महिला होने के विरोधाभासों और चुनौतियों की इस यात्रा में आपका स्वागत है—एक ऐसी दुनिया जिसने हमें उदारतापूर्वक 'देवी' की उपाधि दी है, जबकि साथ ही 'राजा पुत्र' का दर्जा केवल पुरुषों के लिए आरक्षित रखा है। कितनी विडंबना है, है ना? हम दिव्य लक्ष्मी हैं, धन और समृद्धि लाने वाली मानी जाती हैं, फिर भी बचपन से बुढ़ापे तक अपेक्षाओं और दोहरे मापदंडों से जकड़ी रहती हैं। काश, बेटों को भी ऐसी दिव्य उपाधियाँ मिलतीं, शायद दुनिया कहीं अधिक संतुलित होती।
समाज को जीवन की रूपरेखा तैयार करने का हुनर आता है। हमारे जन्म के क्षण से ही, समाज हमारे लिए एक विस्तृत मार्गरेखा बना देता है। शुरुआत में यह काफी सरल लगता है—स्कूल जाओ, अच्छे अंक लाओ, लेकिन जैसे-जैसे साल बीतते जाते हैं, यह सूची घुटन भरी और कठोर होती जाती है। 18 साल की उम्र तक स्कूल पूरा करो। 21 साल की उम्र तक कॉलेज से स्नातक हो जाओ। 25 साल की उम्र तक नौकरी पा लो। 27 साल की उम्र तक एक उपयुक्त जीवनसाथी से शादी कर लो। शादी के तुरंत बाद, संतानोत्पत्ति को लेकर लगातार पूछताछ के साथ सामाजिक दबाव का शोर बढ़ता जाता है। ज़रा कल्पना कीजिए: आपकी शादी की खुशियों और गहमागहमी के बीच, एक दूर का रिश्तेदार, जिससे आप जीवन में केवल एक बार मिले हैं, नौ महीने के भीतर संतान प्राप्ति की आशा जताने के लिए आपके पास आता है। क्या सच में? एक ऐसा व्यक्ति जो आपका नाम भी नहीं जानता, वह आपके जीवन की कहानी लिखने का अधिकार कैसे जता सकता है?
इस सुनियोजित ढांचे में हमारी व्यक्तिगत स्वतंत्रता कहां है? हम यह क्यों नहीं तय कर सकते कि हमें बच्चे चाहिए या नहीं? या शादी ही क्यों? सच तो यह

है कि आज लड़कियों के लिए विकल्प बहुत सीमित हैं। बुद्धि, महत्वाकांक्षा और स्वतंत्रता का कोई महत्व नहीं रह जाता जब समाज हमें वस्तु समझ लेता है। दहेज प्रथा इसका एक भयावह उदाहरण है। एक शिक्षित, अच्छी कमाई करने वाली महिला से उम्मीद की जाती है कि वह पर्याप्त दहेज लाएगी क्योंकि वह इसे वहन कर सकती है। इसके विपरीत, एक बेरोजगार महिला को पति को आकर्षित करने के लिए और भी अधिक दहेज देना पड़ता है। जीत उनकी, हार हमारी।
और अगर कोई महिला इस हानिकारक परंपरा का विरोध करने का साहस करती है? तो वह एक दुखद खबर बनकर रह जाती है, दहेज हत्याओं और घरेलू हिंसा की इस लंबी गाथा में एक और आंकड़ा बन जाती है। ये कोई छिटपुट घटनाएं नहीं हैं, बल्कि इस बात की भयावह याद दिलाती हैं कि हमारे मूल्य का लगातार पितृसत्तात्मक मापदंड से मूल्यांकन किया जाता है।
इस पुस्तक का उद्देश्य इन गहरी रूढ़ियों और घुटन भरी अपेक्षाओं को चुनौती देना है। यह सोच में बदलाव लाने का प्रयास करती है और महिलाओं की स्वायत्तता और गरिमा की वकालत करती है, चाहे वे माता हों, बहनें हों, बेटियाँ हों, पत्नियाँ हों, दादी हों या कोई अन्य भूमिका निभा रही हों। महिलाओं को उनके पहनावे, करियर विकल्पों या वैवाहिक स्थिति से सीमित नहीं किया जाना चाहिए। बल्कि, उनकी व्यक्तिगतता और शक्ति का सम्मान किया जाना चाहिए।
मैं यह स्पष्ट करना चाहता हूँ कि मैं विवाह के विरुद्ध नहीं हूँ—बिल्कुल भी नहीं। प्रेम, सम्मान और आपसी सहमति से किया गया विवाह एक सुंदर बंधन हो सकता है। लेकिन इसे कभी भी आवश्यकता या दायित्व नहीं समझना चाहिए—समाज की कठोर सूची में एक खानापूर्ति नहीं। यह अनिवार्य नहीं है कि हर किसी का सपना जीवनसाथी पाने के इर्द-गिर्द घूमता रहे। लोगों को अलग-अलग प्राथमिकताएँ रखने और अन्य आकांक्षाओं का पीछा करने का अधिकार है। चाहे वह करियर बनाना हो, अकेले बच्चे का पालन-पोषण करना हो, या बस अपनी शर्तों पर दुनिया को खोजना हो, चुनाव उनका अपना होना चाहिए। किसी को भी दूसरों पर अपने आदर्श थोपने का अधिकार नहीं है। आइए, व्यक्तिवाद का सम्मान करें और लोगों को यह तय करने दें कि वे वास्तव में अपने लिए क्या चाहते हैं। आख़िरकार, क्या चुनने की स्वतंत्रता ही एक संतुष्ट जीवन का सार नहीं है?

प्रस्तावना

पुस्तक की ओर बढ़ने से पहले, मैं पाठकों को भारत में विवाह कानूनों के बारे में सूचित करना चाहूंगा।
भारत में विवाह संबंधी चार कानून हैं: हिंदू विवाह कानून, ईसाई विवाह कानून, मुस्लिम विवाह कानून और विशेष विवाह कानून।
विवाह प्रमाण पत्र ही एकमात्र कानूनी दस्तावेज है जो दो वयस्क भारतीय नागरिकों के विवाह की पुष्टि करता है। विवाह पंजीकरण 1955 से लागू विवाह अधिनियम के प्रावधानों के अनुसार होता है। विवाह प्रमाण पत्र को सभी सरकारी संस्थानों, बैंकों और अन्य निजी संगठनों में वैध प्रमाण के रूप में स्वीकार किया जाता है।
भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने 2006 में सभी विवाहित जोड़ों के लिए विवाह प्रमाण पत्र अनिवार्य कर दिया था। यह भारत में महिलाओं के अधिकारों की रक्षा की दिशा में उठाया गया एक क्रांतिकारी कदम था। विवाह पंजीकरण के कई लाभ और विशेषताएं हैं।
विवाह प्रमाण पत्र के लिए आवेदन करने हेतु दूल्हे की आयु 21 वर्ष से अधिक होनी चाहिए, जबकि दुल्हन की आयु 18 वर्ष से कम नहीं होनी चाहिए। पासपोर्ट या वीज़ा के लिए आवेदन करते समय विवाह पंजीकरण प्रमाण पत्र आवश्यक होता है। विवाह के बाद उपनाम बदलने पर महिला को बैंक खाता खोलने के लिए भी यह प्रमाण पत्र अनिवार्य है।
इसलिए, सरकार ने हर संभव प्रयास से सभी नागरिकों को विवाह प्रमाण पत्र जारी करने की आवश्यकता पर बल देने का प्रयास किया। हालांकि, विवाह पंजीकरण के नियम अलग-अलग धर्मों में भिन्न होते हैं, लेकिन मूल विचार एक ही रहता है। अब विवाह प्रमाण पत्र ऑनलाइन भी डाउनलोड किया जा सकता है।
इससे उस झंझट से छुटकारा मिल जाता है जो पारंपरिक तरीके में होता था, जिसमें दंपत्ति को रजिस्ट्रार के कार्यालय जाना पड़ता था और दस्तावेजों

को जमा करने से लेकर विवाह प्रमाण पत्र प्राप्त करने तक की सभी थकाऊ प्रक्रियाओं के लिए शारीरिक रूप से उपस्थित रहना पड़ता था।
भारतीय विवाह कानून
विवाह कानून वैवाहिक संबंध में शामिल दोनों व्यक्तियों के मौलिक अधिकारों की रक्षा करते हैं। समय के साथ, व्यक्तिगत कानून लागू किए गए हैं जो विभिन्न धर्मों के भारतीयों के लिए विवाह पंजीकरण को अनिवार्य बनाते हैं। हमें संक्षेप में उन कानूनों की विशेषताओं पर चर्चा करनी चाहिए जो विवाह पंजीकरण के विचार का समर्थन करते हैं।
1955 का हिंदू विवाह कानून
विवाहोत्तर जीवन के मामलों को कानूनी रूप से विनियमित करने के लिए, न्यायालय ने भारत में रहने वाले हिंदुओं के लिए विशेष नियम बनाए हैं। इनमें से कुछ प्रावधान नीचे दिए गए हैं:
हिंदू विवाह में एक ही समय में एक से अधिक पति या पत्नी रखना वैध नहीं है। इसलिए, यदि कोई व्यक्ति पहली शादी के बाद दूसरी शादी करना चाहता है, तो उसके पास तलाक का प्रमाण पत्र होना आवश्यक है, अन्यथा यदि उसका पहला जीवनसाथी मर चुका है तो उसके पास मृत्यु प्रमाण पत्र होना चाहिए।
विवाह के लिए न्यूनतम आयु सीमा महिलाओं के लिए 18 वर्ष और पुरुषों के लिए 21 वर्ष निर्धारित की गई है, यह मानदंड सर्वोच्च न्यायालय, अर्थात् भारत के सर्वोच्च न्यायालय द्वारा निर्धारित किया गया है।
दूल्हा और दुल्हन दोनों को स्वतंत्र रूप से विवाह के लिए सहमति देनी होगी।
उन्हें किसी भी प्रकार की मानसिक बीमारी नहीं होनी चाहिए। यदि ऐसा पाया जाता है, तो उनके जीवनसाथी से विवाह की लिखित स्वीकृति आवश्यक है।
दूल्हा या दुल्हन सपिंडा नहीं हो सकते, यानी किसी भी हालत में वे रक्त संबंधी रिश्तेदार नहीं होने चाहिए।
हिंदू विवाह कानून की धारा 5(4) में कुछ ऐसी शर्तें बताई गई हैं जो विवाह पंजीकरण जारी करने के लिए अनुपयुक्त हैं:
यदि पति या पत्नी का कोई एक रिश्तेदार या परिवार का सदस्य एक ही वंश का पाया जाता है, तो ऐसे विवाह का प्रमाणीकरण रोका जा सकता है।
यदि भावी दूल्हे की पत्नी का विवाह उसके भाई, मामा के भाई या पैतृक या मातृ वंश से संबंधित किसी अन्य व्यक्ति से पहले ही हो चुका हो, तो ऐसे विवाहों को अवैध घोषित किया जा सकता है।

हिंदू विवाह अधिनियम, 1955 के तहत सगोत्रीय विवाह का समर्थन नहीं किया जाता है।
धारा 18(बी) में निर्दिष्ट है कि यदि कोई पक्ष विवाहित रहते हुए किसी अन्य व्यक्ति के साथ संबंध रखने का दोषी पाया जाता है, तो उसे ₹10,000 की राशि का जुर्माना लगाया जाएगा और उसे एक महीने के लिए जेल भी हो सकती है। मुस्लिम विवाह कानून
भारत में मुस्लिम विवाहों को नियंत्रित करने के लिए कोई विधायी रूपरेखा तैयार नहीं की गई है। मुस्लिम विवाह नागरिक अनुबंध के अनुसार संपन्न होता है, जिसे निकाहनामा कहा जाता है। मुस्लिम समुदाय में विवाह पंजीकरण से पहले जिन बुनियादी मानदंडों का आकलन किया जाता है, उनमें से एक यह है कि दोनों पक्ष मानसिक रूप से विवाह के लिए तैयार हों। विवाह का प्रस्ताव (इजाब) और स्वीकृति (कुबूल) के माध्यम से अनुबंध की स्थिति प्राप्त होती है।
यदि उपर्युक्त शर्तें पूरी होती हैं तो ऐसी कोई कानूनी बाधा नहीं आती। हालांकि, दोनों पक्षों की ओर से गवाहों का उपस्थित होना आवश्यक है। सुन्नी और शिया दोनों ही समुदायों में वयस्क गवाहों की न्यूनतम संख्या के संबंध में अपने-अपने नियम हैं। यदि विवाह के समय दोनों पक्षों में से किसी एक की ओर से गवाह उपस्थित नहीं होते हैं तो विवाह फासिद या अनियमित माना जाता है। भारत में मुसलमानों के लिए एक और वैवाहिक स्थिति है जो विशिष्ट है। यह मुता विवाह है, जिसमें पति-पत्नी अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए एक पूर्व निर्धारित अवधि तक साथ रहते हैं, जिसके बाद वे अलग हो जाते हैं। सुन्नी समुदाय मुता विवाह से परहेज करता है। मुस्लिम विवाह कानून को एक पंजीकरण अधिनियम के माध्यम से लागू किया गया था, जिसमें 1981 के बाद विवाह करने वाले सभी भारतीय मुसलमानों के विवाह पंजीकरण को अनिवार्य किया गया था।
ईसाई विवाह कानून, 1872
ईसाई दूल्हा और दुल्हन का विवाह पुरोहितों, चर्च के अधिकारियों या चर्च प्रशासकों जैसे अन्य संबंधित व्यक्तियों की उपस्थिति में संपन्न होता है। ईसाई विवाहों को विनियमित करने वाला कानून 1872 में लागू किया गया था।

इस प्रावधान के अनुसार, नाबालिग दंपत्ति को विवाह पंजीकरण प्रमाण पत्र जारी नहीं किया जाएगा, अर्थात् दूल्हे की आयु 21 वर्ष और दुल्हन की आयु कम से कम 18 वर्ष होनी चाहिए। विवाह दोनों पक्षों की स्वैच्छिक सहमति से होना चाहिए।
विवाह समारोह के दिन पति-पत्नी अपने पूर्व जीवनसाथी को आमंत्रित नहीं कर सकते। कानून के अनुसार, विवाह में कम से कम दो प्रत्यक्षदर्शी उपस्थित होने चाहिए। यह नियम दोनों पक्षों पर लागू होता है।
विशेष विवाह कानून, 1954
यह विवाह अधिनियम देश के सभी नागरिकों पर, उनकी जाति और धर्म की परवाह किए बिना, लागू होता है। इस अधिनियम ने दो अलग-अलग धर्मों के लोगों के बीच विवाह को कानूनी मान्यता दी है। हालांकि, यदि ऐसा विवाह संपन्न होता है, तो कुछ नियमों का पालन करना आवश्यक है:
दो अलग-अलग धार्मिक पृष्ठभूमि के लोगों के बीच होने वाले विवाहों में विवाह पंजीकरण अनिवार्य है।
दोनों साझेदारों का मानसिक रूप से स्वस्थ होना आवश्यक है।
वर या वर के रक्त संबंध से जुड़े 37 प्रकार के रिश्तों को "विवाहित" रिश्ते की स्थिति में परिवर्तित करना वर्जित है।
भारत में विवाह व्यक्तिगत और सामान्य विवाह अधिनियमों द्वारा विनियमित होते हैं। न्यायालय विवाह पंजीकरण के लिए विवाह के एक महीने के भीतर विवाह रजिस्ट्रार को एक सूचना जमा करनी होती है। इस दौरान आयु प्रमाण, पहचान प्रमाण, पता प्रमाण और अन्य कानूनी उद्देश्यों की पूर्ति के लिए सहायक दस्तावेज भी प्रस्तुत किए जाते हैं।
यदि दुल्हन किसी दूसरे जिले में रहती है, तो नोटिस की एक प्रति उस जिले के मजिस्ट्रेट को गहन जांच के लिए भेजी जाती है। जांच प्रक्रिया एक महीने तक सक्रिय रहती है, जिसके दौरान विवाह से जुड़े किसी भी पक्ष द्वारा आपत्ति दर्ज की जा सकती है। रजिस्ट्रार को आवश्यकता महसूस होने पर किसी भी विवाह को अमान्य घोषित करने का अधिकार है।

अंतर्वस्तु

SHUTUP SHAADI
SHUTUP SHAADI
लेखक का नोट
प्रस्तावना
विवाह का मृगतृष्णा
अनचाहे मेहमान
एक बेटी की दुविधा
राजा बीटा क्रॉनिकल्स
एक वरदान या बोझ?
विवाह सुविधा का साधन है।
SHUT UP SHAADI
परिचय
महाराष्ट्र – एक भव्य प्रवेश
गोवा – सूर्य, रेत और पवित्र परंपराएँ
केरल – देवता, बैकवाटर और जीवन का सार
कोलकाता – आनंद का शहर
नेपाल – पहाड़ों और रहस्यवाद की भूमि
हिमाचल प्रदेश – बर्फीली चोटियों और शांत घाटियों की भूमि जम्मू और कश्मीर – एक स्वर्ग का अनावरण
पंजाब – जीवंत रंग और आनंदमय उत्सव
राजस्थान – राजसी ठाठ और भव्यता
गुजरात – रंग, परंपराएं और गुजराती आतिथ्य सत्कार दिल्ली – जहाँ परंपरा आधुनिकता से मिलती है
आंतरिक शांति की खोज
उपसंहार
घर से बाहर निकलना, तरक्की करना
घर पर अकेले, लेकिन कोई पार्टी नहीं।
लेबल से परे
कंगनों से बंधे हुए

[illegible]
[illegible]
[illegible]

अध्याय 1

विवाह का मृगतृष्णा

सुबह की सुनहरी धूप कोने में बने आलीशान दफ्तर की फर्श से छत तक फैली खिड़कियों से छनकर आ रही थी, जिससे पॉलिश की हुई महोगनी की मेज जगमगा रही थी, जिस पर लियाना कागजों के अंबार के बीच शांत और एकाग्र होकर बैठी थी। एक सफल तकनीकी स्टार्टअप की प्रबंधक के रूप में, वह सम्मान और प्रशंसा की पात्र थीं, उनकी तीक्ष्ण बुद्धि और रणनीतिक सूझबूझ ने उन्हें व्यापार जगत में एक प्रभावशाली व्यक्तित्व के रूप में स्थापित किया था।
लियाना, लगभग तीस वर्ष की एक महिला हैं, जिन्होंने कॉर्पोरेट जगत में कड़ी मेहनत करते हुए एक प्रतिष्ठित पद हासिल किया है। अपनी तीक्ष्ण बुद्धि और दृढ़ कार्यशैली के बल पर वे अपने सहकर्मियों और वरिष्ठों के बीच एक सम्मानित व्यक्तित्व बन चुकी हैं।
लियाना दुबली-पतली लेकिन एथलेटिक कद-काठी की हैं, उनकी लंबाई औसत है और उनका आत्मविश्वास से भरा हावभाव पेशेवरता को दर्शाता है। उनके काले बाल कंधों पर लहराते हैं, जो उनके चेहरे को खूबसूरती से निखारते हैं। उनकी चमकदार भूरी आँखें सफलता के प्रति उनके दृढ़ संकल्प और जुनून को दर्शाती हैं। वह अक्सर सिले-सिलाए सूट या स्टाइलिश पोशाक पहनती हैं जो उनकी आकृति को और भी आकर्षक बनाती हैं, जिससे कार्यस्थल पर उनकी परिष्कृत और प्रभावशाली छवि उभरती है।
फिर भी, अपनी पेशेवर सफलता के बावजूद, लियाना को एक अलग तरह की चुनौती का सामना करना पड़ा - अच्छे इरादे वाले दोस्तों और परिवार के सदस्यों का लगातार हस्तक्षेप, जो इस बात से आश्वस्त थे कि उनकी अगली उपलब्धि शादी होनी चाहिए।
"लियाना, प्यारी, क्या तुमने शादी करके घर बसाने के बारे में सोचा है? तुम्हारे जैसी सफल महिला को एक साथी की ज़रूरत है," लियाना की सबसे अच्छी

दोस्त ज़िया ने प्यार से कहा, और वह लियाना की मेज के सामने रखी आलीशान चमड़े की कुर्सियों में से एक पर आराम से बैठी अपने सलीके से संवारे हुए बालों की एक लट को घुमा रही थी।
लियाना अपनी कुर्सी पर पीछे झुक गई, उसके होठों पर एक समझदारी भरी मुस्कान थी। "ओह, ज़िया, तुम मुझे इससे बेहतर जानती हो। मैं अपने काम से शादीशुदा हूँ, और यह वाकई एक बहुत ही मांग करने वाला जीवनसाथी है।"
"लेकिन आप अपना पूरा जीवन स्प्रेडशीट और बोर्ड मीटिंग में डूबे हुए नहीं बिता सकते! आपको प्यार और साथ की जरूरत है," ज़िया ने विनती भरे लहजे में जोर देकर कहा।
लियाना धीरे से मुस्कुराई। "प्यार और साथ? मेरे पास इसकी कोई कमी नहीं है, बहुत-बहुत धन्यवाद। मेरी टीम, मेरे दोस्त और मेरी प्यारी बिल्ली के बीच, मुझे स्नेह की कोई कमी नहीं है।"
ज़िया ने एक नाटकीय आह भरी और लियाना की मेज पर कागज़ों के ढेर को चिंता भरी नज़रों से देखते हुए कहा, "लेकिन घर बसाने और परिवार शुरू करने का क्या? आप तो जवान भी नहीं हो रही हैं।"
लियाना खिलखिलाकर हंस पड़ीं, उनकी आंखों में एक चंचल चमक थी। "ओह, ज़िया, मेरा तो पहले से ही एक परिवार है। प्रतिभाशाली और समर्पित कर्मचारियों का एक परिवार जो सफलता की राह पर आगे बढ़ने के लिए मुझ पर निर्भर हैं। और जहां तक नन्हे-मुन्नों की बात है, तो तुम जानती ही हो कि मैं एनजीओ में पहले से ही उनकी परवरिश में पूरी तरह से डूबी हुई हूं। वे लड़कियां मेरे अपने बच्चों जैसी हैं।" उन्होंने आंख मारी, उनकी मुस्कान गर्मजोशी और हास्य से भरपूर थी।
लियाना जब अपने विचारों में खोई हुई थी, तभी दफ्तर का दरवाजा चरमराते हुए खुला और एक सजे-धजे सज्जन शरारती चमकती आँखों के साथ अंदर आ गए। "वाह वाह वाह, देखो तो सही कौन आया है। क्या मेरे इस लुभावने प्रस्ताव पर तुम्हारा मन बदल गया है?" उन्होंने एक आकर्षक मुस्कान बिखेरते हुए कहा।
लियाना ने आंखें घुमाईं, वह इस नाटक से पहले ही थक चुकी थी। "अरे, प्लीज़, मुझे इस ड्रामेबाज़ी से बख्श दो। मैं तुम्हें हज़ार बार कह चुकी हूँ— मुझे तुम्हारे इस घमंडी खानदान में शामिल होने में कोई दिलचस्पी नहीं है। मुझे अपने सपनों को पूरा करना है, बहुत-बहुत धन्यवाद।"

उस आदमी ने उसकी बेबाकी से बेपरवाह होकर हल्के से हंसते हुए कहा, "वाह, मेरी प्यारी। लेकिन यह मत भूलना कि सबसे शक्तिशाली रानी को भी अपने साथ एक राजा की जरूरत होती है।"
लियाना मुस्कुराई, उसके मन में झुंझलाहट और हंसी का मिलाजुला भाव उमड़ रहा था। वह उस आदमी की ज़िद को नज़रअंदाज़ नहीं कर सकती थी, यह तो तय था। कुछ ही दिन पहले, उसने घुटनों पर बैठकर बड़े ही शानदार अंदाज़ में शादी का प्रस्ताव रखा था। और हालांकि उसकी कोशिशें सराहनीय थीं, लियाना को अंदर ही अंदर पता था कि उसका जवाब वही रहेगा।
ऐसी दुनिया में जहाँ "ना" अक्सर अनसुना कर दिया जाता है, लियाना इस सब की बेतुकीपन पर विचार करने लगी। कुछ लोग अस्वीकृति को शालीनता से क्यों नहीं स्वीकार पाते? कुछ लोग इनकार में भी संभावना की एक किरण क्यों ढूंढे रहते हैं? यह एक ऐसा प्रश्न था जो आधुनिक रिश्तों और सामाजिक अपेक्षाओं की जटिलताओं को दर्शाता था, और उसके मन में उत्तरों से कहीं अधिक प्रश्न छोड़ गया था।
लेकिन फिलहाल, उसने अपने मार्ग पर ध्यान केंद्रित करने का फैसला किया, और अपने राज्य पर अकेले शासन करने में संतुष्ट रही। बुद्धि और दृढ़ संकल्प को अपने सबसे भरोसेमंद साथी बनाकर, वह प्रेम और स्वतंत्रता की जटिलताओं को सहजता और लचीलेपन के साथ पार करते हुए आगे बढ़ी।
जैसे ही वह आदमी कमरे से निकला, लियाना अपनी कुर्सी पर पीछे झुक गई, उसके शब्दों का भार हवा में गूंजता महसूस करते हुए। वह इस बात से इनकार नहीं कर सकती थी कि ऐसे क्षण भी आए थे जब किसी के साथ अपना जीवन साझा करने का विचार उसे अच्छा लगा था, लेकिन समय कभी सही नहीं लगा। हमेशा कुछ न कुछ सौदे करने होते थे, कुछ न कुछ नया करने की कोशिश करनी होती थी और कुछ न कुछ चुनौतियों का सामना करना होता था।
बोर्डरूम में, लियाना को अक्सर अपने पुरुष सहकर्मियों का सम्मान पाने के लिए दोगुनी मेहनत करनी पड़ती थी। अपने बेदाग रिकॉर्ड और नवोन्मेषी विचारों के बावजूद, उन्हें अक्सर बीच में ही टोका जाता था और उनकी बात को नज़रअंदाज़ कर दिया जाता था, उनके योगदान को अनदेखा कर दिया जाता था या दूसरों के नाम कर दिया जाता था।
एक बेहद महत्वपूर्ण बैठक के दौरान, जब लियाना ने एक अभूतपूर्व प्रस्ताव पेश किया जो कंपनी की उत्पाद श्रृंखला में क्रांति ला सकता था, तो उसके एक

पुरुष सहकर्मी ने बीच में ही टोकते हुए कहा, "यह सब ठीक है, लियाना, लेकिन क्या आपने इसमें शामिल संभावित जोखिमों पर विचार किया है?"
लियाना का जबड़ा कस गया, लेकिन उसने अपना संयम बनाए रखा और एक विस्तृत जोखिम मूल्यांकन प्रस्तुत किया जिससे उसकी सहकर्मी अवाक रह गई। जैसे ही बैठक समाप्त होने वाली थी, सीईओ, जो अधेड़ उम्र का एक व्यक्ति था और पुराने प्रबंधन तरीकों का शौकीन था, लियाना के पास आया।
"लियाना, तुमने अंदर बहुत अच्छा काम किया। लेकिन तुम्हें पता है, कभी-कभी बड़े फैसले पुरुषों को ही लेने देना बेहतर होता है," उसने मुस्कुराते हुए कहा।
लियाना इस बात से चिढ़ गई लेकिन उसने बस सिर हिलाया, उसका दिमाग पहले से ही अपनी अगली चाल की योजना बना रहा था।
ऑफिस के बाहर, लियाना को एक अलग तरह की चुनौती का सामना करना पड़ा। भले ही उसके दोस्त और परिवार वाले उससे शादी के लिए लगातार सवाल करते रहे, क्योंकि वे उसके अविवाहित होने को असफलता या अपूर्णता की निशानी मानते थे।
उसे याद है कि एक पारिवारिक समारोह में उसकी चाची ने उसे एक तरफ बुलाया, उनके चेहरे पर चिंता के भाव स्पष्ट थे। "प्यारी, तुम्हारी उम्र बढ़ती जा रही है। तुम कब शादी करके परिवार बसाओगी?"
लियाना ने विनम्रता से मुस्कुराते हुए अपनी झुंझलाहट छुपाई। "बुआ जी, आपकी चिंता के लिए धन्यवाद, लेकिन अभी मेरा पूरा ध्यान अपने करियर पर है। शादी और परिवार बाद में भी हो सकते हैं।"
आंटी ने सिर हिलाते हुए आह भरी। "तुम बहुत समझदार लड़की हो, लियाना। लेकिन याद रखना, एक औरत को सच्ची संतुष्टि पत्नी और माँ बनने से मिलती है।"
अपने सामने आने वाली चुनौतियों और बाधाओं के बावजूद, लियाना का यह दृढ़ विश्वास बना रहा कि उनका मूल्य उनके वैवाहिक स्थिति या लिंग से निर्धारित नहीं होता। उन्होंने हर सफलता के साथ अपेक्षाओं को धता बताते हुए, बाधाओं को तोड़ते हुए और रूढ़ियों को चूर-चूर करते हुए सफलता की नई राहें बनाईं। पुरुष प्रधान दुनिया की जटिलताओं से जूझते हुए, लियाना ने अपने दृढ़ विश्वासों में ताकत पाई और एक ऐसा रास्ता बनाने के लिए दृढ़ संकल्पित हुई जो पूरी तरह से उसका अपना हो - एक ऐसा रास्ता जो उसकी प्रतिभा, उसकी

महत्वाकांक्षा और उसके काम के प्रति उसकी अटूट प्रतिबद्धता से परिभाषित हो।
तभी उसके फोन में वाइब्रेशन हुई, जिससे उसके काम की नीरसता टूट गई। स्क्रीन पर नजर डालते ही उसने कॉलर आईडी देखी: "एनजीओ ड्रीम गर्ल।"
ड्रीम गर्ल फाउंडेशन वह गैर सरकारी संगठन था जिसके लिए वह अपने खाली समय में स्वयंसेवा करती थी। उसने तुरंत कॉल का जवाब दिया और दूसरी तरफ मौजूद समन्वयक द्वारा बताई गई आपातकालीन स्थिति को ध्यानपूर्वक सुना।
"हमारे पास वंचित पृष्ठभूमि की लड़कियों का एक समूह है जिन्हें तत्काल सहायता की आवश्यकता है," समन्वयक ने चिंता भरे स्वर में कहा। "आज हमारे पास कर्मचारियों की कमी है, और हमें किसी ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता है जो आकर उनके करियर परामर्श सत्र में मदद कर सके।"
स्थिति की गंभीरता को समझते ही लियाना का दिल बैठ गया। बिना किसी झिझक के, उसने जल्द से जल्द वहाँ पहुँचने का वादा किया और अपने सुपरवाइज़र से जल्दी छुट्टी लेने की व्यवस्था कर ली।
ड्रीम गर्ल फाउंडेशन के कार्यालय की ओर भागते हुए, लियाना को अपनी कॉर्पोरेट नौकरी अधूरी छोड़ने का अपराधबोध सता रहा था। लेकिन वह जानती थी कि इन लड़कियों की मदद करना उतना ही महत्वपूर्ण था, बल्कि शायद उससे भी अधिक, जितना कि कॉर्पोरेट जगत में वह कुछ भी हासिल कर सकती थी।
संस्था में पहुँचते ही, लियाना ने अपना काम शुरू कर दिया और उन युवा लड़कियों को मार्गदर्शन और समर्थन देना शुरू कर दिया जो अपने लिए एक बेहतर भविष्य बनाने के लिए उत्सुक थीं।
लियाना एनजीओ के छोटे, मंद रोशनी वाले कमरे में बैठी थी। उसे युवा लड़कियों के एक समूह से स्वतंत्रता के महत्व, अपने सपनों को साकार करने और पितृसत्ता और लैंगिक भेदभाव की बेड़ियों से मुक्त होने के बारे में बात करने के लिए कहा गया था।
लड़कियों के आने का इंतज़ार करते हुए, लियाना को अपने बचपन के संघर्ष, अपनी जीती हुई बाधाओं और रास्ते में उसे प्रेरित करने वाली महिलाओं की याद आ गई। और इसी विचार के साथ, लियाना ने अपने कंधे सीधे किए, गहरी साँस ली और दिल से बोलने के लिए खुद को तैयार किया।
"महिलाओं और आने वाले कल की भावी नेताओं, आज यहां एकत्रित होने के लिए धन्यवाद। आज मैं एक ऐसे विषय पर बात करना चाहती हूं जो मेरे दिल के बेहद

करीब है - वित्तीय स्वतंत्रता और पितृसत्ता और लैंगिक भेदभाव के मानदंडों को चुनौती देने में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका।"
सबसे पहले, आइए सबसे अहम मुद्दे पर बात करते हैं - पितृसत्ता। मैं यहाँ पुरुषों की आलोचना करने नहीं आई हूँ। आखिर, मेरे कुछ सबसे अच्छे दोस्त पुरुष ही हैं। लेकिन सच तो यह है कि पितृसत्ता उस परेशान करने वाले विज्ञापन की तरह है जो बार-बार आता रहता है। यह हर जगह मौजूद है, और हमें हमारे लिंग के आधार पर बताती है कि हम क्या कर सकते हैं और क्या नहीं कर सकते। लेकिन क्या पता? हम इस धारणा को बदल सकते हैं, और इसकी शुरुआत अपनी आर्थिक स्वतंत्रता से कर सकते हैं।
आर्थिक स्वतंत्रता अपने आप में एक सुपरहीरो की तरह है। यह आपको अपने फैसले खुद लेने, अपने पैरों पर खड़े होने और सबसे महत्वपूर्ण बात, अपने पंख काटने की कोशिश करने वाले किसी भी व्यक्ति को 'अलविदा' कहने की शक्ति देती है। अब, मुझे पता है कि आपमें से कुछ लोग क्या सोच रहे होंगे। "लेकिन आर्थिक आत्मनिर्भरता पाना मुश्किल है! यह पेचीदा है! यह उबाऊ है!" खैर, मैं आपको बता दूं, यह आपकी दादी को टिकटॉक समझाने जितना मुश्किल नहीं है, और पेंट को सूखते हुए देखने जितना उबाऊ तो बिलकुल भी नहीं है। साथ ही, इसके फायदे किसी भी टिकटॉक डांस या पेंट के रंग से कहीं बेहतर हैं।
आर्थिक रूप से स्वतंत्र होने का मतलब यह नहीं है कि आपको वित्तीय मामलों का विशेषज्ञ या वॉल स्ट्रीट का कोई बड़ा व्यवसायी होना चाहिए। इसका सीधा सा मतलब है कि आपके पास अपने पैसे को प्रबंधित करने का ज्ञान और क्षमता हो, ताकि आप अपनी आर्थिक स्थिति के लिए किसी और पर निर्भर न रहें।
मुझे पता है कि कभी-कभी यह मुश्किल हो सकता है। समाज अक्सर हमें एक दायरे में बांधने की कोशिश करता है, हमें बताता है कि हम क्या कर सकते हैं और क्या नहीं कर सकते। लेकिन लड़कियों, मैं आपसे एक बात कहना चाहती हूँ: कोई और यह तय नहीं कर सकता कि आप कौन हैं। आपकी पहचान आपके कर्मों, आपके सपनों और आपकी महत्वाकांक्षाओं से होती है। इसलिए, बाहर निकलो और दुनिया को दिखाओ कि तुममें क्या काबिलियत है!
चलिए अब नारीवाद की बात करते हैं। कुछ लोग नारीवाद को बुरा शब्द मानते हैं, लेकिन मुझे लगता है कि यह सबसे शानदार समूह है जिसमें आप शामिल हो सकते हैं। नारीवादी होने का मतलब है इस क्रांतिकारी विचार में विश्वास करना कि

महिलाएं भी इंसान हैं। चौंकाने वाली बात है, है ना? इसका मतलब है समानता के लिए लड़ना, न केवल अपने लिए, बल्कि सबके लिए।
तो, मेरे प्रिय भावी नेताओं, जीवन की राह पर चलते हुए, यह याद रखें - आर्थिक स्वतंत्रता केवल धन के बारे में नहीं है। यह स्वतंत्रता, सशक्तिकरण और पितृसत्ता और लैंगिक भेदभाव की बेड़ियों से मुक्ति पाने के बारे में है। इसलिए, आगे बढ़ें, साहसी बनें, निडर बनें और सबसे महत्वपूर्ण बात, आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनें। दुनिया आपका इंतज़ार कर रही है कि आप इसे एक-एक करके बदलें। धन्यवाद।
भाषण के बाद, श्रोतागण तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठे, उनके चेहरे प्रेरणा और दृढ़ संकल्प से दमक रहे थे। एक-एक करके वे खड़ी हुईं और अपने संघर्ष और विजय की कहानियाँ साझा करते हुए, अभी-अभी सुने गए प्रेरणादायक शब्दों के लिए आभार व्यक्त किया।
"आज तक मुझे यह एहसास नहीं हुआ था कि हमारे भीतर कितनी शक्ति है," एक लड़की ने रोते हुए कहा। "हमें यह याद दिलाने के लिए धन्यवाद कि हम जो चाहें कर सकते हैं।"
एक और लड़की ने कहा, "मैं पहले सोचती थी कि मुझे समाज की अपेक्षाओं के अनुरूप चलना होगा, लेकिन अब मुझे एहसास हुआ है कि मैं अपना रास्ता खुद बना सकती हूं। मुझे यह दिखाने के लिए धन्यवाद।"
कमरे में उत्साह और नए आत्मविश्वास का संचार हो रहा था, और लियाना को गर्व का अनुभव हो रहा था। यह एक अधिक समान और समावेशी दुनिया की ओर उनकी यात्रा की शुरुआत मात्र थी, और वह जानती थी कि इन लड़कियों के साथ, सब कुछ संभव है। उसने घंटों उनकी कहानियाँ सुनीं, सलाह दी और उनके सामने आने वाली चुनौतियों से निपटने में उनकी मदद की।
लेकिन अपने महत्वपूर्ण काम के बीच भी, लियाना अपने मन में उठने वाली लगातार परेशान करने वाली आवाज़ों से बच नहीं पाई। उसकी कॉर्पोरेट नौकरी में लोगों ने उसकी बार-बार अनुपस्थिति पर ध्यान देना शुरू कर दिया था और एनजीओ के प्रति उसके समर्पण के बारे में कानाफूसी करने लगे थे।
जैसे ही लियाना ने फाउंडेशन में अपना दिन समाप्त किया, उसके फोन पर उसके परिवार समूह से एक संदेश आया। उसने आह भरकर फोन खोला तो उसमें एक संभावित 'मिस्टर परफेक्ट' की तस्वीर थी, साथ ही शादी के बारे में कुछ इशारे भी थे।

यह दृश्य उसके लिए बहुत जाना-पहचाना हो चुका था, फिर भी यह उसके मनोबल को कम करने में कभी असफल नहीं होता था। हर बार जब वह उन तस्वीरों को देखती, तो उसे ऐसा लगता जैसे उसकी आशाओं और सपनों का एक छोटा सा टुकड़ा उससे छिन रहा हो। क्या वह कभी अपने परिवार को अपना दृष्टिकोण समझा पाएगी? क्या वह उन्हें यह दिखा पाएगी कि जीवन के लिए उसकी सोच उनके द्वारा उसके लिए सोची गई सोच से अलग थी?
अपने फोन पर तस्वीर को देखते हुए, लियाना के मन में यह सवाल उठा कि क्या वह कभी दूसरों की अपेक्षाओं और धारणाओं से मुक्त हो पाएगी। अपनी इच्छाओं और समाज व परिवार के दबावों के बीच सामंजस्य बिठाना उसके लिए एक निरंतर संघर्ष था। लेकिन भीतर ही भीतर वह जानती थी कि वह किसी और की अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए अपनी खुशी का त्याग नहीं कर सकती।
संदेश को अनसुना करते हुए, लियाना ने गहरी सांस ली और खुद को याद दिलाया कि उसने बहुत लंबे समय तक दूसरों की अपेक्षाओं को अपने जीवन पर हावी होने दिया है, और अब समय आ गया है कि वह अपने जीवन की बागडोर अपने हाथ में ले। जैसे ही वह संस्था से बाहर निकली, ठंडी रात की हवा ने उसके फेफड़ों को एक नए उद्देश्य से भर दिया। वह अपना रास्ता खुद बनाने और अटूट दृढ़ संकल्प के साथ अपने सपनों का पीछा करने के लिए दृढ़ निश्चय कर चुकी थी।
कुछ दिन बीतने के साथ ही, लियाना को अपने सहकर्मियों और दोस्तों की ओर से शादी के लिए मनाने के नेक इरादे वाले लेकिन लगातार प्रयासों की बाढ़ आ गई। चाहे वह उसकी सहायक सारा हो, जो उसके डेटिंग ऐप के नए अनुभवों पर टिप्पणी कर रही थी, या उसकी कॉलेज की दोस्त प्रिशा हो, जो अपने सुखमय वैवाहिक जीवन की कहानियाँ सुना रही थी, ऐसा लग रहा था मानो लियाना के प्रेम संबंधों को लेकर हर किसी की अपनी राय थी।
एक दोपहर, एक बेहद व्यस्त बोर्ड मीटिंग के दौरान, लियाना के फोन पर उसकी दोस्त प्रिशा का एक टेक्स्ट मैसेज आया।
"हे लियाना! मैं बस तुम्हें याद दिलाना चाहती थी कि सच्ची खुशी अपने जीवनसाथी को ढूंढने से ही मिलती है;) क्या हाल ही में तुम्हारी मुलाकात किसी दिलचस्प लड़के से हुई है?"
हल्की सी हंसी के साथ, लियाना ने झटपट जवाब टाइप किया।

"याद दिलाने के लिए धन्यवाद, प्रिशा! लेकिन मैं बोर्डरूम में ड्रैगनों को मारने में इतनी व्यस्त हूँ कि किसी राजकुमार को ढूंढने की चिंता करने का समय ही नहीं है। शायद मैं अपनी स्प्रेडशीट से ही शादी कर लूं:)" जैसे-जैसे बैठक आगे बढ़ी, लियाना को लगातार हो रही शादी की कोशिशों पर हंसी आने लगी, जो मानो हर जगह उसका पीछा कर रही थीं। लेकिन उसकी हंसी-मजाक और हाजिरजवाबी के पीछे एक तड़प छिपी थी—साथ और जुड़ाव की चाहत, जिसे उसने अपने आसपास के लोगों की निगाहों से बड़ी सावधानी से छुपा रखा था।
उसी शाम, जब लियाना ऑफिस से घर लौट रही थी, तो उसे अपनी मां का फोन आया, जिसकी आवाज में चिंता और झुंझलाहट का मिलाजुला भाव था।
"लियाना, मेरी प्यारी, मुझे समझ नहीं आता कि तुम इतनी जिद्दी क्यों हो। अब तुम 28 साल की हो गई हो, तुम्हें पता है? कब शादी करके मुझे पोते-पोतियां दोगी?"
लियाना ने धीरे से आह भरी, और मातृत्वपूर्ण विवाह कराने के एक और दौर के लिए खुद को तैयार किया।
"माँ, आपकी चिंता के लिए धन्यवाद, लेकिन मैं अपने जीवन से पूरी तरह खुश हूँ। और वैसे भी, मुझे नहीं लगता कि दुनिया अभी मेरे जैसे छोटे बच्चों को इधर-उधर दौड़ते देखने के लिए तैयार है।"
उसकी मां ने झुंझलाहट में गहरी सांस ली, लेकिन लियाना को उसकी आवाज में थोड़ी सी हंसी सुनाई दी।
"ओह, लियाना, तुम हमेशा मुझे हंसाना जानती हो। बस मुझसे वादा करो कि तुम कभी न कभी प्यार को एक मौका देने के बारे में जरूर सोचोगी।"
मुस्कुराते हुए लियाना ने सिर हिलाया, यह जानते हुए कि उसकी माँ के शब्द प्यार से निकले थे। "मैं वादा करती हूँ, माँ। लेकिन अभी के लिए, मैं अपने सपनों से शादीशुदा हूँ—और वे मुझे खूब व्यस्त रखते हैं।"
कॉल खत्म करके आगे बढ़ते हुए, लियाना अपने जीवन के उन लोगों के प्रति कृतज्ञता से भर उठी, जिन्होंने उसे अपने दायरे से बाहर निकलने के लिए प्रेरित किया, भले ही उनके तरीके कभी-कभी थोड़े अपरंपरागत रहे हों। और अपने सामने फैले शहर के नज़ारे को निहारते हुए, उसे एहसास हुआ कि उसकी यात्रा चाहे कहीं भी ले जाए, वह हमेशा अपनी अटूट स्वतंत्रता और दुनिया में अपना रास्ता खुद बनाने के दृढ़ संकल्प से प्रेरित रहेगी।

[illegible]

साक्षात्कार के साथ
डॉ. रितिका बुधिराजा ठाकुर,
एम. फिल., पीएच.डी. क्लिनिकल साइकोलॉजी
लियाना द्वारा संचालित
लियाना: डॉ. रितिका, आज मेरे साथ जुड़ने के लिए धन्यवाद। कौमार्य एक ऐसा विषय है जिस पर अक्सर चुप्पी साधी जाती है, और यह अक्सर मिथकों और गलत धारणाओं से घिरा रहता है, खासकर भारतीय घरों में। चलिए सबसे बुनियादी लेकिन व्यापक रूप से गलत समझे जाने वाले विषय - हाइमन (यमन की झिल्ली) से शुरू करते हैं। क्या आप समझा सकती हैं कि यह क्या है और इसे अक्सर एक महिला के मूल्य से क्यों जोड़ा जाता है?
डॉ. रितिका बुधिराजा ठाकुर: लियाना, आप बिलकुल सही कह रही हैं। हाइमन एक पतली त्वचा की परत होती है जो कुछ महिलाओं में योनि के द्वार को आंशिक रूप से ढकती है। अक्सर लोगों को यह पता नहीं होता कि खेलकूद, साइकिल चलाना या घुड़सवारी जैसी सामान्य गतिविधियों के कारण समय के साथ यह फट सकती है या पतली हो सकती है। हालांकि, यह मिथक कि यह ऊतक किसी महिला की पवित्रता या चरित्र को परिभाषित करता है, सदियों से कायम है, खासकर हमारी जैसी संस्कृतियों में। यह दुखद है कि इतनी मामूली चीज़ को इतना महत्व दिया जाता है। हाइमन कोई "उपहार" नहीं है जिसे शादी के समय खोला जाए, फिर भी इसे उसी तरह माना जाता है।
लियाना: बिल्कुल सही। यह चौंकाने वाली बात है कि ऊतक के इस छोटे से टुकड़े को अक्सर शादी के दौरान भेंट के रूप में माना जाता है। और फिर यह हानिकारक धारणा भी है कि अगर किसी महिला को पहले यौन संबंध के दौरान रक्तस्राव नहीं होता है, तो वह कुंवारी नहीं है। यह इतनी हानिकारक गलतफहमी क्यों है?
डॉ. रितिका: यह धारणा कि पहली बार यौन संबंध बनाते समय महिला की वर्जिनिटी टूटना और रक्तस्राव होना ज़रूरी है, सबसे हानिकारक मिथकों में से एक है। यह इस विश्वास को बल देता है कि महिलाएं वस्तु मात्र हैं, जिन्हें उनके पति द्वारा "खोलने" तक बंद रखा जाता है। सच्चाई यह है कि कई महिलाओं को बिल्कुल भी रक्तस्राव नहीं होता, क्योंकि जैसा कि मैंने बताया, वर्जिनिटी पहले से ही गैर-यौन गतिविधियों से खिंच चुकी होती है या फट चुकी होती है। यौन संबंध के दौरान रक्तस्राव को वर्जिनिटी के बराबर मानना न केवल चिकित्सकीय रूप से गलत है, बल्कि मनोवैज्ञानिक रूप से भी हानिकारक है। इससे महिलाओं को यह

महसूस हो सकता है कि उन्होंने कुछ गलत किया है या यदि उन्हें रक्तस्राव नहीं होता है तो वे किसी तरह "कमतर" हैं।
लियाना: इससे वस्तुकरण का मुद्दा उठता है। महिलाओं को "सीमित" रहने की यह धारणा समाज में महिलाओं को वस्तु के रूप में माने जाने की व्यापक समस्या में किस प्रकार योगदान देती है?
डॉ. रितिका: जब आप किसी महिला के मूल्य को उसकी कौमार्यता तक सीमित कर देते हैं—यानी एक छोटे से ऊतक से परिभाषित करते हैं—तो आप असल में उसका वस्तुकरण कर रहे हैं। आप कह रहे हैं कि उसका मूल्य पूरी तरह से शारीरिक चीज़ से जुड़ा है, जिस पर शायद उसका कोई नियंत्रण भी न हो। यह महिलाओं के शरीर और विकल्पों को नियंत्रित करने का एक और तरीका है। दुखद सच्चाई यह है कि भारत सहित दुनिया के कई हिस्सों में, एक महिला के चरित्र का आकलन अक्सर इस आधार पर किया जाता है कि क्या उसका कौमार्य बरकरार है, जबकि पुरुषों के मामले में ऐसी कोई जांच-पड़ताल नहीं की जाती।
लियाना: यह निराशाजनक है कि यह दबाव इतना एकतरफा है। चलिए किशोरों की बात करते हैं। ज्यादातर लोग यह जानकर हैरान होते हैं कि भारत में कई किशोर 18 या 19 साल की उम्र तक यौन रूप से सक्रिय हो जाते हैं, और कुछ तो इससे भी कम उम्र में। लेकिन कौमार्य को लेकर भ्रम अभी भी बना हुआ है। इस जानकारी की कमी का उन पर क्या असर पड़ता है?
डॉ. रितिका: बिलकुल, लियाना। कई किशोरियों को यह ठीक से समझ नहीं आता कि "कुंवारी" होने का असल मतलब क्या है। वे हाइमन के टूटने को कौमार्य खोने के बराबर समझती हैं, जो कि बिल्कुल गलत है। किसी व्यक्ति का कौमार्य इस बात से तय होता है कि उसने यौन संबंध बनाए हैं या नहीं, न कि इस बात से कि उसका हाइमन बरकरार है या नहीं। लेकिन सामाजिक दबाव और गलत जानकारी के कारण, किशोरियों, खासकर लड़कियों को, फुटबॉल खेलने या टैम्पोन इस्तेमाल करने जैसी किसी भी वजह से अगर उनका हाइमन टूट जाए तो बेवजह शर्म या अपराधबोध महसूस हो सकता है।
यह भ्रम, हार्मोनल बदलाव, शैक्षणिक तनाव और साथियों के दबाव के साथ मिलकर अत्यधिक चिंता का कारण बन सकता है। दुर्भाग्य से, उनके पास भरोसेमंद स्रोत बहुत कम हैं जिनसे वे सलाह ले सकें। माता-पिता अक्सर इस विषय से पूरी तरह बचते हैं, और देश के कई हिस्सों में स्कूलों में व्यापक यौन शिक्षा प्रदान नहीं की जाती है।

लियाना: यह बहुत ही महत्वपूर्ण मुद्दा है। अगर स्कूलों में उचित यौन शिक्षा दी जाए, तो क्या हम इस भ्रम और आघात से बच सकते हैं?
डॉ. रितिका: निःसंदेह। कम उम्र में यौन शिक्षा युवाओं को अपने शरीर को समझने और अपने फैसलों पर आत्मविश्वास महसूस करने में मदद करने की कुंजी है। इसका उद्देश्य केवल किशोर गर्भावस्था या यौन संचारित रोगों को रोकना ही नहीं है—हालांकि ये भी महत्वपूर्ण पहलू हैं—बल्कि यौनिकता की स्वस्थ समझ को बढ़ावा देना भी है, जिसमें कौमार्य से जुड़े मिथकों को दूर करना भी शामिल है।
जिन स्थानों पर यौन शिक्षा व्यापक रूप से दी जाती है, वहां किशोरों में अपने शरीर को लेकर शर्मिंदगी या भ्रम की भावना कम होती है। वे सोच-समझकर निर्णय ले सकते हैं और यह समझ सकते हैं कि उनका मूल्य किसी पतली झिल्ली से बंधा नहीं है।
लियाना: ऐसा लगता है कि कई घरों में यौन शिक्षा आज भी एक वर्जित विषय है। माता-पिता हिचकिचाते हैं, उन्हें लगता है कि अगर हम यौन संबंध के बारे में बात करेंगे, तो इससे किशोरों को इसमें शामिल होने का प्रोत्साहन मिलेगा। हम इस बाधा को कैसे दूर कर सकते हैं?
डॉ. रितिका: यह एक आम चिंता है, लेकिन सच्चाई यह है कि यौन विषयों पर बात न करना फायदे से ज़्यादा नुकसानदायक होता है। अज्ञानता जिज्ञासा को कम नहीं करती, बल्कि उसे और बढ़ा देती है। जब किशोरों को भरोसेमंद वयस्कों से विश्वसनीय जानकारी नहीं मिलती, तो वे कम विश्वसनीय स्रोतों की ओर रुख करते हैं—चाहे वे उनके उतने ही अनजान दोस्त हों या, इससे भी बदतर, इंटरनेट। शिक्षा लापरवाह व्यवहार को बढ़ावा नहीं देती; बल्कि यह ज़िम्मेदार व्यवहार को प्रोत्साहित करती है। जब युवा जागरूक होते हैं, तो वे अपने लिए सही निर्णय लेने में बेहतर सक्षम होते हैं।
लियाना: चलिए इसे रोज़मर्रा की ज़िंदगी से जोड़ते हैं। मैं सोचती हूँ कि मुझ समेत महिलाओं ने कौमार्य और पवित्रता को लेकर समाज के दबाव का सामना किया है। क्या आपको लगता है कि हम इन मान्यताओं को चुनौती दे सकते हैं, और अगर हाँ, तो कैसे?
डॉ. रितिका: बिलकुल, हम ऐसा कर सकते हैं। पहला कदम है इस बारे में खुलकर और ईमानदारी से बात करना। लियाना, आप जैसी महिलाएं, अपनी कहानियाँ और अनुभव साझा करके ऐसी चर्चाओं को जन्म दे सकती हैं जो मौजूदा स्थिति को चुनौती

दें। हमें घर और स्कूलों में भी अधिक जागरूकता फैलाने की आवश्यकता है। माता-पिता को बिना किसी शर्म या डर के अपने बच्चों से इन विषयों पर बात करने का अधिकार होना चाहिए। एक समाज के रूप में, हमें महिलाओं के शरीर और कथित पवित्रता पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय उनकी बुद्धि, चरित्र और क्षमता पर ध्यान देना चाहिए। कौमार्य किसी व्यक्ति की पहचान नहीं है, और जितनी जल्दी हम इस मिथक को तोड़ेंगे, उतना ही बेहतर होगा।
लियाना: बिलकुल सही। रितिका, इस ज्ञानवर्धक चर्चा के लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। मुझे उम्मीद है कि हमारी बातचीत इस गलत समझे गए विषय पर कुछ प्रकाश डालने में मदद करेगी और अधिक लोगों को इस बारे में खुलकर बात करने के लिए प्रोत्साहित करेगी।
डॉ. रितिका: धन्यवाद, लियाना। आपसे बात करके बहुत खुशी हुई। हमें आप जैसे और लोगों की ज़रूरत है जो इस तरह की बातचीत शुरू करें—यही एकमात्र तरीका है जिससे सोच को बदला जा सकता है।

अध्याय दो

अनचाहे मेहमान

एनजीओ में लंबे दिन के बाद जब लियाना घर लौट रही थी, तो उसके मन में उन युवा लड़कियों के ख्याल गूंज रहे थे जिन्हें उसने परामर्श दिया था। वह उनके जीवन में जो बदलाव ला सकती थी, उससे प्रेरित और आशावान महसूस कर रही थी। शाम की हवा में ताजगी थी जब लियाना घर की ओर चल पड़ी, सूरज क्षितिज में डूबते ही आकाश नारंगी और गुलाबी रंगों से रंग गया। उसके कदम हल्के थे, दूसरों की मदद करने में बिताए दिन की संतुष्टि से उसे ऊर्जा मिली हुई थी। दुनिया की समस्याओं का बोझ उसके कंधों से थोड़ा हल्का लग रहा था जब उसने उन युवा लड़कियों के बारे में सोचा जिन्हें उसने सलाह दी थी, जिनके चेहरे दृढ़ संकल्प और आशा से भरे हुए थे।
अपने दरवाजे के पास पहुँचते ही लियाना की नज़र एक अपरिचित दृश्य पर पड़ी— उसके घर के सामने एक चमचमाती लाल कार खड़ी थी, जिसकी पॉलिश की हुई बाहरी सतह ढलते सूरज की रोशनी में चमक रही थी। उसके मन में असमंजस पैदा हो गया। उसे किसी मेहमान की उम्मीद नहीं थी, और न ही ऐसे शानदार वाहन से आने वाले किसी व्यक्ति की। शायद यह कोई अचानक आया मेहमान हो, उसने मन ही मन सोचा। गेट खोलकर वह अपने घर के सामने वाले दरवाजे की ओर जाने वाले रास्ते पर कदम रखने लगी, हर कदम के साथ उसकी जिज्ञासा बढ़ती जा रही थी। जैसे ही उसने हैंडल पकड़ने के लिए हाथ बढ़ाया, उसका दिल उत्सुकता से धड़कने लगा, उसे पता नहीं था कि दूसरी तरफ उसका क्या इंतजार कर रहा है।
घर में प्रवेश करते ही लियाना के सामने एक ऐसा दृश्य आया जिसे देखकर वह कंपकंपी से कांप उठी। एक सलीके से कपड़े पहने जोड़ा उसके सामने खड़ा था, उनकी मुस्कान गर्मजोशी भरी थी लेकिन उसमें थोड़ी घबराहट झलक रही थी। और

उनके बगल में एक युवक खड़ा था जिसका चेहरा वह पहली नज़र में ठीक से पहचान नहीं पाई।
उसकी निगाहें उस युवक पर टिक गईं और एक पल के लिए मानो समय थम गया। उसमें कुछ जानी-पहचानी सी बात थी, एक ऐसा अहसास जिसने उसके मन में बेचैनी की लहर दौड़ा दी।
फिर अचानक उसे एक बात समझ में आई। वह लड़का उसके फोन में देखी गई तस्वीरों से हूबहू मिलता-जुलता था, एक ऐसे परिवार की तस्वीरें जिनसे वह कभी नहीं मिली थी, लेकिन जिनके चेहरे उसकी यादों में बसे हुए थे।
सच्चाई धीरे-धीरे उसके सामने प्रकट हुई, मानो सूरज धीरे-धीरे उग रहा हो और वह उस सच को देख पा रही हो जिसे वह अब तक देखने में असमर्थ थी। यह उसी लड़के का परिवार था जिसकी तस्वीरें उसके संभावित जीवनसाथी के रूप में प्रसारित की गई थीं। सारी बातें भयावह स्पष्टता के साथ सामने आ गईं और लियाना का पेट आशंका से मचल उठा।
कमरा मानो सिकुड़ता जा रहा था, दीवारें उस पर गिरती जा रही थीं, और वह अपने विचारों के उथल-पुथल के बीच अपनी आवाज़ निकालने के लिए संघर्ष कर रही थी। दंपति की विनम्र मुस्कानें उसकी शांति को भेदती हुई छुरी की तरह लग रही थीं, और उस युवक की जिज्ञासु निगाहें उसकी बेचैनी को और बढ़ा रही थीं। उसके परिवार को उसके भीतर पनप रही उथल-पुथल का कोई आभास नहीं था और वे आगंतुकों से शिष्टाचारवश बातचीत करते रहे, लियाना की खामोश पीड़ा से बेखबर। उन्होंने उसे अपने साथ आने का इशारा किया, लेकिन वह वहीं खड़ी रही, अपनी निगाहें उन अजनबियों से हटा नहीं पा रही थी जिन्होंने उसके एकांत में घुसपैठ की थी।
लियाना की धड़कन इतनी तेज़ थी कि उसके कानों में बाकी सारी आवाज़ें दब गईं। वह एक जगह जड़वत खड़ी थी, मानो किसी तूफान की तेज़ रोशनी में फंसा हिरण हो। हवा में तनाव भरा था, घुटन भरा और भारी, मानो हर सांस उसे अनिश्चितता के जाल में और गहराई तक खींच रही हो।
उसके दिमाग में विचारों की उथल-पुथल मची हुई थी, बिखरे हुए विचारों का एक उलझा हुआ जाल स्पष्टता पाने की बेचैन कोशिश में एक-दूसरे पर उखड़ रहा था। यह सब कैसे हुआ? वे उससे क्या उम्मीद कर रहे थे? और सबसे महत्वपूर्ण बात, इसका उसके अपने सपनों और आकांक्षाओं पर क्या असर पड़ेगा?

लेकिन उसके विचारों की उथल-पुथल के बीच एक बात स्पष्ट थी—वह खुद को उनकी अपेक्षाओं के ज्वार में बहने नहीं दे सकती थी। उसने अपनी स्वतंत्रता के लिए, जीवन में अपना मार्ग स्वयं तय करने के अधिकार के लिए बहुत संघर्ष किया था। और वह किसी को भी अपना भविष्य तय करने की अनुमति नहीं देगी।
अपनी सारी हिम्मत जुटाकर, लियाना ने आखिरकार अपनी आवाज़ पाई, हालांकि वह धीमी और कांपती हुई थी। "नाम... नमस्ते," वह हकलाते हुए बोली, उसकी नज़रें अपने परिवार और अजनबियों के बीच घूम रही थीं।
दंपति ने एक-दूसरे को देखकर एक-दूसरे को समझा, उनकी मुस्कान थोड़ी सी फीकी पड़ी लेकिन फिर वापस लौट आई। "नमस्ते बेटा," महिला ने मीठी आवाज़ में जवाब दिया। "कैसे हो?"
लियाना का गला सूख गया था, उसने बस सिर हिलाकर धीरे से भरोसा दिलाया कि वह ठीक है। लेकिन अंदर ही अंदर उसकी भावनाएं तूफानी समुद्र की तरह उमड़ रही थीं, मानो उसे अपनी उग्र लहरों में डुबो देना चाहती हों।
लियाना का परिवार, अपने स्नेह और आतिथ्य सत्कार में डूबा हुआ, आगंतुकों से सहज बातचीत में मशगूल रहा, मानो उन्हें अपनी बेटी के भीतर चल रहे उथल-पुथल का कोई आभास ही न हो। उसके शांत मुखौटे के नीचे छिपी उथल-पुथल से बेखबर, उन्होंने उसे अपने साथ बैठने का इशारा किया, उनकी मुस्कान सच्ची और स्वागतपूर्ण थी।
लेकिन लियाना वहीं जमी रही, मानो बातचीत के उतार-चढ़ाव के बीच एक मूक प्रहरी हो। उसके भीतर आक्रोश का एक उग्र ज्वार उमड़ रहा था, जो उसके दिल के चारों ओर सावधानी से खड़ी की गई दीवारों को तोड़कर बाहर निकलने की धमकी दे रहा था। वे कैसे यह जान सकते थे कि उसके लिए क्या बेहतर है, जबकि वे उसका नाम तक नहीं जानते थे?
लेकिन जैसे-जैसे गुस्सा अंदर ही अंदर सुलगता रहा, लियाना ने खुद को संयमित रखने की पूरी कोशिश की, वह उन्हें अपनी कमजोरी देखकर संतुष्टि नहीं देना चाहती थी। उसने अपने कंधे सीधे किए, और भावनाओं के उस सैलाब का सामना करने के लिए खुद को मजबूत किया जो उसे अभिभूत करने की धमकी दे रहा था।
उनकी लगातार निगरानी का बोझ असहनीय होने के कारण, लियाना ने बैठक कक्ष के घुटन भरे माहौल से खुद को अलग कर लिया और अपने एकांत स्थान की ओर चली गई। हर कदम के साथ उसका दिल ज़ोर से धड़क रहा था, एक ऐसी बेचैन लय जो उसके विचारों की उथल-पुथल को प्रतिध्वनित कर रही थी।

अपने कमरे में घुसते ही लियाना बिस्तर पर गिर पड़ी, गद्दे की नरमी उसके भीतर उमड़ रही उथल-पुथल को कुछ खास राहत नहीं दे पा रही थी। उसने अपनी आँखें बंद कर लीं, मानो कुछ पल के लिए ही सही, दुनिया को भुला देना चाहती हो, क्योंकि वह उन भावनाओं के सैलाब से जूझ रही थी जो मानो ज्वार की लहर की तरह उस पर टूट पड़ी थीं।
वह जानती थी कि वह इसके लिए तैयार नहीं थी, अभी नहीं। शादी का विचार उसके सामने एक दुर्गम बाधा की तरह मंडरा रहा था, एक ऐसा भविष्य जिसकी वह कल्पना भी नहीं कर सकती थी, खासकर तब जब उसे अपनी शर्तों पर अभी बहुत कुछ हासिल करना बाकी था।
लेकिन जब वह अपने विचारों के भंवर में खोई हुई लेटी थी, तभी दरवाजे पर हल्की सी दस्तक ने उसे वास्तविकता में वापस ला दिया। उसकी माँ की कोमल आवाज़ सन्नाटे को चीरती हुई उसके दिल के चारों ओर खड़ी दीवारों को तोड़ती हुई सुनाई दी।
उसकी ओर मुड़कर देखते हुए, लियाना के भीतर निराशा का ज्वार उमड़ आया। "मैंने तुम्हें पहले भी बताया है," उसने कहना शुरू किया, उसके शब्दों में अवज्ञा और निराशा का मिश्रण था। "मैं इसके लिए तैयार नहीं हूँ। तुमने मुझसे सलाह लिए बिना उन्हें क्यों आमंत्रित किया?"
मां के चेहरे पर नरमी आ गई, उनकी आंखों में समझ और अफसोस का मिलाजुला भाव था। "हम तुमसे अभी शादी करने के लिए नहीं कह रहे हैं," उन्होंने कोमल लेकिन दृढ़ स्वर में समझाया। "वे बस तुमसे मिलने आए हैं, तुम्हें बेहतर तरीके से जानने आए हैं। हमने अभी तक कुछ भी तय नहीं किया है। अभी समय है।"
लेकिन लियाना के लिए, समय एक क्षणभंगुर वस्तु की तरह था, जो रेत के कणों की तरह उसकी उंगलियों से फिसल रहा था। वह जानती थी कि आगे का रास्ता चुनौतियों और अनिश्चितताओं से भरा होगा, लेकिन वह यह भी जानती थी कि वह खुद को दूसरों की अपेक्षाओं के ज्वार में बहने नहीं दे सकती।
जैसे ही उसकी माँ कमरे से चली गई, उसे एक बार फिर अपने विचारों में खो जाने के लिए अकेला छोड़कर, लियाना जानती थी कि आगे का सफर उसे खुद ही तय करना होगा। और जब वह वहाँ लेटी हुई, खाली आँखों से छत को घूर रही थी, तो उसने ठान लिया कि चाहे कितनी भी बाधाएँ क्यों न आएँ, वह अपने भाग्य की बागडोर अपने हाथों में लेगी।

लियाना के शब्द हवा में भारी गूंज रहे थे, उसके भीतर उमड़ रही उथल-पुथल की कड़वी प्रतिध्वनि। "सिर्फ मुझे देखने के लिए? इसका मतलब ही क्या है?" उसने क्रोध और पीड़ा से भरी आवाज में कहा। "क्या मैं कोई नीलामी में रखी कलाकृति हूँ जिसे देखने के लिए वे आते हैं, और अगर उन्हें मैं पसंद आती हूँ, तो वे मुझे ले जाते हैं? ओह, माँ, मैं आप सबको कैसे समझाऊँ? मुझे नहीं पता।"
मां की भौंहें तन गईं, आंखों में थोड़ी सी अधीरता झलक रही थी। "अभी फालतू की बातें मत करो," उन्होंने चिढ़ भरे स्वर में कहा। "और हम ये नहीं कह रहे कि इस लड़के की शादी करवा दो। वो अच्छे परिवार से है, अच्छी तरह से बसा हुआ है। हम तो बस तुम्हें विकल्प बता रहे हैं।"
लियाना ने व्यंग्य भरी हंसी हंसते हुए कहा, उसकी तीक्ष्णता तनाव को चीरती हुई सी लग रही थी। "ओह, तो आधे घंटे में ही तुम्हें सब कुछ पता चल गया कि तुम कह सकती हो कि परिवार और लड़का अच्छे हैं," उसने व्यंग्य से भरे शब्दों में पलटवार किया।
लेकिन माँ का सब्र जवाब दे गया, “सुनो,” उनका लहजा सख्त हो गया और उन्होंने अपना अंतिम आदेश देते हुए कहा, “अपनी दार्शनिक बातें अपने पिता के लिए बचा कर रखो। तुम्हें पता है इस घर में जो कुछ भी होता है, वह उन्हीं का फैसला होता है। वही करो जो वे कहते हैं। अभी कपड़े बदलो, तैयार हो जाओ, मेकअप करो और नीचे आओ।” उनकी आवाज़ में किसी भी तरह की बहस की गुंजाइश नहीं थी। लियाना को अपनी माँ की उम्मीदों के बोझ तले दिल में दर्द महसूस हुआ, आँखों में आँसू भर आए। वह चीखना चाहती थी, उन्हें अपने अंदर उमड़ रही उथल-पुथल समझाना चाहती थी। लेकिन वह जानती थी कि यह व्यर्थ है। उसके पिता के अधिकार के आगे उसकी आवाज़, उसकी इच्छाएँ, सब महत्वहीन लग रही थीं।
एक गहरी आह भरते हुए, लियाना ने चुपचाप सिर हिलाया, उसकी मां के अधिकार के बोझ तले उसका संकल्प चकनाचूर हो गया। और जैसे ही वह अपनी मां के आदेश का पालन करने के लिए मुड़ी।
वह खुद को फंसा हुआ महसूस कर रही थी, उन अपेक्षाओं और परंपराओं के बोझ तले घुट रही थी जिन्होंने उसे जकड़ रखा था। और जैसे ही वह नीचे इंतजार कर रहे अजनबियों का सामना करने के लिए तैयार हुई, उसे पता था कि स्वतंत्रता और समझ के लिए उसकी लड़ाई अभी खत्म नहीं हुई है।

जैसे ही लियाना सीढ़ियों से उतरकर बैठक कक्ष में पहुँची, चारों ओर बातचीत की हल्की-हल्की आवाज़ गूँज रही थी। उसके माता-पिता और लड़के का परिवार आपस में मग्न थे, जबकि लड़का अपने फ़ोन में मग्न लग रहा था। लियाना की माँ, जो हमेशा एक शालीन मेज़बान की तरह व्यवहार करती थीं, धीरे से अपनी बेटी के पास गईं और उसे उस युवक के बगल में एक आलीशान सोफ़े पर बैठा दिया। दोनों परिवारों के लोग अर्धवृत्ताकार रूप में बैठे थे, उसके माता-पिता उसके सामने थे, जिससे एक आत्मीय लेकिन औपचारिक माहौल बन गया था।
लियाना ने एक पारंपरिक हल्के हरे रंग का बिना आस्तीन वाला सूट पहना था, जिसका कोमल कपड़ा उसकी प्राकृतिक सुंदरता को और भी निखार रहा था। यह पोशाक उसके खुबानी रंग के चेहरे पर पूरी तरह से जंच रही थी, और पोशाक की बारीक डिज़ाइन उसकी उपस्थिति में एक अलग ही शालीनता जोड़ रही थी। काजल और विंग्ड आईलाइनर से सजी उसकी आँखें मोहक आकर्षण बिखेर रही थीं, मेकअप के सावधानीपूर्वक प्रयोग से उनकी आकृति और भी निखर रही थी। हालाँकि लियाना का रंग पारंपरिक रूप से गोरा नहीं था, फिर भी उसकी त्वचा दमक रही थी, जिसमें कोई दाग-धब्बे नहीं थे, और उसकी चिकनी त्वचा उसकी नियमित देखभाल का प्रमाण थी।
लियाना की शारीरिक सुंदरता ही एकमात्र आकर्षण नहीं थी। उसका आत्मविश्वास, जो उसकी हर चाल और हावभाव में झलकता था, उसकी सबसे खास विशेषता थी। यह आत्मविश्वास आत्म-विश्वास से उपजा था, ऐसा आत्मविश्वास जो शांत से शांत व्यक्ति को भी उसकी उपस्थिति में डगमगा देता था। इसकी शक्ति इतनी प्रबल थी कि उसके कार्यालय का लड़का भी, उसके अप्रतिरोध्य आकर्षण से प्रेरित होकर, अपने प्रेम का इज़हार करने का साहस जुटा पाया था।
उसके बगल में सोफे पर बैठते ही, लियाना की निगाहें कमरे में मौजूद सभी लोगों पर घूम पड़ीं। औपचारिक अवसर के बावजूद, वह शांत और संयमित रहीं, उनका व्यवहार शालीन और सुरुचिपूर्ण था। यह दृश्य उनकी सहज शालीनता और आकर्षण को बखूबी दर्शाता था, वे गुण जो उन्हें किसी भी परिस्थिति में सबसे अलग बनाते थे।
"लियाना, तुम अपने काम से थक गई होगी, और हम यहाँ जबरदस्ती घुस आए हैं," महिला ने बीच में कहा, उसकी मुस्कान बनावटी और असत्य लग रही थी।
लियाना ने बड़ी सहजता से जवाब दिया, मानो उसकी थकान या बेचैनी का कोई संकेत न हो। "अरे नहीं, बिलकुल नहीं। आप सभी को यहाँ देखकर मुझे बहुत खुशी हो रही

है," उसने आतिथ्य सत्कार का दिखावा करते हुए कहा। फिर भी, उसके विनम्र व्यवहार के पीछे, लियाना उस महिला के चेहरे पर असंतोष की एक झलक महसूस करने से खुद को रोक नहीं पाई। यह एक सूक्ष्म बदलाव था, जो किसी आम दर्शक के लिए मुश्किल से ही दिखाई देता, लेकिन लियाना की तीक्ष्ण अंतर्ज्ञान ने उस सूक्ष्म संकेत को पकड़ लिया।
लड़के के पिता ने लियाना से बातचीत शुरू करने का मौका लपक लिया, उनकी जिज्ञासा स्पष्ट थी। "तो, आप आखिर करती क्या हैं?" उन्होंने उत्सुकता से पूछा, उनके पेशे के रहस्य को सुलझाने के लिए।
सवाल का जवाब देने के लिए तैयार होते हुए, लियाना के चेहरे पर गर्व की एक झलक दिखाई दी और उसने अपनी मुद्रा सीधी कर ली। "मैं एक प्रतिष्ठित कंपनी में एसोसिएट मैनेजर हूँ," उसने आत्मविश्वास से भरे स्वर में कहा।
उस महिला ने शायद और पूछताछ करने का मौका भांपते हुए एक और सवाल पूछा। "और वह कौन सी कंपनी हो सकती है?" उसने संदेह भरे लहजे में पूछा।
जैसे ही लियाना ने अपनी कंपनी का नाम बताया, उसने लड़के के परिवार के भावों में एक सूक्ष्म बदलाव देखा। पिता ने सहमति जताते हुए सिर हिलाया, लेकिन महिला की भौहें हल्के आश्चर्य से तन गईं, और उसका संदेह और भी स्पष्ट हो गया।
"ओह, यह तो एक दिलचस्प चुनाव है," महिला ने थोड़ी सी तिरस्कारपूर्ण लहजे में कहा। "यह काफी चुनौतीपूर्ण होगा।"
उस महिला के लहजे से विचलित हुए बिना, लियाना ने अपना संयम बनाए रखा। "हाँ, यह चुनौतीपूर्ण हो सकता है, लेकिन मुझे इसमें बेहद संतुष्टि मिलती है," उसने दृढ़ स्वर में उत्तर दिया।
बातचीत जारी रही, लड़के के परिवार के हर सवाल और टिप्पणी से उनके दृष्टिकोण और मूल्यों में सूक्ष्म अंतर झलक रहा था। लियाना अपने काम और आकांक्षाओं के बारे में जोश से बात कर रही थी, जबकि लड़के का परिवार पारंपरिक भूमिकाओं और अपेक्षाओं में अधिक रुचि रखता प्रतीत हो रहा था। एक समय पर, उस महिला ने परिवार और घर-गृहस्थी के महत्व के बारे में टिप्पणी की, जिस पर लियाना ने विनम्रतापूर्वक सिर हिलाया, हालांकि उसका दिल बैठ गया था। यह बात धीरे-धीरे स्पष्ट होती जा रही थी कि उसके मूल्यों और लड़के के परिवार के मूल्यों में मूलभूत असंगति थी।

बातचीत के दौरान लड़का चुप रहा, उसकी निगाहें अपने परिवार और लियाना के बीच घूमती रहीं। वह दुविधा में फंसा हुआ लग रहा था, लियाना के प्रति स्नेह और अपने परिवार के प्रति वफादारी के बीच उलझा हुआ।
"जानती हो, प्रिय, मैंने गौर किया कि तुम अपनी तस्वीरों से काफी अलग दिखती हो," उसने व्यंग्यात्मक लहजे में कहा। "तस्वीरों में तुम कहीं ज्यादा गोरी लग रही थी।"
लियाना को पहली बार उस महिला की टिप्पणी पर गुस्सा आया, लेकिन उसने तुरंत खुद को संभाला और उसके होठों पर एक हल्की सी मुस्कान आ गई। "अहा, रोशनी और फिल्टर का कमाल," उसने शरारती अंदाज में जवाब दिया, उसकी आँखों में चमक थी। "लेकिन यकीन मानिए, असल में मेरा व्यक्तित्व भी उतना ही आकर्षक है।" लियाना के जवाब पर महिला के होंठ कस गए, जाहिर तौर पर वह उसकी चतुराई से प्रभावित नहीं हुई थी। "खैर, दिखावा धोखा दे सकता है, है ना?" उसने तिरस्कार भरे स्वर में जवाब दिया।
लियाना को थोड़ी झुंझलाहट महसूस हुई, लेकिन उसने अपना संयम बनाए रखा, और उस महिला के स्तर तक न गिरने का निश्चय किया। "बिल्कुल," उसने शांत स्वर में उत्तर दिया, उसकी आवाज़ में थोड़ी दृढ़ता थी। "लेकिन मेरा हमेशा से मानना रहा है कि सच्ची सुंदरता किसी के चरित्र और ईमानदारी में निहित होती है, क्या आप सहमत नहीं हैं?"
लियाना के शब्द हवा में गूंजते ही, तनाव बिजली की तरह कड़कने लगा। महिला की सधी हुई भौहें सिकुड़ गईं, उसके होंठ एक पतली रेखा बन गए क्योंकि वह खुद को शांत रखने की कोशिश कर रही थी। उसकी शालीनता के मुखौटे के पीछे एक तूफान पनप रहा था, जो पानी का गिलास उठाते समय उसके हाथ की हल्की सी कंपकंपी में साफ दिखाई दे रहा था।
“हाँ, बिलकुल,” उसने गुस्से से भरी आवाज़ में जवाब दिया, उसके शब्दों में दबी हुई निराशा झलक रही थी। “लेकिन कुछ सामाजिक मापदंड तो बनाए रखने ही होते हैं, है ना?” उसकी निगाहें लियाना पर टिकी थीं, उसके शब्दों में एक खामोश चुनौती छिपी थी। “आखिरकार, हमारी आने वाली पीढ़ी तो तुम पर ही निर्भर करेगी, है ना?”
लियाना ने अपने कंधे सीधे कर लिए, और सामने से आ रही तीखी निगाहों के बावजूद पीछे हटने से इनकार कर दिया। "माफ़ करना अगर मैं कुछ गलत कह रही हूँ, लेकिन आपकी अगली पीढ़ी में सिर्फ़ मैं ही नहीं रहूँगी, है ना?" उसकी

आवाज़ में थोड़ी सी चुनौती थी, लेकिन साथ ही समझने की सच्ची इच्छा भी थी। "आपका बेटा भी वही योगदान देगा, है ना? क्या आपको नहीं लगता कि अगर वह ज़्यादा निष्पक्ष होता, तो इसका असर..."
लियाना अपनी बात पूरी कर पाती, उससे पहले ही उसके पिता की आवाज़ तनावपूर्ण माहौल में किसी चाकू की तरह चुभ गई। "लियाना," उन्होंने बीच में ही टोकते हुए कहा, उनके लहजे में फटकार और निराशा दोनों थी। "क्या घर आए किसी मेहमान से ऐसे बात करते हैं? क्या यही वो नैतिकता है जो हमने तुम्हें सिखाई है?" “लेकिन पापा, क्या आप सुन रहे हैं कि वे क्या कह रहे हैं?” उसके शब्द हवा में गूंजते रहे, मानो वह अपनी बात को सही साबित करने के लिए बेताब गुहार लगा रही हो।
“मुझे उनकी बातों में कुछ भी गलत नहीं दिख रहा है। अब चुप रहो,” उसने दृढ़ और अटल स्वर में जवाब दिया, मानो उसकी सत्ता का भार बातचीत पर एक भारी पत्थर की तरह दबाव डाल रहा हो।
लियाना का दिल बैठ गया जब उसे अपने विरोध की निरर्थकता का एहसास हुआ। उसके पिता की उपेक्षापूर्ण प्रतिक्रिया ने उसके भीतर सुलग रही निराशा की आग को और भड़का दिया।
“अभी भी अगर वो इतना झगड़ा कर रही है, तो शादी के बाद क्या होगा? नहीं, नहीं, मैं रोज़ ये नाटक नहीं झेल पाऊँगी। शुक्र है कि हमें उसके चरित्र के बारे में अभी पता चल गया,” महिला की आवाज़ में तिरस्कार झलक रहा था, उसके शब्दों में हल्का सा तिरस्कार छिपा था।
“ड्रामा? किरदार? मैंने आखिर कहा क्या?” लियाना की आवाज भ्रम से कांप रही थी, आरोपों की अचानक बौछार से उसका दिमाग चकरा गया था।
“बस करो। अब कुछ बोलने की जरूरत नहीं। तुमने हमें पहले ही बहुत अपमानित कर दिया है,” लियाना के पिता ने गुस्से से कहा, लगातार हो रही आलोचनाओं से उनका धैर्य टूट चुका था।
"लेकिन मेरे अपमान का क्या?" लियाना की आवाज कांप उठी, अस्वीकृति का दर्द उसकी आत्मा में गहराई तक समा गया था, उसकी आंखों में अनकहे आंसू भरे हुए थे।
“देखो, खुद चोर होकर दूसरे को चोर कह रहा है। उसने खुद ही कहा कि हमारा बेटा काला है। उसे किसी के लिए कोई इज्जत नहीं है,” उस महिला ने व्यंग्य करते हुए कहा, उसके शब्द लियाना के घायल दिल पर जहरीले तीरों की तरह चुभ रहे थे।

"क्या यह सब तुमने ही शुरू नहीं किया था?" लियाना की आवाज कांप उठी, अन्याय का बोझ उसकी कोमल आत्मा पर भारी पड़ रहा था।
“चुप रहो!” लियाना के पिता की आवाज़ कमरे में गूंज उठी, जिससे आगे की सारी आवाज़ दब गई। “हमने तुम्हें ज़रूरत से ज़्यादा आज़ादी दे दी है। इसी वजह से हम इस स्थिति का सामना कर रहे हैं।”
"देखिए, भाई साहब," महिला ने तिरस्कार भरे लहजे में कहा। "सबसे पहले, अपनी बेटी को बड़ों से बात करना सिखाइए। उसमें बिल्कुल भी तमीज़ नहीं है। मुझे खेद है, लेकिन आपने अपने बच्चों की परवरिश ठीक से नहीं की है। हमें आपसे कोई शिकायत नहीं है; आपने हमारे आतिथ्य सत्कार में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया, लेकिन हम इस रिश्ते को सुधार नहीं सकते।"
लियाना के पिता वहीं जड़वत खड़े रहे, उनका सिर झुका हुआ था, मानो उन पर लगे आरोपों को वे मौन स्वीकार कर रहे हों। उनका हृदय इस अहसास से पीड़ा से भर गया था कि अपने बच्चों को स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता प्रदान करने के उनके प्रयासों ने अनजाने में ही उन्हें इस अपमान के क्षण तक पहुंचा दिया था।
जैसे ही मेहमान जाने की तैयारी करने लगे, महिला ने एक बार फिर लियाना की ओर मुड़कर कहा, उसके होठों के कोनों पर एक घमंडी मुस्कान थी। "हमारे बेटे से कुछ सीखो। इतनी बहस में भी उसने एक शब्द नहीं बोला। इसे ही तो संस्कार कहते हैं।"
इस अप्रत्यक्ष अपमान से लियाना का दिल पस्त हो गया, आत्मरक्षा करने की तीव्र इच्छा से उसका गला सूख गया। फिर भी, वह चुप रही, उसकी निगाहें झुकी रहीं, उस पर हुए अन्याय के खिलाफ बोलने का साहस उसमें नहीं था।
वे शब्द हवा में गूंजते रहे, समाज और अपने ही परिवार द्वारा उस पर थोपी गई अपेक्षाओं की एक कड़वी याद दिलाते हुए। और जैसे ही मेहमानों के जाने के बाद दरवाजा बंद हुआ, तनाव और नाराजगी का एक स्पष्ट एहसास पीछे छोड़ते हुए, लियाना को उस घुटन भरे सन्नाटे से जूझना पड़ा जो उसकी आत्मा को निगलने की धमकी दे रहा था।

अध्याय 3

एक बेटी की दुविधा

लियाना की मां ने निराशा से भरी आवाज में घुटन भरी चुप्पी को तोड़ा। "हमें तुमसे इसकी उम्मीद नहीं थी," लियाना की माँ ने शोक और फटकार से भरे स्वर में घुटन भरी चुप्पी को तोड़ते हुए धीरे से कहा।
अनकहे आँसुओं से भरी आँखों वाली लियाना अपनी माँ की निराशा का बोझ सहन नहीं कर पा रही थी। "हाँ माँ, मुझे भी आप दोनों से ऐसी उम्मीद नहीं थी," उसने दबी हुई भावनाओं से कांपती आवाज़ में जवाब दिया।
उसके पिता, जिनका सामान्य शांत स्वभाव भीतर उमड़ रहे क्रोध के तूफान से चकनाचूर हो गया था, इतनी तीव्रता से भड़क उठे कि लियाना अंदर तक हिल गई। "तो फिर तुम क्या उम्मीद कर रही थी? तुम हमें अपमानित करोगी, और हम इसमें तुम्हारा साथ देंगे?" उनकी आवाज़ कमरे में गूंज उठी, दीवारों से टकराकर ऐसी उग्रता के साथ गूंजी जो उसने पहले कभी नहीं देखी थी।
लियाना की मां, जो हमेशा शांतिप्रिय थीं, ने बढ़ते तनाव को कम करने का प्रयास किया। "कृपया धैर्य रखें, वरना आपकी सेहत खराब हो जाएगी," उन्होंने कोमल स्वर में, लेकिन चिंता से भरी आवाज में विनती की।
लेकिन उसके पिता का गुस्सा बेकाबू हो गया। "क्या तुमने उसका दूसरों से बात करने का तरीका नहीं देखा? हमने ऐसा क्या किया था कि हमें ऐसी बेटी मिली?" उन्होंने उंगली उठाकर ल्याना पर आरोप लगाते हुए कहा।
भावनाओं के सैलाब को रोक न पाने के कारण, जो उसे पूरी तरह से अभिभूत करने वाला था, लियाना फूट-फूटकर रोने लगी। उसका दिल का दर्द निराशा और पीड़ा की धारा में बह निकला। यह एहसास कि उसके अपने माता-पिता उसे इस नज़र से देखते हैं, उसके लिए एक गहरा आघात था, जिसने उसके आत्मसम्मान की नींव को हिलाकर रख दिया।

"पर मुझे बताओ, मेरी गलती क्या थी? उन्होंने मुझे अपमानित करना शुरू कर दिया, और आप बस वहीं खड़े रहे, पापा। क्या मेरे लिए बोलना आपकी ज़िम्मेदारी नहीं है? और अगर आप नहीं बोलेंगे, तो मैं खुद बोलूंगी," लियाना ने गिड़गिड़ाते हुए कहा, उसकी आवाज़ में हताशा और दृढ़ता का मिलाजुला भाव था। "चुप कर! क्या ये अपने पिता से बात करने का तरीका है?" उसके पिता की आवाज़ अधिकारपूर्ण ढंग से गूंजी, उनका धैर्य जवाब दे रहा था। "क्या तुम शर्म और इज्जत भूल गई हो? जब से तुमने पैसे कमाना शुरू किया है, मुझे नहीं पता तुम खुद को क्या समझती हो। क्या हमने तुम्हें इसी के लिए पाला-पोसा था? हमने तुम्हारी परवरिश के लिए बहुत त्याग किया है, हमेशा तुम्हारी हर मांग पूरी की है। आज देखो तुमने बदले में हमें क्या दिया है।"
"बदले में? क्या मैं तुम्हारा निवेश हूँ जिससे तुम प्रतिफल चाहते हो?" लियाना की आवाज पीड़ा से भर उठी, उसके शब्द उसकी आत्मा पर लगे गहरे घावों की मार्मिक याद दिला रहे थे।
"उसके बोलने का तरीका देखो। अब, अगर तुमने एक भी अनुचित शब्द कहा, तो अच्छा नहीं होगा," उसके पिता ने चेतावनी दी, उनके लहजे में निराशा और अप्रत्यक्ष धमकी का मिश्रण था।
“तुम दोनों हमेशा यही करते थे। हमेशा मुझे चुप रहने को कहते थे। अगर तुमने एक बार भी मेरा साथ दिया होता तो यह स्थिति पैदा ही नहीं होती,” लियाना की आवाज निराशा से कांप रही थी, उसके शब्द वर्षों से दबे सपनों और खामोश आकांक्षाओं की मार्मिक याद दिला रहे थे।
लियाना ने गहरी सांस ली और अपने ऊपर थोपी गई अपेक्षाओं का सामना करने के लिए साहस जुटाया। "क्या मैंने तुम्हें नहीं बताया कि मैं अभी शादी नहीं करना चाहती?" उसने दृढ़ता से भरी आवाज में जवाब दिया।
उसकी माँ की आवाज़ नरम पड़ गई, उनके शब्दों में चिंता झलक रही थी। “क्या तुम्हें अपनी उम्र का एहसास भी है? तुम अब 28 साल की हो गई हो। अगर अभी नहीं, तो फिर कब?” उन्होंने विनती भरी नज़रों से लियाना से समझदारी दिखाने की गुहार लगाई।
"जब मैं मानसिक रूप से तैयार हो जाऊंगी, तभी ऐसा होगा," लियाना ने दृढ़ता से कहा, उसका विश्वास अडिग था।
उसकी माँ ने सिर हिलाया, उसके चेहरे पर झुंझलाहट की झलक दिखाई दी। “क्या तुम्हें पता है कि तुम्हारी उम्र में मैं तुम्हारे पिता का पूरा घर

संभालने के साथ-साथ तुम्हारा पालन-पोषण भी कर रही थी? और तुम अभी शादी के लिए भी तैयार नहीं हो?” उसने कहा, उसके शब्दों में अपने बलिदानों का बोझ साफ झलक रहा था।
लियाना ने यह कहानी पहले भी अनगिनत बार सुनी थी, अपनी माँ की कम उम्र में हुई शादी और कम उम्र में ही उन पर आ पड़ी जिम्मेदारियों की कहानी। "हर चीज़ का अपना समय होता है," उसकी माँ ने निराशा से भरी आवाज़ में कहा।
"हां, हर चीज का अपना समय होता है, और यह समय मेरे करियर पर ध्यान केंद्रित करने का है, न कि किसी के घर की मरम्मत करने का," लियाना ने दृढ़ निश्चय के साथ जवाब दिया।
“तुम गलत हो। इस समय तुम्हारी अहमियत 99% शादी है और 1% करियर। शादी के बाद भी तुम अपने करियर पर ध्यान दे सकती हो। क्या तुम्हें पता भी है कि लोग हमें कितना ताना मारते हैं, कहते हैं कि हमने तुम्हें अपने घर में इसलिए रखा है ताकि तुम्हारी कमाई से अपना पेट भर सकें?” उसके पिता ने बीच में टोकते हुए कहा, उनकी आवाज में कुंठा और निराशा साफ झलक रही थी।
अपने माता-पिता की उम्मीदों का बोझ लियाना पर एक भारी चादर की तरह पड़ा था, जो उसके सपनों को घुटन भरे भार के नीचे दबा देने की धमकी दे रहा था। लेकिन इस दबाव के बावजूद, उसने हार मानने से इनकार कर दिया और इस विश्वास पर दृढ़ता से टिकी रही कि उसका मूल्य सामाजिक मानदंडों से नहीं, बल्कि उसके अपने दृढ़ विश्वासों से निर्धारित होता है।
लियाना की आवाज हताशा से उपजी तीव्रता से ऊंची हो गई, उसके शब्द सामाजिक अपेक्षाओं की घुटन भरी बंदिशों के लिए एक चुनौती थे।
“क्या तुम दोनों एक बार भी अपने तथाकथित समाज से बाहर आ सकते हो?” उसने गुस्से से भरी आँखों से पूछा। “ये लोग कौन होते हैं जिनके पास मेरी ज़िंदगी की परवाह करने का समय होता है? अगर ये लोग अपनी निजी ज़िंदगी में इतनी ही दिलचस्पी दिखाते, तो दुनिया कितनी बेहतर होती।”
उसके माता-पिता ने थकी हुई निगाहों से एक-दूसरे को देखा, परंपराओं और सामाजिक मानदंडों का वर्षों तक पालन करने से उनके चेहरे कठोर हो गए थे। “इसमें अपनी विचारधारा थोपने की कोई ज़रूरत नहीं है,” उसके पिता ने सख्त और अटल स्वर में कहा। “हम सब समाज का हिस्सा हैं और हमें इसी में रहना है। इसके कुछ नियम और पाबंदियाँ हैं, और अगर काम उन्हीं के अनुसार किया जाए तो सब कुछ सुचारू रूप से चलता है। तुम हमारी पुरानी परंपराओं पर सवाल नहीं

उठा सकतीं। हमने तुम्हें अपनी ज़िंदगी में कुछ करने की इजाज़त दी है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि तुम कुछ भी करने लग जाओगी। तुम्हारी शादी हमारे हिसाब से ही होगी। हमें हर रोज़ हर किसी से कुछ न कुछ सुनने की ज़रूरत नहीं है। हम इससे सचमुच तंग आ चुके हैं।”
उसके पिता के शब्दों का बोझ हवा में भारी था, जो उस पर रखी गई अपेक्षाओं की घुटन भरी याद दिला रहा था। लेकिन जैसे ही लियाना ने उनकी चेतावनी सुनी, उसके भीतर कुछ टूट गया।
इतना सब सुनने के बाद, लियाना खुद को और नियंत्रित नहीं कर सकी। उसने बड़ी सावधानी से जो संयम का बांध बनाया था, वह आखिरकार टूट गया और दबी हुई भावनाओं का सैलाब उमड़ पड़ा।
अब उसका सब्र टूट चुका था। घुटन भरी उम्मीदों से, अनुरूपता बनाए रखने के लगातार दबाव से, और परंपरा की वेदी पर अपने सपनों का बलिदान करने से।
“आप साफ़-साफ़ क्यों नहीं कह सकते कि मैं आपके लिए बोझ हूँ? और आपके समाज के लिए? वह समाज क्या है, और कहाँ है? कृपया मुझे दिखाएँ। मैंने इस समाज के बारे में जीवन भर सुना है, लेकिन इसे कभी देखा नहीं। जिस समाज की आप बात करते हैं, वह कितना अच्छा है, है ना? हर कोई सच्चाई का प्रतीक है; हर कोई कितना अच्छा है। लेकिन आपका समाज मेरे समाज से अलग क्यों है? या क्या मैं उस समाज का हिस्सा नहीं हूँ? मुझे आपको वास्तविकता का एहसास कराने दीजिए।”
"मुझे समझ नहीं आता कि आप अपने समय से बाहर क्यों नहीं निकल सकते। मुझे स्कूल और कॉलेज भेजने का क्या फायदा अगर इससे मुझे सोचने और अपने विचार व्यक्त करने के लिए पर्याप्त ज्ञान ही न मिले? आपको मुझे अनपढ़ ही रखना चाहिए था ताकि मुझमें कोई महत्वाकांक्षा ही न जागती। लेकिन मुझे लगता है कि इसमें कुछ हद तक मेरी भी गलती है। मुझे शुरू से ही आपको अपने समाज की वास्तविकता से अवगत करा देना चाहिए था।"
"तुम्हें लगता है कि मैं बस एक ऐसी लड़की हूँ जो दुनिया भर के लोगों को नहीं जानती, लेकिन मैं तुम्हें बता दूँ, तुम बिल्कुल गलत हो। मुझे लगता है कि मैं इस समाज को तुम दोनों से कहीं बेहतर जानती हूँ, और यही कारण है कि मुझे इसकी परवाह नहीं है। माँ, क्या तुम्हें पता है कि जब मैं महज़ 8 साल की थी तब मेरा शोषण हुआ था? 8 साल की! क्या तुम्हें इसका मतलब समझ आता है?"

लियाना की मां ने बोलने के लिए अपना मुंह खोला, उनकी आंखों में आंसू चमक रहे थे, लेकिन लियाना बोलती रही, उसके शब्द बाढ़ के द्वार की तरह बह निकले।
“क्या तुम समझ सकते हो कि मुझे कैसा लगा? मैं तुम्हें बता भी नहीं पाई। मुझे खुद नहीं पता कि मैंने तुम्हें क्यों नहीं बताया, लेकिन जब तुम खुद इस बारे में सोचोगे, तो तुम्हें जवाब जरूर मिल जाएंगे। चुप कर। है ना? चुप थी। और पापा, ये सब तुम्हारे समाज के एक हिस्से ने किया है। और इसीलिए मुझे तुम्हारे समाज की कोई परवाह नहीं है।”
जब लियाना की आवाज भावनाओं से कांप उठी, तो उसके माता-पिता उसकी पीड़ा की गहराई को समझने के लिए संघर्ष करने लगे। उन्होंने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि उनकी बेटी इतना भारी बोझ अकेले उठा रही है।
"हर दिन जब मैं काम पर जाती हूँ, हर एक दिन, मुझे अनगिनत लोगों की गंदी निगाहें झेलनी पड़ती हैं," लियाना ने दबी हुई गुस्से से कांपती आवाज़ में कहा। "क्या आप अपने समाज से मेरे लिए इसे बदलने की गुज़ारिश कर सकते हैं? चाहे कोई भी उम्र हो, अंकल हों, लड़के हों—किसी भी उम्र के हों, मैं उन्हें मर्द तक नहीं कहूँगी।"
उसके माता-पिता ने एक दूसरे को बिना कुछ कहे देखा, बेटी के चेहरे पर दिख रहे दर्द को देखकर उनका दिल टूट गया। वे उसे दुनिया की क्रूरताओं से बचाने में, उसके मासूमियत को उनके घर के बाहर छिपी कठोर वास्तविकताओं से बचाने में नाकाम रहे थे।
"ऐसा नहीं है कि मैं कह रही हूँ कि हर इंसान ऐसा होता है, लेकिन आप उन्हें देखकर कैसे बता सकते हैं कि यह सही है या गलत?" लियाना की आवाज अनिश्चितता से कांप रही थी, उसकी आँखें समझने की गुहार लगा रही थीं।
"मुझे संदेह है, मुझे डर है, और मैं तब तक किसी से शादी नहीं करने वाली जब तक मैं खुद न चाहूं, और आप में से कोई भी मुझे ऐसा करने के लिए मजबूर नहीं कर सकता, चाहे मेरी उम्र कुछ भी हो।"
उसके माता-पिता सन्नाटे में बैठे रहे, उनके चेहरे पर अविश्वास के भाव थे। इतने वर्षों की चुप्पी के बाद, लियाना ने आखिरकार अपने अंदर दबे दर्द और निराशा की परतों को खोल दिया था।
"मैं ऐसे समाज का हिस्सा नहीं बनना चाहती जो पक्षपाती और ईर्ष्यालु हो, जो सोचता हो कि अगर कोई काम वे खुद करें तो ठीक है, लेकिन अगर वही काम कोई और करे तो वे सौ सवाल पूछेंगे, उसे शर्मिंदा करेंगे और चैन से नहीं जीने

देंगे," लियाना ने दृढ़ विश्वास से भरी आवाज में कहा। "आपका समाज पाखंडी है। यह सिर्फ दिखावे में विश्वास रखता है। और यही असली सच्चाई है। उन्हें मेरी परवाह नहीं है। वे मुझे जानते तक नहीं। जब मेरा अपना परिवार मुझे नहीं जानता, तो कोई और कैसे जान सकता है?"
जैसे ही लियाना के शब्द हवा में गूंजे, सामाजिक मानदंडों में निहित अन्याय और दोहरे मापदंडों की ओर उंगली उठाते हुए, उसने यथास्थिति को चुनौती देना जारी रखा।
"मुझे एक बात बताओ, तुम्हारा समाज हमेशा लड़कियों के लिए ही एक ऐसा घोषणापत्र क्यों जारी करता है जिसका पालन करना ज़रूरी है? समय, स्थान, पहनावा, विचार, लड़की जो कुछ भी करती है, उस पर क्यों सवाल उठाए जाते हैं?" हर सवाल के साथ उसकी आवाज़ तेज़ होती गई, उसका गुस्सा फूट पड़ा।
"आप यह क्यों नहीं समझ सकते कि शादी को सफल बनाने के लिए मानसिक तैयारी बहुत जरूरी है, और मैं अभी तैयार नहीं हूँ?" लियाना के स्वर में झुंझलाहट झलक रही थी, मानो उसने यह बात अनगिनत बार दोहराई हो और किसी ने उसकी बात न सुनी हो।
"क्या यह बयान आपको मेरे लिए उपयुक्त दूल्हा ढूंढने से रोकने के लिए काफी नहीं है, जबकि आप यह भी नहीं जानते कि वह मेरे लिए सही दूल्हा होगा या नहीं?" उसका आखिरी सवाल हवा में गूंजता रहा, उन गहरी मान्यताओं और अपेक्षाओं के लिए एक चुनौती, जिन्होंने अब तक उसके जीवन को निर्देशित किया था।
एक निर्णायक मोड़ लेकर, लियाना घर से निकल गई, उसके शब्दों का बोझ घने कोहरे की तरह हवा में छाया रहा। उसे सांस लेने के लिए जगह चाहिए थी, अपने मन से उन घुटन भरी उम्मीदों को दूर करने के लिए जगह चाहिए थी जो उसे जकड़ने की धमकी दे रही थीं। बाहर, खुले आसमान के नीचे, उसे उम्मीद थी कि उसे वह स्पष्टता और स्वतंत्रता मिलेगी जिसकी उसे सख्त जरूरत थी।
उसके दृढ़ विश्वास को देखकर उसके माता-पिता सन्न रह गए और केवल मौन सहमति में सिर हिलाते रहे। लियाना को मुक्ति का अहसास हुआ—सच बोलने के साहस से जन्मी एक नई आज़ादी, चाहे परिणाम कुछ भी हो।
जैसे ही लियाना ठंडी शाम की हवा में बाहर निकली, सदियों पुरानी परंपराओं और सामाजिक अपेक्षाओं का बोझ उसके मन में घर कर गया, मानो हर मोड़ पर उसे घुटन महसूस हो रही हो। शहर की चहल-पहल से सड़कें गुलजार थीं, फिर भी वह

भीड़-भाड़ में खुद को अलग-थलग महसूस कर रही थी, उसका मन भारत के विवाह कानूनों और रीति-रिवाजों के पाखंड और आधारहीनता से ग्रस्त था।
उसने कड़वे स्वर में सोचा कि भारतीय समाज में महिलाओं के लिए विवाह को ही सर्वोपरि लक्ष्य के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। बचपन से ही लड़कियों को यह सिखाया जाता है कि उनका मूल्य एक उपयुक्त जीवनसाथी ढूंढने और एक कर्तव्यनिष्ठ पत्नी की भूमिका निभाने की उनकी क्षमता से जुड़ा है। लेकिन शादियों के उत्सव और आनंद के मुखौटे के पीछे एक गहरी सच्चाई छिपी थी—एक ऐसी सच्चाई जिसमें महिलाओं से परंपरा के नाम पर अपने सपनों, इच्छाओं और यहां तक कि अपने बुनियादी अधिकारों का भी त्याग करने की अपेक्षा की जाती थी।
उसने रिश्तों में महिलाओं से की जाने वाली अपेक्षाओं को नियंत्रित करने वाले व्यापक दोहरे मापदंडों के बारे में सोचा। जहाँ पुरुषों को अक्सर उनके प्रेम प्रसंगों के लिए सराहा जाता था और उन्हें अपने निजी जीवन में व्यापक स्वतंत्रता दी जाती थी, वहीं महिलाओं से कठोर आचार संहिता और पवित्रता का पालन करने की अपेक्षा की जाती थी। जिन कार्यों से पुरुषों को प्रशंसा और सराहना मिलती थी, वही कार्य महिलाओं के लिए शर्मिंदगी और बहिष्कार का कारण बन सकते थे—यह भारतीय समाज में व्याप्त गहरे लिंगभेद और स्त्री द्वेष का एक ज्वलंत उदाहरण था।
लियाना ने ऐसी पुरातन मान्यताओं के दुष्परिणामों को प्रत्यक्ष रूप से देखा था। उसने अपने मित्रों और रिश्तेदारों को दुर्व्यवहारपूर्ण और प्रेमहीन विवाहों में फंसा हुआ देखा था, जहाँ सामाजिक अपेक्षाओं के बोझ तले उनकी आत्मा कुचली जा रही थी। उसने ऐसी महिलाओं की कहानियाँ सुनी थीं जिन्हें उनकी इच्छा के विरुद्ध विवाह बंधन में बांध दिया गया था, और भारतीय समाज को नियंत्रित करने वाली पितृसत्तात्मक संरचनाओं ने उनकी आवाज़ को दबा दिया था। और उसने स्वयं भी निंदा और आलोचना का सामना किया था, केवल इसलिए कि उसने यथास्थिति पर सवाल उठाने और जीवन में अपना मार्ग चुनने के अपने अधिकार का दावा करने का साहस किया था।
हलचल भरी सड़कों से गुज़रते हुए, लियाना भारत के विवाह कानूनों और रीति- रिवाजों की बेतुकीपन पर विचार करने से खुद को रोक नहीं पाई। उसने उन अनगिनत उदाहरणों के बारे में सोचा जिनमें महिलाओं को दहेज की मांग, बाल विवाह और दुल्हन की तस्करी जैसी पुरातन प्रथाओं का शिकार बनाया जाता था -

जैसी अनगिनत महिलाएं हैं, जो अपने अधिकारों के लिए लड़ रही हैं, यथास्थिति को चुनौती दे रही हैं और चुप रहने से इनकार कर रही हैं।
जैसे-जैसे लियाना अपने मोहल्ले की भूलभुलैया जैसी गलियों में अकेली सैर करती रही, उसके विचार धीरे-धीरे शांत होने लगे और उनकी जगह जिज्ञासा और आश्चर्य की भावना ने ले ली। वह खुद को अपरिचित गलियों और संकरी सड़कों पर भटकती हुई पाती थी, हर मोड़ पर उसे उस हलचल भरे शहर का एक नया पहलू दिखाई देता था जिसे वह अपना घर कहती थी।
और फिर, मानो किस्मत से, उसकी नज़र दो विशाल अपार्टमेंट परिसरों के बीच बसी एक छोटी सी, अनोखी इमारत पर पड़ी—एक पुस्तकालय और किताबों की दुकान, जो आसपास की गलियों के शोरगुल के बीच एक छिपे हुए रत्न की तरह थी। लियाना प्रवेश द्वार के सामने रुक गई, उसकी आँखें आश्चर्य से चौड़ी हो गईं। उसने इस जगह को पहले कभी क्यों नहीं देखा था?
उत्सुकता से भरी लियाना ने दरवाजा खोला और अंदर कदम रखा। पुरानी किताबों और चमड़े की जिल्दों की मनमोहक खुशबू ने तुरंत उसकी इंद्रियों को तृप्त कर दिया। अंदर का हिस्सा आरामदायक होने के साथ-साथ विशाल भी था, फर्श से छत तक दीवारों पर किताबों की अलमारियां सजी हुई थीं। सड़क की रोशनी बड़ी खिड़कियों से अंदर आ रही थी, जिससे कमरे में बिखरी लकड़ी की मेजों और आलीशान कुर्सियों पर हल्की रोशनी पड़ रही थी।
प्रदर्शित विभिन्न शैलियों और शीर्षकों की विविधता को देखकर लियाना की आँखें खुशी से चौड़ी हो गईं। वहाँ क्लासिक और बेस्टसेलर, रहस्य और थ्रिलर, प्रेम उपन्यास और संस्मरण - सभी उत्सुक पाठकों द्वारा खोजे जाने और पढ़े जाने की प्रतीक्षा कर रहे थे।
वह गलियारों में घूमती रही, किताबों की जिल्दों पर उंगलियां फेरती हुई। वहां राजाओं और रानियों, साहसी लोगों और खोजकर्ताओं की कहानियों से भरी इतिहास की किताबें थीं; विज्ञान कथा उपन्यास थे जो पाठकों को दूर की आकाशगंगाओं और वैकल्पिक वास्तविकताओं में ले जाते थे; और आत्म-सहायता मार्गदर्शिकाएँ थीं जो सुख और सफलता के रहस्यों को उजागर करने का वादा करती थीं।
लेकिन लियाना की नज़र एक खास किताब पर पड़ी—दुकान के पिछले हिस्से में एक शेल्फ पर रखी एक पतली सी किताब, जिस पर बड़े अक्षरों में शीर्षक लिखा था:

"शट अप शादी।" उत्सुकतावश, लियाना ने हाथ बढ़ाकर किताब को उठाया और पन्ने पलटकर उसके पिछले भाग पर लिखी जानकारी पढ़ी।
जैसे-जैसे वह पढ़ती गई, उसके होठों पर हल्की सी मुस्कान आ गई। यह किताब एक ऐसी महिला की प्रेम की खोज की कहानी कहती है जो सीमाओं से परे है। अपने आदर्श साथी की तलाश में, वह विभिन्न समाजों के मर्म में गहराई से उतरती है, जहाँ उसे परंपराओं, मान्यताओं और व्यक्तित्वों के विविध पहलुओं का सामना करना पड़ता है—यह विषय लियाना के लिए बेहद प्रासंगिक था, खासकर हाल ही में अपने माता-पिता के साथ हुए उसके मतभेदों को देखते हुए।
बिना किसी झिझक के, लियाना ने अपना फैसला कर लिया। वह हाथ में किताब लिए काउंटर की ओर बढ़ी और कैश रजिस्टर के पीछे बैठी दयालु बुजुर्ग महिला से कुछ देर बात की। कुछ ही क्षणों में, वह किताबों की दुकान से बाहर निकली, उसके हाथों में किताब का भार उसे उस रोमांच की याद दिला रहा था जो उसके पन्नों में उसका इंतजार कर रहा था।
समय पर नज़र डालते हुए लियाना को एहसास हुआ कि काफी देर हो चुकी थी— उम्मीद से कहीं ज़्यादा। मन में एक शांति का भाव उमड़ आया और वह घर की ओर चल पड़ी। उसके कदमों की लयबद्ध आवाज़ खाली गलियों में गूंजती हुई अपने परिचित आरामदायक अपार्टमेंट की ओर वापस लौट रही थी। चलते-चलते उसके भीतर एक रोमांच उमड़ रहा था—अपने शहर के बीचोंबीच एक छिपे हुए खजाने को खोजने के साधारण से काम से पैदा हुआ एक नया उद्देश्य और दृढ़ संकल्प।
जब लियाना "शट अप शादी" किताब को सीने से कसकर पकड़े घर पहुंची, तो उसके मन में उम्मीद की एक किरण जगी कि शायद उसकी अनुपस्थिति में उसके माता-पिता का मन बदल गया हो। उसने आशावादी होकर सोचा, शायद वे आखिरकार उसके दृष्टिकोण को समझ जाएं और सामाजिक अपेक्षाओं के बजाय अपनी खुशी और स्वायत्तता को प्राथमिकता देने के उसके निर्णय को स्वीकार कर लें।
हालांकि, जैसे ही वह सामने के दरवाजे से अंदर दाखिल होकर अपने परिवार के परिचित बैठक कक्ष में पहुंची, वहां के गंभीर माहौल ने उसकी सारी उम्मीदें तोड़ दीं। उसके माता-पिता सोफे पर अकड़े बैठे थे, और जैसे ही वह पास आई, उनके चेहरे के भाव समझ से परे थे।
"लियाना," उसके पिता ने चिंता से भरी आवाज में कहना शुरू किया। "हमें बात करनी है।"

उसके लहजे की गंभीरता सुनकर लियाना का दिल बैठ गया, मानो कोई अनहोनी का डर उस पर छा गया हो। उसने गहरी सांस ली और आने वाली किसी भी स्थिति के लिए खुद को तैयार किया।
"क्या बात है पापा?" उसने पूछा, अपने अंदर बढ़ती चिंता के बावजूद अपनी आवाज को स्थिर रखने की कोशिश करते हुए।
इसके बाद उसकी माँ बोली, उसकी आवाज़ भावनाओं से काँप रही थी। "लियाना, हमने तुम्हारी कही हुई बातों पर विचार किया है और हम बहुत चिंतित हैं। तुम बाहर सुरक्षित नहीं हो, खासकर अकेले। तुम्हें अपने जीवन में किसी ऐसे व्यक्ति की ज़रूरत है जो हमेशा तुम्हारे साथ रहे, जो तुम्हारी रक्षा करे और तुम्हारा ख्याल रखे।"
लियाना के भीतर निराशा का सैलाब उमड़ रहा था। उसे उम्मीद थी कि उसके माता- पिता समझेंगे, यह जानेंगे कि वह अपना ख्याल रखने में पूरी तरह सक्षम है। लेकिन उनके शब्दों ने उनके मन में गहराई से बसी लैंगिक भेदभाव और पितृसत्तात्मक सोच को और भी पुख्ता कर दिया।
"पापा, मम्मी," उसने गिड़गिड़ाते हुए कहा। "आपकी चिंता के लिए मैं आभारी हूँ, सचमुच। लेकिन मैं अपना ख्याल खुद रख सकती हूँ। मैं सालों से ऐसा करती आ रही हूँ। और वैसे भी, शादी सुरक्षा या संरक्षा की गारंटी नहीं है। मैं डर के आधार पर जीवन भर के बंधन में बंधने से इनकार करती हूँ। मैं अब बच्ची नहीं हूँ। मैं अपना ख्याल खुद रख सकती हूँ। मुझे अपनी सुरक्षा के लिए पति की ज़रूरत नहीं है।"
उसके पिता ने सिर हिलाया, उनके चेहरे पर दृढ़ भाव थे। "लियाना, हम तुमसे डर के मारे शादी करने के लिए नहीं कह रहे हैं। हम तुमसे अपने भविष्य के बारे में सोचने के लिए कह रहे हैं, यह सोचने के लिए कह रहे हैं कि लंबे समय में तुम्हारे लिए सबसे अच्छा क्या है। शादी सिर्फ सुरक्षा के बारे में नहीं है, यह साथ के बारे में है, किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में है जिसके साथ तुम अपना जीवन साझा कर सको।"
लियाना का हाथ थामते हुए उसकी माँ की आँखों में आँसू भर आए। "बेटा, हम जानते हैं कि तुम बहुत मजबूत हो, लेकिन ज़िंदगी अनिश्चित है। अगर हमें कुछ हो गया तो? तब तुम्हारा सहारा कौन होगा? तुम्हें किसी ऐसे व्यक्ति की ज़रूरत है जिसके साथ तुम अपनी ज़िंदगी बाँट सको, जो सुख-दुख में तुम्हारा साथ दे।"

लियाना के भीतर क्रोध का ज्वार उमड़ रहा था। "लेकिन वह व्यक्ति पति ही क्यों होना चाहिए? कोई दोस्त, कोई और, या मैं खुद ही क्यों नहीं हो सकती? मुझे पूर्ण महसूस करने के लिए शादी की ज़रूरत नहीं है।"
उसके पिता का चेहरा सख्त हो गया। "लियाना, हम समझते हैं कि अतीत में तुम्हारे साथ जो कुछ हुआ है, उसकी वजह से तुम्हारी अपनी राय है, लेकिन कभी- कभी तुम्हें बड़ों की बात सुननी चाहिए। हम सिर्फ तुम्हारा भला चाहते हैं। विवाह एक पवित्र संस्था है, एक ऐसा बंधन जो स्थिरता और सुरक्षा प्रदान करता है। हो सकता है कि तुम इसे अभी न समझ पाओ, लेकिन एक दिन तुम हमें इसके लिए धन्यवाद दोगी कि हमने तुम्हें इस ओर प्रेरित किया।"
लियाना के उन्हें समझाने के प्रयास व्यर्थ गए, परंपराओं और सामाजिक अपेक्षाओं के बोझ तले उसके शब्द दब गए।
पराजित होकर, लियाना निराशा से भारी कदमों से अपने कमरे में लौट गई। अपने परिचित कमरे में प्रवेश करते ही, वह हताशा की भावना को दूर नहीं कर सकी। क्रोध और हताशा के मिश्रण से उसने पहले खरीदी हुई किताब को मेज पर पटक दिया, जिसकी धमक कमरे में गूंज उठी, मानो उसकी टूटी हुई उम्मीदों की एक कड़वी याद दिला रही हो।
अपनी डेस्क पर बैठते हुए, लियाना ने अपना चेहरा हाथों में छिपा लिया, भावनाओं का बोझ उसे पूरी तरह से जकड़ रहा था। उसे उम्मीद थी कि यह किताब उसके मुश्किल समय में सांत्वना, शायद मार्गदर्शन भी प्रदान करेगी। लेकिन अब, यह उपेक्षित और भूली हुई पड़ी थी, उसके दिल में चल रहे परंपरा और प्रगति के युद्ध में एक और शिकार।
एक गहरी आह भरते हुए, लियाना अपनी सीट से उठी और खिड़की के पास जाकर गोधूलि की हल्की रोशनी से जगमगाते शहर के क्षितिज को निहारने लगी। दूर तक उसे अनगिनत घरों और इमारतों की रोशनी दिखाई दे रही थी, जिनमें से प्रत्येक अपने निवासियों की आशाओं और सपनों की गवाही दे रही थी। लेकिन लियाना के लिए, भविष्य अनिश्चितताओं से घिरा हुआ प्रतीत हो रहा था, बाधाओं और चुनौतियों का एक भयावह परिदृश्य जो उसके सामने एक अंतहीन सड़क की तरह फैला हुआ था।

अध्याय 4

राजा बीटा क्रॉनिकल्स

लियाना अपने माता-पिता के घर पर चाय की चुस्कियां लेते हुए सोशल मीडिया पर स्क्रॉल कर रही थी, तभी उसका छोटा भाई राज जोर से हंसते हुए कमरे में घुस आया। उसने अपना बैग सोफे पर फेंका, उसके बगल में बैठ गया और माँ द्वारा कॉफी टेबल पर रखे गए कुछ स्नैक्स उठा लिए।
“अरे वाह, घर आकर माँ के हाथ का खाना खाने का क्या ही मज़ा है,” राज ने मुस्कुराते हुए कहा। लियाना ने देखा कि उनकी माँ प्यार से मुस्कुराईं और राज के बालों को सहलाने के लिए हाथ बढ़ाया।
“मेरा राजा बेटा घर आ गया!” लियाना की माँ ने खुशी से कहा, और उसे उसकी पसंदीदा मिठाइयों से भरी एक और थाली थमा दी।
लियाना ने आँखें घुमाईं। उसने यह दृश्य अनगिनत बार देखा था—राज को लाड़- प्यार और प्रशंसा मिलती थी, जबकि उससे एक ज़िम्मेदार, समझदार बड़ी बहन की भूमिका निभाने की उम्मीद की जाती थी। ऐसा लगता था मानो वह राजा-बेटा के कभी न खत्म होने वाले शो के किसी एपिसोड में फंसी हुई हो।
पुरुष प्रधानता, या पितृसत्ता, केवल पारिवारिक व्यवस्था नहीं है; यह एक ऐतिहासिक और वैश्विक घटना है। सदियों से, दुनिया भर के समाजों में पुरुषों को नेता, निर्णय लेने वाले और परिवार के मुख्य कमाने वाले के रूप में स्थान दिया गया है। यह महज़ संयोग नहीं है—यह गहरी जड़ें जमा चुकी मान्यताओं और इस सत्ता संरचना को बनाए रखने के लिए बनाई गई प्रणालियों का परिणाम है। "क्या तुमने कभी सोचा है कि समाज में 'पुरुषों का वर्चस्व' वाली बात को लेकर इतना जुनून क्यों है?" लियाना ने एक दिन कॉफी पीते हुए अपनी दोस्त प्रिया से पूछा।

“क्या तुम मज़ाक कर रही हो? बिल्कुल, मैं करती हूँ,” प्रिया ने जवाब दिया। “लेकिन यह सदियों से उलझी हुई ऊन की गुच्छी को सुलझाने जैसा है। धर्म, परंपरा, यहाँ तक कि हमारी सामाजिक व्यवस्थाएँ—ये सभी पुरुषों को सत्ता में बनाए रखने में भूमिका निभाती हैं।”
प्रिया गलत नहीं थी। ऐतिहासिक रूप से, कई समाज इस धारणा पर बने थे कि जीवित रहने के लिए पुरुषों की शारीरिक शक्ति आवश्यक है—शिकार करना, रक्षा करना और शारीरिक श्रम करना। समय के साथ, ये भूमिकाएँ सामाजिक पदानुक्रम में बदल गईं जहाँ पुरुषों ने सार्वजनिक और निजी दोनों क्षेत्रों में सत्ता के पदों पर आसीन हुए।
सभ्यताओं के विकास के साथ-साथ, इन भूमिकाओं को कानूनों, रीति-रिवाजों और धर्मों में संहिताबद्ध किया गया, जिससे पुरुष वर्चस्व को बल मिला। दूसरी ओर, महिलाओं को अक्सर देखभाल करने वाली और गृहणी की भूमिकाओं तक सीमित कर दिया गया—ये भूमिकाएँ पुरुषों द्वारा निभाई जाने वाली कथित रूप से अधिक महत्वपूर्ण भूमिकाओं के मुकाबले गौण मानी जाती थीं।
लियाना के लिए, यह भेदभाव महज एक अमूर्त अवधारणा नहीं बल्कि एक जीती-जागती वास्तविकता थी। उसने अपने परिवार और समाज में पुरुष प्रधानता का प्रत्यक्ष अनुभव किया था। बचपन से ही उससे "अच्छी बेटी" बनने की उम्मीद की जाती थी, जो रसोई में अपनी माँ की मदद करती और घर का अनुशासन बनाए रखती। वहीं, राज को बाहर खेलने, मस्ती करने और नई-नई चीज़ें खोजने के लिए प्रोत्साहित किया जाता था।
उसे बचपन की एक बातचीत याद आ गई। राज अपने दोस्तों के साथ क्रिकेट मैच खेलकर लौटा था, उसके कपड़े मिट्टी से सने हुए थे।
"राज, तुम्हें अपने कपड़ों के मामले में और भी सावधान रहने की जरूरत है," उनकी मां ने हल्के से डांटते हुए कहा, हालांकि उनका लहजा नाराजगी से ज्यादा हंसी वाला था।
"ये तो बस लड़कों की शरारतें हैं, माँ," राज ने कंधे उचकाते हुए जवाब दिया, और मीरा ने प्यार भरी मुस्कान के साथ जवाब दिया।
लेकिन लियाना? अगर उससे चाय की एक बूंद भी गिर जाती, तो उसे सावधान और जिम्मेदार रहने के बारे में एक छोटा सा उपदेश सुनने को मिलता था।

“ऐसा क्यों है कि राज जो चाहे कर सकता है और कोई कुछ नहीं कहता, लेकिन अगर मैं ज़रा सी भी गलती कर दूं तो ऐसा लगता है जैसे दुनिया खत्म हो रही है?” लियाना ने एक दिन अपनी माँ से पूछा था।
“तुम एक लड़की हो, लियाना। यह अलग बात है,” उसकी माँ ने जवाब दिया, मानो इससे सब कुछ स्पष्ट हो गया हो।
और यही मुद्दे की जड़ थी। पितृसत्तात्मक समाज में लड़कियों के लिए स्थिति हमेशा "अलग" रही है। लड़कों को स्वतंत्रता दी जाती थी, जबकि लड़कियों को जिम्मेदारियां सौंपी जाती थीं।
लियाना ने रोजमर्रा की जिंदगी में पुरुष प्रधानता के सूक्ष्म तरीकों पर अधिक ध्यान देना शुरू कर दिया। उसने इसे कार्यस्थल पर देखा, जहाँ पुरुष सहकर्मियों को अक्सर अधिक चुनौतीपूर्ण कार्य सौंपे जाते थे, जबकि उससे टीम समन्वय और कार्यक्रम नियोजन जैसे अधिक "देखभालपूर्ण" कार्यों को संभालने की अपेक्षा की जाती थी।
एक दिन काम पर, उसके वरिष्ठ अधिकारी ने उसे अपने कार्यालय में बुलाया। "लियाना, मुझे अगले महीने के लिए टीम का शेड्यूल व्यवस्थित करने की ज़रूरत है," उसने अपने कंप्यूटर से नज़रें उठाए बिना कहा।
“लेकिन सर, मैं नए क्लाइंट के लिए पिच तैयार करने की सोच रही थी। मेरे पास कुछ ऐसे विचार हैं जिनसे वाकई असर पड़ सकता है,” लियाना ने स्थिर स्वर में कहा।
उसकी सीनियर ने हैरानी से ऊपर देखा। “खैर, अभय तो पहले से ही इस काम में लगा हुआ है। वैसे भी, तुम चीजों को व्यवस्थित रखने में बहुत माहिर हो। अपनी खूबियों पर ही क्यों न टिके रहो?”
लियाना निराश और उपेक्षित महसूस करते हुए उनके कार्यालय से निकली। वह इस बात को लेकर चिंतित थी कि कैसे उसके छोटे भाई राज को हमेशा नेतृत्व की भूमिकाएँ निभाने और खुद को चुनौती देने के लिए प्रोत्साहित किया जाता था। वहीं दूसरी ओर, उसे उन भूमिकाओं में सीमित कर दिया गया था जिन्हें एक महिला के लिए "सुरक्षित" और "उपयुक्त" माना जाता था।
ऐसा नहीं था कि कहीं भी नारी वर्चस्व का अस्तित्व ही नहीं था। लियाना ने चीन के मोसुओ लोगों के बारे में पढ़ा था, जो एक मातृसत्तात्मक समाज था जहाँ महिलाएं संपत्ति को नियंत्रित करती थीं और परिवार के सभी महत्वपूर्ण निर्णय लेती थीं। भारत की खासी जनजाति के भी उदाहरण थे, जहाँ सबसे छोटी

बेटी को परिवार की सारी संपत्ति विरासत में मिलती है, और इंडोनेशिया के मिनांगकाबाऊ, जो दुनिया का सबसे बड़ा मातृसत्तात्मक समाज है। इन समाजों में महिलाओं के पास महत्वपूर्ण शक्ति थी, जो इस धारणा को चुनौती देती थी कि पितृसत्ता एक सार्वभौमिक नियम है।
लेकिन ऐसे उदाहरण बहुत कम थे। वैश्विक स्तर पर प्रचलित धारणा अभी भी पुरुष प्रधानता के इर्द-गिर्द घूमती थी, जहाँ पुरुषों के पास सत्ता होती थी और महिलाओं से सहायक भूमिकाएँ निभाने की अपेक्षा की जाती थी।
घर लौटने पर भी, राज के साथ होने वाला "राजा बेटा" वाला बर्ताव लियाना को परेशान करता रहा। यह सिर्फ़ तरजीह देने की बात नहीं थी; बल्कि यह उम्मीद भी थी कि राज लड़का होने के कारण किसी तरह ज़्यादा काबिल या योग्य है।
एक दिन, पारिवारिक रात्रिभोज के दौरान, राज ने घोषणा की कि वह यात्रा करने और "खुद को खोजने" के लिए एक साल का अवकाश लेने की योजना बना रहा है।
“वाह बेटा, यह तो बहुत बढ़िया है,” उनके पिता राजीव ने कहा। “एक नौजवान को दुनिया देखनी चाहिए और उसे बेहतर ढंग से समझना चाहिए।”
लियाना को अपने कानों पर विश्वास नहीं हो रहा था। जब उसने कॉलेज के बाद एक साल का ब्रेक लेकर अपनी रुचियों को तलाशने का सुझाव दिया था, तो प्रतिक्रिया बिल्कुल अलग थी।
“अकेले यात्रा करना? एक लड़की के रूप में? बिलकुल नहीं,” उसके पिता ने उस समय कहा था। “यह सुरक्षित नहीं है। और लोग क्या सोचेंगे?”
अब, राज की घोषणा और अपने माता-पिता की सहायक प्रतिक्रिया को सुनकर, वह चुप नहीं रह सकी।
"तो, राज के लिए यात्रा करना और खुद को खोजना ठीक है, लेकिन मुझे इसके बारे में सोचने की भी अनुमति नहीं थी?" उसने तीखे स्वर में पूछा।
उसकी मां ने उसके पिता की ओर देखा और फिर कहा, "लियाना, लड़के और लड़कियों के लिए यह अलग-अलग होता है। राज अकेले ही ठीक रहेगा।"
“लेकिन ऐसा क्यों है?” लियाना ने जोर देकर पूछा। “उसकी इच्छाओं और महत्वाकांक्षाओं को हमेशा मेरी इच्छाओं और महत्वाकांक्षाओं से अधिक वैध या महत्वपूर्ण क्यों माना जाता है?”
राज ने तनाव भांपते हुए माहौल को हल्का करने की कोशिश की। "अरे लियाना, ऐसी कोई बात नहीं है। तुम्हें पता है मैं परिवार का सबसे छोटा सदस्य हूँ!"

“बिल्कुल सही,” लियाना ने पलटवार करते हुए कहा, “तुम भले ही छोटे हो, लेकिन तुम्हारे साथ राजा जैसा बर्ताव किया जाता है। और मैं इससे तंग आ चुकी हूँ।”
लियाना जानती थी कि वह अपने परिवार की सोच को रातोंरात नहीं बदल सकती, लेकिन वह यथास्थिति को चुनौती देने के लिए दृढ़ संकल्पित थी। उसने महसूस किया कि पुरुष प्रधानता केवल शक्ति के बड़े, स्पष्ट प्रदर्शनों तक ही सीमित नहीं थी; यह पूर्वाग्रह और पक्षपात के सूक्ष्म, रोजमर्रा के उदाहरणों से भी जुड़ी थी। यह उस तरीके से संबंधित थी जिससे समाज लड़कों को विशेषाधिकार का भाव और लड़कियों को कर्तव्य का भाव सिखाता था।
जैसे-जैसे लियाना अपने पारिवारिक रिश्तों की जटिलताओं और पुरुष प्रधान समाज में अपनी जगह को समझने की कोशिश करती रही, उसने उन पूर्वाग्रहों के खिलाफ लड़ने का संकल्प लिया जो महिलाओं को अपनी पूरी क्षमता हासिल करने से रोकते थे। वह "राजा बेटा" वाली मानसिकता और इस विचार से तंग आ चुकी थी कि पुरुषों को हमेशा प्राथमिकता मिलनी चाहिए।
आखिरकार, क्या अब "रानी बेटी" के लिए भी अपना पल जीने का समय नहीं आ गया था?

अध्याय 5

एक वरदान या बोझ?

लियाना अपनी चचेरी बहन की शादी में फर्श पर पालथी मारकर बैठी थी, उसके चारों ओर महिलाओं का एक समूह था। अंतिम तैयारियों के चलते कमरा उत्साह से भरा हुआ था। हल्के रंग की साड़ी पहने लियाना की मौसी, प्रिया, समारोह में इस्तेमाल होने वाले फूलों को बड़ी सावधानी से सजा रही थीं। दिन भर चर्चा का विषय कन्यादान की पारंपरिक रस्म थी—हिंदू विवाहों में एक पवित्र प्रथा जिसमें दुल्हन के माता-पिता अपनी बेटी को दूल्हे को सौंपते हैं, जो जिम्मेदारी के हस्तांतरण का प्रतीक है।
"आह, कन्यादान," लियाना ने अपनी चाय की चुस्की लेते हुए सोचा। उसे यह रस्म हमेशा से ही दिलचस्प, लेकिन समस्याग्रस्त लगती थी।
लियाना के चिंतनशील भाव को देखकर प्रिया ने पूछा, "तुम इतनी गहराई से किस बारे में सोच रही हो?"
लियाना हिचकिचाई, लेकिन उसने अपने विचार व्यक्त करने का फैसला किया। "मैं कन्यादान के अर्थ के बारे में सोच रही थी। यह बहुत पुराना और... खैर, ऐसा लगता है जैसे यह एक महिला को एक वस्तु, एक ऐसी चीज़ में बदल देता है जिसे दिया जा सकता है।"
कमरा एकदम शांत हो गया। कुछ बुजुर्ग महिलाओं ने एक-दूसरे को देखा, जबकि अन्य ने हल्के से सिर हिलाया, शायद उन्हें लियाना के शब्दों में कुछ सच्चाई का आभास हुआ।
परंपरागत रूप से, कन्यादान को माता-पिता द्वारा किए जाने वाले सबसे पवित्र कार्यों में से एक माना जाता है। कन्यादान शब्द दो संस्कृत शब्दों से मिलकर बना है: 'कन्या', जिसका अर्थ है कुंवारी या अविवाहित स्त्री, और 'दान', जिसका अर्थ है भेंट। यह अनुष्ठान माता-पिता द्वारा देवताओं को दी जाने

वाली परम भेंट का प्रतीक है—अपनी पुत्री को, जब वह पत्नी के रूप में अपने नए जीवन में कदम रखती है। समारोह के दौरान, दूल्हा-दुल्हन का पिता अपनी पुत्री का हाथ दूल्हे के हाथ में रखता है, अक्सर मंत्रों का जाप करते हुए जो उसे अपने संरक्षण से उसके पति के संरक्षण में सौंपने की भावना को बल देते हैं।
प्रिया ने माहौल में व्याप्त तनाव को भांपते हुए समझाने की कोशिश की, "लियाना, यह एक पवित्र कार्य है। इसका उद्देश्य महिला को नीचा दिखाना नहीं है, बल्कि उसे परिवार का आशीर्वाद देना है ताकि वह अपने जीवन में एक नया अध्याय शुरू कर सके।"
लियाना ने विनम्रता से मुस्कुराते हुए कहा, लेकिन मन में थोड़ी शंका भी थी। "मैं समझती हूँ कि इसे पारंपरिक रूप से इसी तरह देखा जाता है, आंटी। लेकिन क्या इससे यह संकेत नहीं मिलता कि स्त्री एक ऐसी वस्तु है जिसे आगे सौंपा जा सकता है? दूल्हे के लिए ऐसा ही कोई समारोह क्यों नहीं होता?" लियाना के विचार नारीवादियों और आधुनिक विचारकों के बीच बढ़ते विवाद को दर्शाते हैं, जो कन्यादान को पितृसत्ता में डूबी प्रथा के रूप में देखते हैं। उनके अनुसार, यह महिलाओं के वस्तुकरण का प्रतीक है, जो यह दर्शाता है कि वे अपने पतियों को सौंपे जाने तक अपने पिताओं की देखरेख में रहती हैं। लियाना को हाल ही में पढ़ा एक लेख याद आया जिसमें तर्क दिया गया था, "कन्यादान की अवधारणा इस विश्वास पर आधारित है कि बेटी तब तक बोझ या दायित्व बनी रहती है जब तक उसकी शादी नहीं हो जाती। यह एक पुरुष से दूसरे पुरुष को स्वामित्व हस्तांतरित करने के बारे में है।" उसने यह बात समूह के साथ साझा की, जिससे आगे की चर्चा शुरू हुई।
माया नाम की एक युवती ने कहा, "बिल्कुल सही। मुझे यह अजीब लगता है कि हम अभी भी एक ऐसी रस्म को निभाते हैं जो मूल रूप से एक महिला को वस्तु की तरह मानती है। आखिर सिर्फ बेटी को ही क्यों 'सौंपा' जाता है?"
इस बातचीत से कमरे में मिली-जुली भावनाएं उमड़ रही थीं। कुछ बुजुर्ग महिलाएं रक्षात्मक मुद्रा में थीं, जबकि युवा महिलाएं इस दृष्टिकोण को और गहराई से जानने के लिए उत्सुक दिखाई दे रही थीं।
“ज़रा सोचिए, कई घरों में कन्यादान की अवधारणा शादियों के अलावा भी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में देखने को मिलती है। जब बेटी का जन्म होता है, तो माता-पिता अक्सर उसकी शादी और उसे विदा करने के ‘बोझ’ को लेकर चिंतित होने

लगते हैं। मुझे अपनी दोस्त अनन्या याद है। उसके माता-पिता हमेशा कहते थे, ‘बेटा, हमें तुम्हारे कन्यादान के लिए पैसे बचाने होंगे। यह हमारी सबसे बड़ी ज़िम्मेदारी है।’ वहीं, उसके भाई को ‘राजा बेटा’ की तरह माना जाता था, उस पर ऐसी कोई ज़िम्मेदारी नहीं थी। क्या यह अन्याय नहीं है?”
प्रिया ने संतुलन बनाए रखने की कोशिश करते हुए जवाब दिया, “लेकिन लियाना, क्या यह पिता और बेटी के बीच के भावनात्मक क्षण के बारे में भी नहीं है? यह प्यार, विश्वास और माता-पिता की बेटी की खुशी की कामना का एक प्रतीकात्मक संकेत है। इसे नकारात्मक रूप में नहीं देखा जाना चाहिए।”
लियाना ने अपनी चाची के दृष्टिकोण की सराहना की, लेकिन अपनी बात पर अड़ी रही, "मैं भावनात्मक पहलू को समझती हूँ, चाची, लेकिन यह समानता का क्षण क्यों नहीं हो सकता? बेटी को विदा करने के बजाय दोनों परिवार इस विवाह को आशीर्वाद क्यों नहीं दे सकते?"
कन्यादान के समर्थन में कुछ लोग तर्क देते हैं कि यह स्वामित्व या वस्तुकरण के बारे में नहीं है, बल्कि माता-पिता के प्रेम और बेटी के कल्याण की आशा के बारे में है। कई लोग इसे आशीर्वाद और शुभकामनाएँ देने के अवसर के रूप में देखते हैं। उनका तर्क है कि कन्यादान त्याग का प्रतीक है—जो भारतीय संस्कृति में एक अत्यंत महत्वपूर्ण गुण है।
प्रिया ने आगे कहा, “लियाना, कई समुदायों में यह रस्म विकसित हो रही है। कुछ परिवार आपसी समारोह करते हैं, जिसमें दूल्हा और दुल्हन दोनों को एक-दूसरे को 'सौंप दिया जाता है'। यह बेटी के हस्तांतरण से कहीं अधिक दो परिवारों के मिलन के बारे में है।”
लियाना ने इस बारे में सोचा। शायद इन परंपराओं के सार का सम्मान करते हुए एक आधुनिक और समानतावादी दृष्टिकोण को अपनाने का कोई तरीका हो सकता है। उसने अपने विचार व्यक्त किए, “शायद हमें इन अनुष्ठानों की पुनर्व्याख्या करने की आवश्यकता है जो आज के हमारे मूल्यों को प्रतिबिंबित करें। मैं कन्यादान को एक ऐसे रूप में विकसित होते देखना चाहूंगी जो अधिक पारस्परिक और समावेशी हो।”
एक और महिला, रेखा, जो अब तक चुप थी, आखिरकार बोली, “जानती हो लियाना, मैंने इस बारे में कभी इस तरह नहीं सोचा था। मैं हमेशा इसे अपनी संस्कृति का हिस्सा मानकर स्वीकार करती रही। लेकिन अब मुझे समझ आ रहा है कि हमें चीजों

पर सवाल उठाना चाहिए और उन्हें समय के अनुसार ढालना चाहिए। आखिर हमारी संस्कृति इतनी मजबूत है कि वह बदल सकती है, है ना?”
चर्चा जारी रही और जैसे-जैसे शाम ढलती गई, और भी लोग इसमें शामिल होते गए। कुछ लोगों ने इस अनुष्ठान का बचाव किया, जबकि अन्य ने इसे देखने के नए तरीके सुझाए। लियाना को एहसास हुआ कि परंपराओं की अपनी जड़ें और अर्थ होते हैं, लेकिन प्रत्येक पीढ़ी के लिए समकालीन मूल्यों के अनुसार उन पर सवाल उठाना और उन्हें पुनर्परिभाषित करना आवश्यक है।
कन्यादान को लेकर चल रही बहस इतनी सीधी-सादी नहीं है। यह परंपरा बनाम आधुनिक मूल्यों, संस्कृति के प्रति सम्मान बनाम प्रगति की आवश्यकता और अतीत का सम्मान करते हुए भविष्य के लिए जगह बनाने के बीच नाजुक संतुलन की चर्चा है।
कन्यादान, अन्य कई अनुष्ठानों की तरह, सांस्कृतिक विरासत और बदलते सामाजिक मानदंडों का एक जटिल मिश्रण है। चुनौती यह है कि हम अपनी परंपराओं का सम्मान करते हुए यह भी सुनिश्चित करें कि वे समानता और सम्मान के उन मूल्यों को प्रतिबिंबित करें जिनके लिए हम आज प्रयासरत हैं। जब लियाना सभा से निकली, तो उसे आशा की किरण दिखाई दी। उसने महसूस किया कि परिवर्तन की शुरुआत ऐसी ही बातचीत से होती है—ऐसी बातचीत जो प्रश्न उठाती है, चुनौती देती है और अंततः, हम जिस दुनिया में रहते हैं उसे पुनर्परिभाषित करती है।

अध्याय 6

विवाह सुविधा का साधन है।

लियाना अपनी धुंधली रोशनी वाली केबिन में बैठी थी, जो उसके कंप्यूटर स्क्रीन की हल्की रोशनी से घिरी हुई थी। उसकी मेज पर कागज बिखरे पड़े थे, जो उसके ऊपर पड़े काम के बोझ का सबूत थे। कमरे में छाई खामोशी वैसी ही थी जैसी उसके और उसके माता-पिता के बीच थी। लाख कोशिशों के बावजूद, वह उनके बीच की दूरी को कम नहीं कर पा रही थी, उन्हें अपनी बात समझाने में नाकाम थी।
अपने विचारों में खोई हुई, उसने अपने दरवाजे पर हुई हल्की दस्तक पर मुश्किल से ही ध्यान दिया, जब तक कि दरवाजा चरमराते हुए खुला और उसकी सबसे अच्छी दोस्त और सहकर्मी, ज़िया का परिचित चेहरा सामने आया।
"क्या हाल है?" लियाना ने अपनी चिंताओं के बोझ के बावजूद, अपनी आवाज में कुछ उत्साह भरने की कोशिश करते हुए पूछा।
"मेरे पास तुम्हारे लिए एक सरप्राइज है," ज़िया ने शरारती चमकती आँखों से कहा।
सरप्राइज़ की बात सुनकर लियाना का दिल थोड़ा बैठ गया। वह जानती थी कि ज़िया को उसे ब्लाइंड डेट्स पर भेजने का शौक था, जो एक नेक इरादे वाली कोशिश तो होती थी, लेकिन अक्सर निराशाजनक साबित होती थी।
"कहीं ऐसा तो नहीं कि तुमने मेरे लिए एक और अनजान शिकार ढूंढ लिया हो," लियाना ने आधे मजाक में आह भरी।
ज़िया हंस पड़ी और सिर हिलाते हुए बोली, "ओह, नहीं, इस बार नहीं। मैंने तुम्हारे लिए रिश्ता तय करने की कोशिश छोड़ दी है, जान। लेकिन हां, इसमें एक लड़का शामिल है।"

लियाना ने उत्सुकतावश अपनी भौंहें चढ़ा लीं। "क्या इसका मतलब है कि तुम्हें एक और बॉयफ्रेंड मिल गया है? रणविजय का क्या हुआ?" उसने ज़िया के पिछले कुछ महीनों के बॉयफ्रेंड का ज़िक्र करते हुए मज़ाक में पूछा। रणविजय, ज़िया के कई रिश्तों में से एक था। वह बहुत सोच-समझकर रिश्ते चुनती थी, और इस बात को लेकर उसे कोई पछतावा नहीं था। उसका मानना था कि किसी भी रिश्ते को गंभीरता से लेने से पहले, साथी को उसके उच्च मानकों पर खरा उतरना चाहिए। अगर कोई उसकी पसंद से मेल नहीं खाता था, तो वह तुरंत आगे बढ़ जाती थी।
ज़िया ने हाथ हिलाकर बात टाल दी। "मैं तुम्हें सब कुछ बताऊंगी, लेकिन यहाँ नहीं। चलो, कैंटीन चलते हैं। कॉफ़ी मेरी तरफ से है।"
अपनी नीरस दिनचर्या से छुट्टी मिलने और अपनी सहेली से मिलने के अवसर की उम्मीद से लियाना के दिल में उत्साह की लहर दौड़ गई। "ठीक है, मुझे यह काम खत्म करने के लिए बस पाँच मिनट दीजिए। मैं आपसे वहीं मिलूंगी।"
"ज़रूर," ज़िया ने मुस्कुराते हुए कहा और दरवाज़े से बाहर निकल गई, जिससे लियाना एक बार फिर अपने विचारों में खोई रह गई।
नए सिरे से दृढ़ संकल्पित होकर, लियाना काम पर लग गई, और ज़िया के साथ एक दिलचस्प खुलासे के लिए जाने से पहले उसने अपना डेस्क साफ़ करने का पक्का इरादा कर लिया था। अपने माता-पिता से दूरियाँ बढ़ने के बावजूद, उसे अपनी दोस्त के अटूट समर्थन में सुकून मिला, और वह उस साथ के लिए आभारी थी जिसने जीवन के उतार-चढ़ाव में उसका साथ दिया था।
ताज़ी बनी कॉफ़ी की खुशबू लोगों की बातचीत के बीच घुलमिल गई जब लियाना ने चहल-पहल भरे कैफ़ेटेरिया में प्रवेश किया। उसकी नज़रें कमरे में घूमती रहीं और अंत में ज़िया पर टिक गईं, जो एक आरामदायक कोने में बैठी अपने फ़ोन में मग्न थी।
"नमस्ते," लियाना ने मुस्कुराते हुए अभिवादन किया और पास आते हुए कहा। "अब बताओ क्या है सरप्राइज?"
ज़िया ने ऊपर देखा, उसके होठों पर एक रहस्यमयी मुस्कान थी और उसने लियाना को अपने सामने बैठने का इशारा किया। "हम्म... मुझे पता है तुम जानने के लिए बेताब हो। तो सुनो।" उसने मेज के उस पार हाथ बढ़ाकर लियाना के हाथों को अपने हाथों में लिया और अपनी सहेली से नज़रें मिलाईं। "मैं शादी कर रही हूँ।"

लियाना सदमे से लगभग अवाक रह गई। "क्या? कैसे?" उसका दिमाग तेज़ी से सोचने लगा, इस अप्रत्याशित खबर को समझने की कोशिश कर रहा था। ज़िया उसकी सबसे अच्छी दोस्त थी, फिर भी उसे आने वाली शादी जैसी महत्वपूर्ण बात का बिल्कुल भी पता नहीं था।
ज़िया अपनी कुर्सी पर पीछे झुक गई, उसकी आँखों में शरारत की झलक थी। "क्या, कैसे? क्या मैं शादी नहीं कर सकती?" उसने लियाना को तिरछी नज़र से देखते हुए चुटकी ली।
लियाना ने अपना सिर हिलाया, खबरों के इस बवंडर को समझने की कोशिश करते हुए। "नहीं, बेवकूफ, ऐसी बात नहीं है। लेकिन तुम्हारे जीवन में इतनी सारी चीजें हो रही हैं और मुझे कुछ पता ही नहीं चल रहा है?"
ज़िया खिलखिला उठी, उसकी हंसी हवा में बजती घंटियों की तरह गूंज उठी।
"क्योंकि मुझे पता है कि तुम पहले से ही अपने परिवार की वजह से बहुत सारी परेशानियों से जूझ रहे हो, और मैं तुम्हारा तनाव और बढ़ाना नहीं चाहती थी। साथ ही, मैं तुम्हें सरप्राइज देते समय तुम्हारे चेहरे के हाव-भाव देखना चाहती थी," उसने शरारती चमकती आँखों से कहा।
ज़िया की बात सुनकर लियाना अपनी हंसी नहीं रोक पाई और बनावटी झुंझलाहट दिखाते हुए सिर हिलाया। "खैर, तुम इसमें ज़रूर कामयाब हो गई," उसने मुस्कुराते हुए कहा।
"हम्म हम्म, तो आखिरकार रणविजय ने तुम्हें विजय की तरह हरा ही दिया, है ना?" लियाना ने शरारती मुस्कान के साथ आगे झुकते हुए चिढ़ाया।
ज़िया की हंसी थोड़ी फीकी पड़ गई और उसने सिर हिलाते हुए कहा, "नहीं, मैं रणविजय से शादी नहीं कर रही हूँ," उसकी आवाज़ में थोड़ी गंभीरता झलक रही थी।
लियाना की भौंहें हैरानी से ऊपर उठ गईं। "क्या? ये तो वाकई चौंकाने वाली बात है। तुमने रणविजय को भी छोड़ दिया? फिर किससे शादी करने जा रही हो?" उसने उत्सुकता से पूछा।
ज़िया ने गहरी सांस ली, उसकी निगाहें स्थिर थीं और उसने वे शब्द कहे जिनसे उनकी बातचीत में हलचल मच गई। "कुणाल। यह एक तयशुदा शादी है।"
लियाना की आँखें अविश्वास से चौड़ी हो गईं। "क्या?!" ये शब्द उसके होंठों से विस्मय के आवेश में निकल गए, उसका दिमाग इस अप्रत्याशित खुलासे को समझने की कोशिश कर रहा था। उसने कभी उम्मीद नहीं की थी कि ज़िया, अपने दृढ़

निश्चय और स्वतंत्र स्वभाव के साथ, स्वेच्छा से एक तयशुदा शादी के लिए तैयार हो जाएगी।
"जानती हो, लियाना," ज़िया ने हार मान लेने और दृढ़ निश्चय का भाव लिए बोलना शुरू किया, "मैंने अब तक कई लड़कों के साथ डेट की है, और मैं समझ गई हूँ कि हर आदमी एक जैसा होता है। आप उन्हें बदल नहीं सकते, इसलिए आपको अपनी सोच बदलनी होगी। मैंने अरेंज मैरिज इसलिए स्वीकार की क्योंकि बाद में अगर कुछ बुरा होता है, तो मैं ज़िम्मेदार रहूँगी। मैं अपने माता-पिता से कह सकूँगी, 'यह आपकी पसंद थी।'"
लियाना अविश्वास से आँखें चौड़ी कर बैठी, उसका मन अपनी सहेली के इस नए नज़रिए को उसकी उस बेबाक और स्वतंत्र स्वभाव वाली लड़की के साथ मिलाने की कोशिश कर रहा था जिसे वह अच्छी तरह जानती थी। "मुझे विश्वास ही नहीं हो रहा कि ये तुम्हारे शब्द हैं," उसने चिंता से भरी आवाज़ में कहा। "कोई पल भर में अपने विचार कैसे बदल सकता है? अगर तुम सिर्फ इसलिए शादी कर रही हो क्योंकि तुम्हें अपनी असफल शादी के लिए किसी को दोष देना है, तो तुम्हें शादी करने की ज़रूरत ही नहीं है। और अगर तुम्हें पहले से ही लग रहा है कि शादी असफल होगी, तो फिर इस शादी का क्या मतलब है?"
ज़िया ने मेज के उस पार हाथ बढ़ाया, उसकी निगाहें कोमल लेकिन दृढ़ थीं। "सुनो, लियाना," उसने कोमल लेकिन दृढ़ स्वर में कहना शुरू किया, "मैं जानती हूँ कि शादी के बारे में तुम्हारे क्या विचार हैं, और मैं उनका सम्मान करती हूँ। लेकिन हर कोई उन आदर्शों पर कायम नहीं रह सकता। कम से कम, मैं तो नहीं रह सकती। मेरे माता-पिता चाहते हैं कि मैं शादी करके बस जाऊँ, और मुझे इसमें कुछ भी गलत नहीं लगता।"
"क्या तुम ही नहीं चाहते थे कि कोई ऐसा हो जो तुम्हें समझ सके?" लियाना ने चिंता भरी आवाज में धीरे से पूछा।
ज़िया की निगाहें नरम पड़ गईं, उसके चेहरे पर थोड़ी सी कमज़ोरी झलकती हुई, फिर उसने खुद को संभाला। "हाँ," उसने धीमी आवाज़ में कहा। "मैं अब भी ऐसा चाहती हूँ। अगर अभी नहीं, तो शायद शादी के बाद।"
लियाना की भौंहें असमंजस से सिकुड़ गईं। "और अगर ऐसा नहीं हुआ तो?" उसने चिंता से भरी आवाज में पूछा।
ज़िया ने कुर्सी पर पीछे झुकते हुए एक गहरी आह भरी और उसकी निगाहें कैफ़ेटेरिया की सीमाओं से परे किसी दूर बिंदु पर टिकी हुई थीं। "जीवन की

सुरक्षा के लिए मैं इतना समझौता कर सकती हूँ," उसने भारी निराशा भरे स्वर में कहा।
"ज़िया, तुम बिल्कुल आंटियों की तरह क्यों बात कर रही हो?" लियाना गुस्से से भड़क उठी। "क्या तुम सच में ठीक हो? तुम्हें क्या हो गया है?"
ज़िया की निगाहें अचानक लियाना पर टिक गईं, उसकी आँखों में दर्द और दृढ़ संकल्प का मिलाजुला भाव था। "मैं ठीक हूँ," उसने दृढ़ता से कहा। "मैंने अभी-अभी चीज़ों को स्वीकार करना और वास्तविकता में जीना शुरू किया है। मैं अब सपनों की दुनिया में नहीं जी सकती।"
लियाना ने अविश्वास से अपना सिर हिलाया, उसका दिल अपनी दोस्त के लिए दर्द से भर गया। "ज़िया, मुझे नहीं पता कि मैं तुम्हें यह कैसे समझाऊँ," उसने कोमल लेकिन दृढ़ स्वर में कहना शुरू किया। "लेकिन शादी कोई मजबूरी नहीं है; यह एक चुनाव है। तुम्हें कभी भी, किसी के दबाव में आकर कुछ नहीं करना चाहिए। तुम्हें सिर्फ इसलिए कुछ नहीं करना चाहिए क्योंकि बाकी सब कर रहे हैं या क्योंकि सब चाहते हैं कि तुम करो। तुम्हें समझौता करके अपना जीवन नहीं जीना चाहिए। तुम्हें पता है..."
लियाना अपनी बात पूरी कर पाती, उससे पहले ही ज़िया ने बीच में टोकते हुए कहा, उसकी आवाज़ में थोड़ी अधीरता थी। "मुझे पता है, मुझे पता है," उसने पछतावे भरी आवाज़ में बुदबुदाते हुए कहा। "मैंने यह कई बार सुना है, लेकिन मुझे लगता है कि अब मैंने अपना मन बना लिया है। असल में, मुझे थोड़ी जल्दी है। मुझे अपने स्त्री रोग विशेषज्ञ से अपॉइंटमेंट है।"
लियाना का दिल ज़ोर से धड़कने लगा, ज़िया की बातें सुनकर उसकी चिंता और गहरी हो गई। "ओह, ठीक है," उसने थोड़ी निराशा भरी आवाज़ में जवाब दिया। "अगर यही तुम्हारा फैसला है, तो मैं कुछ नहीं कह सकती। बस... तुम्हें शुभकामनाएं। मुझे तुम्हारे लिए बहुत खुशी है।"
ज़िया ने बदले में हल्की सी मुस्कान दी, उसकी आँखों में कृतज्ञता और अनिश्चितता का मिलाजुला भाव झलक रहा था। "ओह, समझने के लिए धन्यवाद," उसने लगभग फुसफुसाते हुए कहा। "मैं अपनी शादी में अपनी सबसे अच्छी दोस्त का इस तरह का व्यवहार बर्दाश्त नहीं कर सकती।"
ज़िया की बातों से लियाना के गले में एक गांठ सी बन गई, उनकी बातचीत के बोझ से उसका दिल भारी हो गया। बिना किसी झिझक के, वह आगे बढ़ी और ज़िया को

गर्मजोशी से गले लगा लिया। "इधर आओ," उसने फुसफुसाते हुए अपनी दोस्त को कसकर पकड़ लिया। "मैं हमेशा तुम्हारे साथ रहूंगी।"
जब वे अलग होने लगे, तो ज़िया द्वारा स्त्री रोग विशेषज्ञ से मिलने की बात सुनकर लियाना के मन में जिज्ञासा जाग उठी। "वैसे," उसने कोमल लेकिन जिज्ञासु स्वर में पूछा, "स्त्री रोग विशेषज्ञ से मिलने का क्या कारण है?" ज़िया के चेहरे के भाव बदल गए, उसकी आँखों में घबराहट झलक रही थी। बोलने से पहले वह एक पल के लिए झिझकी। "ओह, लड़की, तुम इसके लिए मुझे मार डालोगी," उसने आशंका से भरी आवाज़ में कहा। "दरअसल, मैं हाइमेनोराफी करवाने जा रही हूँ।"
लियाना सदमे से अवाक रह गई, यह जानकर उसका दिमाग चकरा गया। "क्या तुम मज़ाक कर रहे हो?" उसने अविश्वास से ऊंची आवाज़ में कहा। "तुम जानते हो कि यह क्या है, है ना? और अगर हाँ, तो मुझे इसका कोई ठोस कारण या स्पष्टीकरण ज़रूर दो।"
ज़िया ने गंभीरता से सिर हिलाया, उसकी निगाहें स्थिर थीं। "हाँ, मुझे पता है कि यह एक सर्जिकल प्रक्रिया है जिसमें हाइमन का पुनर्निर्माण या मरम्मत शामिल है," उसने स्वीकार किया, उसकी आवाज़ में निराशा का भाव था। लियाना की भौंहें चिंता से सिकुड़ गईं। "और तुम ये सब किसलिए कर रही हो...?" उसने पूछा, उसकी आवाज़ धीमी पड़ गई क्योंकि वह अपनी दोस्त के तर्क को समझने की कोशिश कर रही थी।
"ये तो मेरे होने वाले पति के लिए एक तोहफा है," ज़िया ने हल्की मुस्कान के साथ जवाब दिया, हालांकि उनकी मुस्कान उनकी आंखों तक नहीं पहुंची। "उन्हें ये जानकर कितनी खुशी होगी कि मैंने अपनी पहली रात (सुहागरात) उनके लिए अपनी पवित्रता बरकरार रखी है।"
वे शब्द हवा में भारीपन लिए हुए थे, हर अक्षर लियाना के दिल पर बोझ था। अपनी सहेली को सामाजिक अपेक्षाओं के लिए इतनी कठोर प्रक्रिया से गुज़रते देखने के ख्याल से उसके पेट में एक अजीब सी बेचैनी उठ रही थी, जिसे वह दूर नहीं कर पा रही थी।
“और कुणाल का क्या?” लियाना की आवाज़ लगभग फुसफुसाहट जैसी थी, उसकी चिंता साफ झलक रही थी। “जब आप उसके लिए इतना कुछ कर रही हैं, तो वह कैसे साबित करेगा कि उसने पहले यौन संबंध नहीं बनाए थे? आप उसकी परीक्षा कैसे लेंगी?”

ज़िया की मुस्कान फीकी पड़ गई, उसके चेहरे पर उदासी छा गई। "अरे, लियाना, तुम इसे गलत समझ रही हो," उसने विरोध किया, हालांकि उसकी आवाज़ में थोड़ी सी बचाव की भावना थी। "वह मुझे ऐसा करने के लिए मजबूर नहीं कर रहा है। और वह खुले विचारों वाला है; अगर मेरे पिछले रिश्तों में शारीरिक संबंध रहे हों तो शायद उसे कोई आपत्ति न हो।"
ज़िया के शब्द उसके मन में गूंजते ही लियाना का दिल बैठ गया, उनकी बातचीत का बोझ उसके कंधों पर भारी पड़ गया। अविश्वास और उदासी की भावना उसे जकड़ रही थी, वह अपनी सबसे अच्छी दोस्त की सोच में आए इस अचानक बदलाव को समझ नहीं पा रही थी।
"यही तो मेरा कहना है, ज़िया," लियाना ने झुंझलाहट भरे स्वर में कहा। "अगर वह सचमुच खुले विचारों वाला है और उसे कोई आपत्ति नहीं है, तो फिर यह सब करने का क्या मतलब है? सबसे पहले तो, मुझे यह भी नहीं पता था कि लड़कियों के लिए ऐसी कोई व्यवस्था क्यों है।"
ज़िया के चेहरे पर सख्ती छा गई, बचाव की एक झलक दिखाई दी। "लियाना, मैं तुमसे कोई झगड़ा नहीं करना चाहती," उसने बीच में ही कहा, उसकी आवाज़ में तनाव था। "मैं यह इसलिए कर रही हूँ क्योंकि इससे मुझे खुशी मिलेगी..." लियाना ने सिर हिलाया, उसका धैर्य जवाब दे रहा था। "तुम खुश नहीं रहोगी, ज़िया," उसने गिड़गिड़ाते हुए कहा। "तुम बस उसे यह साबित करने की कोशिश कर रही हो कि तुम्हारी छवि कितनी साफ-सुथरी और अच्छी है। तुम्हारे वैवाहिक जीवन को तुम्हारे पिछले शारीरिक संबंधों के आधार पर तुम्हारा मूल्यांकन नहीं करना चाहिए। तुम्हारे दिमाग में क्या चल रहा है, मुझे समझ नहीं आता..." ज़िया ने बीच में ही टोकते हुए, दृढ़ स्वर में कहा, "बस करो लियाना। मुझे पता था कि ये सब बातें उठेंगी, इसीलिए मैं तुम्हें कुछ नहीं बता रही थी। मैं अब इस विषय पर और बात नहीं करना चाहती। मुझे अपनी अपॉइंटमेंट के लिए देर हो रही है। मैं जा रही हूँ। कल मिलते हैं, जब तुम्हारा मन थोड़ा शांत होगा।"
लियाना चुपचाप देखती रही जब ज़िया ने अपना सामान समेटा और कैफ़ेटेरिया से जल्दी से बाहर निकल गई, उसका दिल अपनी दोस्त के लिए चिंता से भारी था। वह समझ नहीं पा रही थी कि ज़िया की सोच में इतना बड़ा बदलाव कैसे आ गया, कैसे वह अपनी खुशी की कीमत पर सामाजिक अपेक्षाओं के अनुरूप ढलने के लिए इतनी जुनूनी हो गई।

थकी-हारी और निराश होकर लियाना अपने केबिन में लौटी और खुद को काम पर ध्यान केंद्रित करने के लिए मजबूर किया। लेकिन उसका मन ज़िया और उनकी दोस्ती में आए इस परेशान करने वाले मोड़ के बारे में सोच रहा था। अपना काम पूरा करने के बाद, उसमें एनजीओ जाने की हिम्मत नहीं बची थी, इसलिए उसने सीधे घर जाने का फैसला किया।
घर लौटते समय, दिन भर की घटनाओं का बोझ उस पर हावी हो रहा था, जिससे वह खोई हुई और बेचैन महसूस कर रही थी।
खामोशी में, लियाना के विचार और तेज़ होते गए, उसके मन में एक निरंतर ध्वनि की तरह गूंजते रहे। वह अपने ऊपर मंडरा रहे सामाजिक अपेक्षाओं के बोझ, सफलता और खुशी के एक निश्चित मानक के अनुरूप ढलने के दबाव को दूर नहीं कर पा रही थी।
विवाह। यह शब्द उसके मन में एक कठोर ढोल की थाप की तरह गूंजता था, समाज द्वारा व्यक्तियों पर थोपे गए कठोर मानदंडों की निरंतर याद दिलाता था। ऐसा लगता था मानो वह जिधर भी मुड़े, विवाह को ही जीवन का अंतिम लक्ष्य, सफलता और पूर्णता का शिखर बताया जा रहा था।
उसने अनगिनत बातचीतें याद कीं जो उसने सुनी थीं, उन लोगों पर किए गए अप्रत्यक्ष ताने और इशारे जो अभी तक शादी नहीं कर पाए थे। उसे याद आया कि अविवाहित व्यक्तियों, विशेषकर महिलाओं, जिन्होंने शादी से ऊपर अपनी महत्वाकांक्षाओं और सपनों को प्राथमिकता देने का साहस किया था, उनके बारे में चर्चा के दौरान भौंहें चढ़ाकर और दबी हुई दया का भाव दिखाया जाता था। उसने समाज के मनमाने मानदंडों और अपेक्षाओं के आगे झुकने से इनकार कर दिया। उसका मानना था कि विवाह प्रेम और आपसी सम्मान पर आधारित एक चुनाव होना चाहिए, न कि जीवन की सूची में एक औपचारिकता जिसे पूरा किया जाए। उसके विचार उसकी सहेली ज़िया की ओर चले गए, जिसने प्रेम या इच्छा से नहीं, बल्कि समाज की अपेक्षाओं को पूरा करने के कर्तव्यबोध से विवाह करने का निर्णय लिया था। अपनी सहेली को समाज के नियमों का पालन करने के लिए अपनी खुशी का त्याग करते देख लियाना को बहुत दुख हुआ।
जैसे ही लियाना अपने दरवाजे पर पहुँची और घर में दाखिल हुई, उसने मन ही मन एक वादा किया। वह ऐसा नहीं होने देगी। वह अपने सपनों की जिंदगी जीने के लिए हर चीज से लड़ेगी।

जैसे ही लियाना अपने आरामदायक बेडरूम में दाखिल हुई, उसे राहत का एहसास हुआ। लैवेंडर की जानी-पहचानी खुशबू हवा में घुल गई, जिससे उसकी इंद्रियां शांत हो गईं और दिन भर का तनाव कम हो गया। एक गहरी सांस लेते हुए उसने अपने जूते उतारे और अपने मुलायम गद्दे पर लेट गई, नरम गद्दे ने उसे गर्मजोशी से गले लगा लिया।
उसकी नज़र बिस्तर के पास रखी मेज पर किताबों के ढेर पर पड़ी, जो उसे व्यस्त जीवन में भूली हुई छोटी-छोटी खुशियों की याद दिला रही थीं। उनमें से एक किताब पर उसकी नज़र पड़ी जिसका चमकीला और आकर्षक आवरण उसे आकर्षित कर रहा था—जिस पर बड़े अक्षरों में "शट अप शादी" लिखा हुआ था।
कुछ दिन पहले किताब खरीदने की बात याद आते ही लियाना के होंठों पर हल्की सी मुस्कान आ गई। वह किताब के अनोखे शीर्षक और दिलचस्प सारांश से आकर्षित होकर उसे खरीदने गई थी। वह अपनी रोजमर्रा की भागदौड़ में इतनी उलझी हुई थी कि किताब के बारे में पूरी तरह भूल ही गई थी।
काल्पनिक दुनिया में खो जाने की तीव्र इच्छा से प्रेरित होकर, लियाना ने किताब उठाई और अपने हेडबोर्ड से लगे तकियों के ढेर पर आराम से लेट गई। उसने अपने पैरों को नरम कंबलों के नीचे दबा लिया और किताब का पहला पन्ना खोलते हुए उसके आरामदायक भार का आनंद लिया।
कमरा बेडसाइड लैंप की हल्की रोशनी से जगमगा रहा था, जिससे एक गर्मजोशी भरा और मनमोहक वातावरण बन गया था, जिसने लियाना को शांति का अहसास कराया। अचानक कमरे में बिजली की गड़गड़ाहट गूंजी, जिसके बाद खिड़की पर बारिश की तेज़ आवाज़ सुनाई दी। मौसम में अचानक आए इस बदलाव से वह आश्चर्यचकित होकर ऊपर देखने लगी।
उत्सुकता से भरी उंगलियों के साथ, लियाना ने "शट अप शादी" किताब खोली और प्रस्तावना वाला पृष्ठ पलटा। पन्ने छूने में एकदम चिकने और कुरकुरे थे, स्याही की हल्की सी खुशबू कमरे में फैली लैवेंडर की मनमोहक सुगंध के साथ घुलमिल रही थी।

SHUT UP SHAADI

□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□, □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □ □□, □□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□□□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□

[illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [

□□□□□□ **1**

□□□□□□□□□□ - □□ □□□□ □□□□□□

□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□□□□□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□-□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□, □□□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□□□, □□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□ □□, □□ □□ □□□ □□□□□□□ □□□ □□□□□□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□ □□□

□□□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□, □□□□ □□ □□□ □□□ □□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□, □□□ □□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□

□□□□□ □□□ □□□□ □□□□□□□ □□□ □□□ □□□□ □□ □□□□□□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□ □□□□, □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□, □□ □□□□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□, □□□□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□ □□ □□ □□□□ □□, □□□□ □□□□□□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□□□ □□□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□

□□ □□□, □□ □□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□, □□□ □□□□ □□ □□□□□□□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□ □□ □□ □□□□□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□ □□□, □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□□ □□ □□ □□□□□□□□□ □□□□□□□□□□□□□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□-□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□, □□□□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□

□□□□□□ **II**

□□□□ - □□□□□, □□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□

□□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□□, □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□ - □□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□, □□□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□ □□□□, □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□ □□□ □□□ □□□□□ □□□□□ □□□-□□□ □□□□□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□□□ □□ □□, □□ □□□□□ □□□□□□□ □□□ □□ □□ □□□□□□□□□□□□□ □□□□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□

□□□□ □□□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□□□, □□□□ □□□ □□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□, □□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□, □□□□□□□□□□ □□□□□, □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□□ □□□□□□□ □□, □□□□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□

□□□□ □□□□, □□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□, □□□□ □□□□□□□□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□, □□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□□□□□ □□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□, □□ □□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□ □□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□-□□□□□□ □□□□□□□□□□ □□□, □□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□□ □□□ □□□□□ □□□□□ □□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□□, □□ □□□ □□ □□ □□□□□ □□□□ - □□□□ □□ □□□ □□□□□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□ - □□ □□□□ □□□□□

[illegible]

[illegible]

□□□□ - □□□□□, □□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□

□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□, □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□□, □□□□ □□ □□, □□□□ "□□□□□ □□ □□□□ □□□" □□□ □□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□-□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□, □□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□, □□□□ □□□□□□□ □□ □□□-□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□

□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□□□□, □□□□□□□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□, □□□□□□, □□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□ □□□ □□□ □□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□ □□, □□ □□□□ □□□□□□□□□□ □□□□□□□□□□, □□□□□□ □□□□□□ □□ □□, □□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□□□□□□ □□□

□□□□ □□□□□□□, □□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□, □□□□□□ □□□□□□, □□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□, □□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□

□□□□ □□□, □□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□-□□□□ □□□□□□ □□□ □□□□□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□ □□□ □□□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□□

[illegible]

□□□□□□□ - □□□□ □□ □□□

□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□□ □□ □□ □□, □□□□ □□□□□ "□□□□□□□ □□ □□□" □□□ □□□□ □□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□ □□□□□□□□□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□, □□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□, □□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□□□□□□, □□□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□ □□ □□□□ □□□□□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□ □□□□□□□□ □□□

□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□, □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□□□□□□□ □□□□□□□□ □□, □□□□□□□ □□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□□□□□ □□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□□□□□□□ □□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□□

□□□□□□□ □□□□□□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□, □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□□□□□ □□□ □□□□□□□ □□□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□ □□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□□□ □□□ □□□□□□□□□□□, □□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□□□□ □□ □□ □□□□□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□

□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□ □□□□□ □□□, □□□ □□□□□□ □□ □□ □□ □□□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□-□□□ □□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□, □□□□ □□□□□□□□ □□□-□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□ □□

"xxxxxxxx xxx, xx xxxxx xxx, xxx xxxx xxx xxx xxxxx xxx xx, xx xxxx xx xxxx xx, xx xxxx xx xxxx xx xxxx xxxx xxx xxxx xxxx xx xx xxxxxx xxx xxxxx xx xxxxx xx xxxx xxx xxxxx xx xxxxx xx xxxxx"

xxxxxxxx xxx xx xxxx xxxxx xxx xxxxx xx xxx xxx xxx xxxx xxxx, "xxx, xxxxx! xx xx xxx xxxxx xx xxxxxx xxxx xxx xxxxx xxxxxxxx xxx, xx xxxxx xx xxxxxxxxxx xx xxxx xx xxx xxxx xx; xx xx xxxxxxxx, xx xxxxxxxx xx xx xxx xxxxx xxxx xx xxx xxx xxxxx xxx, xxx xxxx xxx xxxxx xxxx xxxxx xx xxxxxxx xxx xx xxx xxxxxx xxx xxx"

xxxxx xxxx xxx xx xxxxxxxx xxxx xxx xxxxxxx xxxxx xxxx, "xxxx xxxx xxxx xx xx xx xx xxxx xxxx xx xxxxxxxxxx xx xxxxx xxxx xxx xxxx xx?"

xx xxxx xxxxx xxxx xxxx xx xxxxx xxxx xxxx xxx xxx xxxx xxx, "xxx xx xxx xx xx, xxxxx xxxxxxx, xxxxxx xx xxxxx xx xxxxxx xxxxxxx xx xxx xx xxxxx xxxxx xxx xx xx xxxxxxx xxxxxx xx xx xxx xx xxxxx xx xxx xxxx xxx xxxxx xx, xxxxxx xxxx xxxx xxxxxxxxxx xx xxxxxxxxx xxxx xxxxxx xxxx xxx xxx xxxxxxxx xxxxxxxx xx xxxx xxx xxx xxx xx xxxx xxxxxxx xx xxxxxxxx xxxx xx xx xxxxx xxx xxx xxxx"

xxxxx xxxx xxxxx xx xxxxx xxxx, xxxx xxxxxxxxx xxx xxxxx xxxxx xx xxx xxxxxxxx xxxx "xx, xx xx xx xxx xxx xx xxxxx xxxxxxxxxx xx xx, xxxxx xxxx xxx xxxxxxxx xxxx xx xxxxxxx xxxxx xxxx xx?" xxxxx xxxxxxxxxx xxxxxx xxx xxxxx

"xxxxxxx xxx," xxxxxxxx xxx xxxxxxx "xxxxx xx xxxxxxx xxxxxxxx xx xxxx xx, xxxxx xxx xxxx xx xxxx xx xxxxx xx xxxxxxx xxxxxx xxxx xxxxx xxxxx xxxx xxxxxxxxxx xxx xxxx xxxxxx, xxx xx xxx xx, xxxx xx xxxxxxx xxxx xxx xx xx xxxxxxx xxxx xx xxxxx"

xxxxx xxxxxx xxx xxx xx xxxx xxx, xxxxxx xxxxx, xxx xx xxxxxxx xxxxxxxxx xxxx xxxxxx xx xxxxx xxxx xxxxxxxx xxx xx xxx xxxxxx xxxx xxx, xxx xxxx xxxxxxx xx xxx xxxxxxxx xxxxx xxx xxxx xxxx xx xxx, xxxxxxxxx xxxx xx xx xxxxxx xxx xxxxx xx xxxxxxxx xx xx xxxxx xx xxxxx xxx xxx xxx

xxxxxxx xxx xxxx xxxxxx xx xxxxx, xxxx xxx xx xxxxxxx xx xxxxxxxxx xxxxxxxx xx xxxxx xxxx xx xxxx xx xxxxx xxxxx xxxxxx xxx xx xxxxx

□□□□□ - □□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□

□□□□ □□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□, □□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□, □□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□□□, □□□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□□□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□□□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□, □□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□□ □□□ □□□□□, □□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□ □□□□□□□□□□□□□ □□ □□□, □□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□

□□□□□□□ □□□□□□□□ □□□-□□□ □□ □□□ □□□ □□□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□□, □□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□□□□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□□ □□, □□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□, □□□□□ □□□□□□□ □□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□□□□, □□□□□□□ □□□□□, □□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□, □□□□□□□□□ □□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□

□□□□□□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□, □□ □□□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□□□□ □□□ □□□□□□□□ □□□ □□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□ □□□ □□□□□□□ □□□□□, □□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□ □□□ □□□ □□, □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□ □□□□, □□□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□

□□□□□□ **VI**

□□□□□□ □□□□□□ - □□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□

□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□, □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□ □□□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□ □□ □□□ □□□□-□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□, □□□□ □□ □□□ □□□□□□□, □□□-□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□, □□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□, □□ □□□□□□□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□

□□□□□□ □□□□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□□□□ □□□ □□□□□ □□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□□ □□, □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□ □□□□ □□□ □□□ □□□□□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□, □□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□

□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□□□ □□, □□□□ □□□□□□□□, □□□□□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□, □□□ □□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□, □□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□, □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□□, □□□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□

[illegible]

□□□□□ □□ □□□□□□ - □□ □□□□□□ □□ □□□□□□

□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□-□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□, □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ - □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□, □□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□□□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□ □□□ □□□□, □□□□ □□ □□□ □□□□□□□, □□□□□□□ □□□□□ □□ □□□-□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□, □□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□, □□ □□□□□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□

□□□□□□□ □□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□, □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□-□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□ (□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□) □□□□ □□□□ □□ □□□□-□□□□ □□□ □□□ □□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□ □□□□□□ □□□ □□□ □□□□

□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□ □□, □□□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□□□, □□□□ □□□□□□ □□ □□□-□□□ □□□□ □□□□□□ □□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□ □□□□□ □□□ □□□□□, □□□□□□□□□ □□□□□□-□-□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□ □□ □□□□

□□ □□□, □□ □□□ □□□ □□ □□□-□□□ □□□ □□□□□□ □□□ □□□ □□□ □□, □□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□ □□ □□□□□□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□

□□□□□□ □□

□□□□□ - □□□□□ □□□ □□ □□□□□□ □□□□□

□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□, □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□□□□□□ □□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□ □□, □□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□ □□□□□□ □□□ □□□□□□, □□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□, □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□, □□□□□□□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□, □□ □□□□□□□□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□

□□□□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□, □□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□□ □□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□□□ □□□ □□□ □□□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□□ □□□□□, □□□□□□□□□□□ □□□□□□□ □□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□

□□□□□□ □□ □□□□□□□□□, □□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□□□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□□□□ □□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□ □□□□-□□□□□□□ □□□ □□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□, □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□ □□ □□ □□□□□□□ □□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□□ □□ □□□

□□□□□□ **9**

□□□□□□□□ - □□□□□ □□□ □□ □□□□□□

□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□, □□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□ □□□□□ □□□ □□□□□□, □□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□ – □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□□, □□□-□□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□□□□□□ □□□□□□□□□, □□□□ □□□□□□ □□□□□□, □□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□, □□ □□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□

□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□□□□□□□□ □□, □□□□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□, □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□, □□□□ □□ □□□□□□□ □□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□□ □□□ □□□□□

□□ □□□, □□□□□ □□ □□□-□□□ □□□ □□□□□□□ □□□ □□□□□ □□□, □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□□ □□□□□□□□□□□, □□□ □□□□ □□ □□□□-□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□ □□ □□ □□□□□□□ □□□-□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□

□□□□□□ - □□□, □□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□□□□

□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□, □□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□ □□ □□, □□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□□□□□, □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□□□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□ □□□□□□□□ □□□ □□□□□□, □□□□ □□□□□□ □□□-□□□ □□□ □□□□□□□, □□□-□□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□□ □□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□, □□□□ □□□□□ □□□□□□□□□□, □□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□, □□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□□□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□, □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□-□□□ □□□ □□□□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□□□□, □□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□-□□□ □□□ □□□□□□□ □□□ □□□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□□ □□□□□□ □□□ □□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□, □□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□ □□□ □□□□ □□□□□ □□□□

□□ □□□□□, □□ □□□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□□ □□□ □□□ □□□ □□, □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□ □□□□□□□□□□, □□□ □□□□ □□ □□□□-□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□□□ □□□-□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□

"[illegible] [illegible] [illegible] [

□□□□□□ - □□□□ □□□□□□
□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□

□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□, □□□ □□□□ □□□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□ □□□□□ □□□, □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□, □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□□ □□, □□ □□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□, □□□□□□□□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□-□□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□

□□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□, □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□, □□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□ □□ □□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□

□□ □□□, □□□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□ □□□□□ □□□, □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□ □□□□□□□□□□□, □□□ □□□□ □□ □□□□-□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□ □□ □□□□□□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□□□ □□□-□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□

□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□, □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□ □□□□ □□, □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□ □□□ □□ □□□

[illegible]

*[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] "[illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

□□□□□□ □□□□□ □□ □□□

□□□□-□□□□ □□□ □□□□□□□ □□□ □□□□□ □□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□ □□□□□ □□, □□□ □□ □□□□□□ □□□ □□ □□□□□□□□ □□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□, □□ □□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□, □□□□□ □□ □□□□□□□ □□□ □□□□□ □□, □□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□

□□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□, □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□, □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□

□□ □□□, □□□□□□ □□ □□ □□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□, □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□, □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□ □□□ □□, □□ □□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□ □□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□; □□ □□□□-□□□ □□ □□□□□□ □□ □□ □□□□

□□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□□□, □□□□□□□ □□□ □□□□□□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□□□□□□, □□□□□ □□□□, □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□□□ □□□□

□□□□□ □□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□, "□□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□, □□□□ □□ □□ □□□□□" □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□□□□ □□□□ □□□□

[illegible]

[illegible]

*[illegible] [illegible] [illegible] [

अध्याय 8

घर से बाहर निकलना, तरक्की करना

अगली सुबह, जब लियाना अपनी चाय को हिला रही थी और रसोई की खिड़की से छनकर आती सुबह की रोशनी को देख रही थी, तो उसका मन भटकने लगा। अरोरा की आत्म-खोज की यात्रा ने उसके भीतर कुछ हलचल पैदा कर दी थी, जिससे उसे अपने जीवन और अनुभवों का पुनर्मूल्यांकन करने की प्रेरणा मिली। अपने अतीत पर विचार करते हुए, लियाना को वे बातें नज़र आने लगीं जिन्हें उसने पहले अनदेखा कर दिया था। उसके विचार उसके बचपन और उन सूक्ष्म पूर्वाग्रहों की ओर लौट गए जिन्होंने उसके पालन-पोषण को आकार दिया था।
लियाना के छोटे भाई राज को हमेशा प्यार से "राजा बेटा" वाला विशेष व्यवहार मिलता था। उस समय लियाना ने इस मुहावरे के महत्व पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया था। वह अपने भाई से बहुत प्यार करती थी और उसे लाड़-प्यार पाते देखकर खुश होती थी। लेकिन अब, जब उसने सारी बातों को जोड़कर देखा, तो उसे एहसास हुआ कि ये छोटे-छोटे, दिखने में हानिरहित पल उनके पारिवारिक संबंधों को किस तरह से सूक्ष्म रूप से प्रभावित करते थे।
बचपन से राज को हमेशा केक का सबसे बड़ा टुकड़ा, कार में सबसे अच्छी सीट और सबसे नए खिलौने मिलते थे। लियाना को एक जन्मदिन याद है जब उसने साइकिल मांगी थी। उसके माता-पिता ने उसे साइकिल देने का वादा तो किया था, लेकिन कभी खरीद कर नहीं लाए। इसके बजाय, जब राज दस साल का हुआ, तो उसे बिना मांगे ही एक बिल्कुल नई साइकिल मिल गई। लियाना ने निराशा और हताशा के मिले-जुले भाव से देखा कि उसका भाई उस साइकिल पर आंगन में चक्कर लगा रहा था, जो उसकी अपनी होनी चाहिए थी।
स्कूल में लियाना पढ़ाई में बहुत आगे थी, हमेशा टॉप ग्रेड लाती थी और पुरस्कार जीतती थी। उसके माता-पिता को उस पर गर्व था, लेकिन राज की

उपलब्धियों पर, चाहे वे कितनी भी छोटी क्यों न हों, जो उत्साह वे दिखाते थे, उसकी तुलना में लियाना की प्रशंसा अक्सर कम ही होती थी। जब राज फुटबॉल मैच में गोल करता था, तो उसके पिता किनारे से ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाकर हौसला बढ़ाते थे, उनकी आवाज़ उत्साह से भर जाती थी। लियाना के सभी विषयों में 'ए' ग्रेड और शैक्षणिक पुरस्कारों को सराहा तो गया, लेकिन उन्हें कभी भी वैसा उत्साहपूर्ण जश्न नहीं मिला।
घर के कामों का भी मामला था। लियाना से उम्मीद की जाती थी कि वह अपनी माँ को खाना बनाने, सफाई करने और राज की देखभाल करने में मदद करे। उसे बचपन से ही सिखाया गया था कि बड़ी बहन और लड़की होने के नाते ये उसकी ज़िम्मेदारियाँ हैं। दूसरी ओर, राज को अक्सर कामों से छूट मिल जाती थी। "वह तो बस एक लड़का है," उनकी माँ प्यार से उसके बाल सहलाते हुए कहतीं। "उसे अपना बचपन जीने दो।" रसोई में सब कुछ राज की पसंद के अनुसार ही तैयार करना पड़ता था। इससे लियाना के ऊपर कामों की एक लंबी सूची बन गई जो उसकी किशोरावस्था तक चलती रही।
पारिवारिक सैर-सपाटे और छुट्टियों के दौरान यह असमानता और भी स्पष्ट हो गई। लियाना को बारह साल की उम्र में एडवेंचर पार्क की एक यात्रा याद है। वह रोमांचकारी राइड्स का बेसब्री से इंतज़ार कर रही थी, लेकिन राज, जो उस समय सात साल का था, उनमें से अधिकांश से डरता था। उनके माता-पिता ने उसकी खातिर कम रोमांचक राइड्स का विकल्प चुना, और लियाना ने पूरा दिन टीकप राइड्स और हिंडोलों पर बिताया, अपने भाई के डर के कारण उसका उत्साह फीका पड़ गया। जैसे ही ये यादें ताज़ा हुईं, लियाना के मन में कई तरह की भावनाएँ उमड़ आईं। उसे थोड़ी नाराज़गी भी हुई, लेकिन साथ ही उसे स्पष्टता का भी एहसास हुआ। उसे समझ आ गया कि उसके माता-पिता का इरादा न तो उसकी अहमियत कम करने का था और न ही जानबूझकर राज को प्राथमिकता देने का। वे बस सामाजिक मानदंडों और अपने अंतर्निहित पूर्वाग्रहों का पालन कर रहे थे, यह मानते हुए कि वे अपने बेटे और बेटी के भले के लिए वही कर रहे हैं जो सही है।
अगले कुछ दिनों में, लियाना अपने अतीत पर विचार करती रही, उसे समझने के इस नए नजरिए से देखती रही। उसे याद आया कि वयस्क होने पर भी वही सिलसिला जारी रहा। जब उसे पहली नौकरी मिली, तो उसके माता-पिता ने गर्व के साथ-साथ चिंता भी जताई। उसकी माँ ने सलाह दी, "ज्यादा मेहनत मत करो। तुम्हें जल्द ही परिवार शुरू करने पर ध्यान देना होगा।" जब राज को पहली नौकरी मिली, तो उसे

ऐसी सलाह नहीं दी गई। इसके बजाय, उन्होंने उसे अपने करियर की महत्वाकांक्षाओं को पूरी लगन से आगे बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित किया। लियाना सोच रही थी कि कैसे इन सूक्ष्म पूर्वाग्रहों ने उसके आत्मसम्मान और जीवन के निर्णयों को प्रभावित किया था। वह हमेशा एक आदर्श बेटी बनने का प्रयास करती रही, अपनी उपलब्धियों से मान्यता पाने की कोशिश करती रही और दूसरों की अपेक्षाओं पर खरी उतरती रही। लेकिन अब, अरोरा की कहानी से प्रेरित होकर, उसे एहसास हुआ कि उसका मूल्य इन बाहरी मान्यता से जुड़ा नहीं है। उसे पूर्ण महसूस करने के लिए सामाजिक मानदंडों का पालन करने या किसी और की अपेक्षाओं को पूरा करने की आवश्यकता नहीं थी।
जैसे ही लियाना ने अपने दिन की तैयारी शुरू की, उसे सशक्तिकरण का एक नया अहसास हुआ। उसने अपने माता-पिता के साथ अपनी समझ के बारे में खुलकर बातचीत करने का फैसला किया, इस उम्मीद में कि इससे उनके परिवार में अधिक समानता का माहौल बनेगा। उसने यह भी तय किया कि वह किसी के सामने अपने फैसलों को सही ठहराने की ज़रूरत महसूस किए बिना, अपने सपनों और आकांक्षाओं पर ध्यान केंद्रित करेगी।
एक शाम, जब सूर्यास्त की सुनहरी रोशनी उनके बैठक कक्ष की दीवारों पर पड़ रही थी, लियाना कार्यालय से एक नए दृढ़ संकल्प के साथ लौटी। उसने अपने माता-पिता से इस विषय पर एक बार फिर बात करने का फैसला किया था, इस उम्मीद में कि इस बार वह अरोरा की यात्रा से प्राप्त ज्ञान के आधार पर उन्हें अपना दृष्टिकोण समझा पाएगी।
अपने माता-पिता के सामने बैठी लियाना ने गहरी सांस ली और आगे होने वाली बातचीत के लिए खुद को तैयार किया। उसने हिचकिचाते हुए बोलना शुरू किया, उसकी आवाज स्थिर थी लेकिन उसमें थोड़ी घबराहट झलक रही थी।
“माँ, पिताजी,” लियाना ने कहना शुरू किया, “आज मैं एक बात सोच रही थी। मैं उन सभी सफल लोगों के बारे में सोच रही थी जिन्होंने शादी और परिवार के पारंपरिक मार्ग का अनुसरण किए बिना ही महानता हासिल की है।”
उसके माता-पिता ने एक दूसरे की ओर देखा, उनकी आँखों में जिज्ञासा झलक रही थी। लियाना ने इस अवसर का लाभ उठाते हुए अपनी बात को और स्पष्ट किया और उन प्रसिद्ध हस्तियों के उदाहरण गिनाए जिन्होंने अविवाहित रहते हुए भी दुनिया पर अमिट छाप छोड़ी थी।

“उदाहरण के लिए, एपीजे अब्दुल कलाम को ही ले लीजिए,” उन्होंने अपनी आवाज़ में जोश भरते हुए कहा। “उन्होंने अपना जीवन विज्ञान और शिक्षा को समर्पित कर दिया और भारतीय इतिहास के सबसे सम्मानित व्यक्तियों में से एक बन गए। फिर लता मंगेशकर हैं, जिनकी आवाज़ आज भी दुनिया भर के लाखों लोगों को मंत्रमुग्ध करती है। यहां तक कि रतन टाटा ने भी, अपनी अद्भुत व्यावसायिक सूझबूझ के बावजूद, विवाह से पहले अपने करियर को प्राथमिकता दी।”
उसके माता-पिता ध्यान से सुन रहे थे, लेकिन उनके चेहरों पर संदेह का भाव झलक रहा था। लियाना अपने दृढ़ विश्वास के साथ बोलती रही।
“और सुष्मिता सेन के बारे में क्या?” उन्होंने हैरानी से कहा। “उन्होंने दो प्यारी बेटियों को गोद लेकर और अटूट दृढ़ संकल्प के साथ अपने करियर को आगे बढ़ाकर रूढ़ियों और सामाजिक मानदंडों को तोड़ा। ये शख्सियतें साबित करती हैं कि विवाह ही पूर्णता और सफलता का एकमात्र मार्ग नहीं है।”
उसके पिता ने अखबार एक तरफ रखते हुए आह भरी। "लेकिन, लियाना, तुम उनके जैसी नहीं हो। तुम हमारी बेटी हो, और हम तुम्हारा भला चाहते हैं। शादी उसी का एक हिस्सा है।"
उसकी माँ ने धीरे से सिर हिलाते हुए कहा, “लियाना, बात इतनी सरल नहीं है। विवाह एक पवित्र संस्था है, हमारी संस्कृति और परंपरा का एक महत्वपूर्ण स्तंभ है। इसे हल्के में नहीं लेना चाहिए।”
लियाना को थोड़ी झुंझलाहट हुई, लेकिन उसने खुद को शांत रखा। "मैं समझती हूँ, माँ," उसने धीरे से जवाब दिया। "लेकिन अगर शादी मेरे लिए सही रास्ता न हो तो क्या होगा? अगर मैं अपने करियर, अपने शौक और अपने व्यक्तिगत विकास पर ध्यान देना चाहूँ तो क्या होगा?"
उसके पिता आगे झुके, उनके चेहरे पर गंभीरता थी। “लियाना, शादी ही एकमात्र रास्ता नहीं हो सकती, लेकिन यह एक महत्वपूर्ण रास्ता है। यह स्थिरता, साथ और संतुष्टि का एहसास दिलाती है जो तुम्हें कहीं और नहीं मिल सकता।” लियाना ने सोच-समझकर सिर हिलाया और उनकी बातों को आत्मसात किया। उसने दोबारा बोलने से पहले कुछ पल रुककर अपने विचारों को इकट्ठा किया और अरोरा की यात्रा से सीखे सबकों से प्रेरणा ली।
“माँ, पिताजी, आपकी चिंता के लिए धन्यवाद,” उसने स्थिर स्वर में कहना शुरू किया। “लेकिन मुझे हाल ही में एक बात समझ में आई है। मैंने अपना बहुत सारा जीवन समाज की अपेक्षाओं पर खरा उतरने, दूसरों द्वारा निर्धारित मानकों को

पूरा करने की कोशिश में बिताया है। लेकिन ऐसा करने में, मैंने अपने सपनों और इच्छाओं को नज़रअंदाज़ कर दिया है।”
उसके माता-पिता चुपचाप सुनते रहे, उनके चेहरे पर समझदारी के भाव उभर आए। “ऑरोरा की कहानी ने मुझे सिखाया कि सच्ची संतुष्टि भीतर से आती है,” लियाना ने स्थिर निगाहों से देखते हुए कहा। “मुझे पूर्ण महसूस करने के लिए सामाजिक मानदंडों का पालन करने या दूसरों की अपेक्षाओं को पूरा करने की आवश्यकता नहीं है। मैं अपनी शर्तों पर महानता हासिल करने में सक्षम हूं, चाहे इसमें शादी शामिल हो या न हो।”
जैसे ही लियाना की भावनाएं चरम पर पहुंचीं, वह खुद को और रोक नहीं पाई। उसे जवाब चाहिए थे, और अभी चाहिए थे।
“माँ, मुझे बताओ, क्या तुम राज के लिए भी यही कहोगी?” लियाना की आवाज दबी हुई नाराजगी से कांप रही थी।
उसकी माँ अचंभित दिखीं। "तुम्हारा मतलब क्या है, वही बात कहना?"
“मेरा मतलब है, क्या तुम उस पर भी शादी के लिए वैसे ही दबाव डालोगी जैसे मुझ पर डाल रही हो?” लियाना की आवाज़ तीखी थी, जिससे कमरे का तनाव कम हो गया। “या फिर तुम उसके साथ हमेशा की तरह अलग व्यवहार करोगी?”
उसकी माँ की आँखें अविश्वास से चौड़ी हो गईं। "हमने कभी भी तुम दोनों के बीच कोई भेदभाव नहीं किया है," उसने विरोध किया।
लियाना ने कड़वी हंसी हंसते हुए कहा, “यह सच नहीं है, माँ, और आप यह जानती हैं। आपने हमेशा राज और उसके फैसलों को प्राथमिकता दी है। आपने उसे अपने छोटे राजकुमार, अपने 'राजा बेटे' की तरह माना है। क्या आपने कभी मेरे बारे में ऐसा कुछ कहा है? क्या आपने कभी मेरे साथ वैसा ही व्यवहार किया है?” उसकी माँ के चेहरे पर नरमी आ गई, लेकिन उनकी आवाज़ में अभी भी थोड़ी सी बचाव की भावना थी। “लियाना, हमने हमेशा तुम दोनों को बराबर प्यार किया है। प्यार जताने के हमारे तरीके अलग-अलग हो सकते हैं, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि हम तुममें से किसी एक को दूसरे से ज़्यादा प्यार करते हैं।”
लियाना ने अविश्वास से अपना सिर हिलाया। “माँ, यह प्यार की बात नहीं है। यह निष्पक्षता की बात है। यह अपने बच्चों के साथ समान सम्मान और ध्यान से पेश आने की बात है। राज को शायद यह बात समझ में न आए, लेकिन मुझे आती है। और मैं अब इस बारे में चुप नहीं रह सकती।”

उसके पिता, जो चुपचाप सुन रहे थे, आखिरकार बोले, “तुम कैसी बहन हो, लियाना? अपने ही भाई से ईर्ष्या करती हो? क्या तुम्हें खुद पर शर्म नहीं आती?” अपने पिता के आरोप पर लियाना को तीव्र क्रोध आया। “नहीं, मुझे शर्म नहीं है। क्योंकि इसका ईर्ष्या से कोई लेना-देना नहीं है। यह सही के लिए खड़े होने की बात है। यह वर्षों से चले आ रहे पक्षपातपूर्ण व्यवहार का पर्दाफाश करने की बात है।”
उसके माता-पिता ने एक-दूसरे को देखा। लियाना उनकी आँखों में अंतर्विरोध देख सकती थी, अपने दोनों बच्चों के प्रति प्रेम और अपने कार्यों की कठोर वास्तविकता के बीच सामंजस्य बिठाने का संघर्ष।
लेकिन लियाना अभी रुकी नहीं थी। उसे अभी और भी बहुत कुछ कहना था, और भी कई सच्चाइयों को उजागर करना था। और वह तब तक नहीं रुकने वाली थी जब तक उसके माता-पिता उसकी बात को ध्यान से, पूरी तरह से सुन न लें।
जब लियाना ने अपना अनुरोध रखा तो कमरे में तनाव स्पष्ट रूप से महसूस हो रहा था। वह जानती थी कि यह आसान नहीं होगा, लेकिन उसे कोशिश करनी ही थी।
"माँ, पिताजी, मैं... मुझे लगता है कि अगर मैं घर छोड़कर अकेले रहने लगूँ तो यह सबसे अच्छा होगा," लियाना ने स्थिर लेकिन थोड़ी घबराहट भरी आवाज़ में कहना शुरू किया।
उसकी माँ की आँखें हैरानी से चौड़ी हो गईं। "क्या? तुम ऐसा क्यों करना चाहोगी, लियाना? हम तुम्हारा परिवार हैं। हम तुमसे प्यार करते हैं और तुम्हारे भले के अलावा और कुछ नहीं चाहते।"
लियाना ने गहरी सांस ली और अपने विचारों को समेटते हुए बोली, "मुझे पता है माँ, आप मुझसे प्यार करती हैं। और मैं भी आपसे प्यार करती हूँ। लेकिन सच तो यह है कि हमारे बीच लगातार होने वाले झगड़े और कलह मुझे घुटन महसूस करा रहे हैं। इस घर की नकारात्मकता मेरे मानसिक स्वास्थ्य और मेरे काम पर बुरा असर डाल रही है। मुझे अपने मन को शांत करने और कुछ स्पष्टता पाने के लिए कुछ समय चाहिए।"
उसके पिता ने चिंता भरी आवाज़ में कहा, "लेकिन लियाना, हम तुम्हारे दुश्मन नहीं हैं। हम तो बस वही कर रहे हैं जो ज़िम्मेदार माता-पिता करते हैं। हम चाहते हैं कि तुम खुश और सफल रहो।"
"मुझे पता है, पिताजी, और मैं इसकी सराहना करती हूँ। लेकिन यहाँ रहने से मुझे वह खुशी और सफलता नहीं मिल रही है। मुझे जीवन के विभिन्न पहलुओं को

समझने के लिए कुछ समय चाहिए, और मैं ऐसा तभी कर सकती हूँ जब मैं घर से बाहर चली जाऊँ," लियाना ने भावुक होकर कहा।
ऐसा लगा मानो अनंत काल तक सन्नाटा छाया रहा हो, फिर उसके माता-पिता ने एक-दूसरे की ओर देखा। लियाना उनकी आँखों में अंतर्विरोध देख सकती थी, उसके प्रति उनके प्रेम और उसकी रक्षा करने की उनकी इच्छा के बीच का संघर्ष। अंत में, उसकी माँ ने कोमल लेकिन दृढ़ स्वर में कहा, "लियाना, हम समझते हैं कि तुम्हें एकांत की ज़रूरत है। लेकिन हम तुम्हें बिना कुछ नियमों और शर्तों के यूँ ही नहीं जाने दे सकते। हम यह सुनिश्चित करना चाहते हैं कि तुम सुरक्षित रहो और तुम्हारी अच्छी तरह देखभाल हो।"
लियाना ने सहमति में सिर हिलाया, इस बात के लिए आभारी थी कि वे समझौता करने को तैयार थे। कई चर्चाओं, वादों, भावुक बातों और आंसुओं के बाद, उसके माता- पिता आखिरकार उसे अकेले रहने देने के लिए सहमत हो गए, हालांकि कई नियमों और शर्तों के साथ।
जैसे ही लियाना ने अपना सामान पैक किया और घर छोड़ने की तैयारी की, उसके मन में कई तरह की भावनाएँ उमड़ रही थीं – बचपन का घर छोड़ने का दुख, लेकिन साथ ही नए जीवन की शुरुआत के लिए आज़ादी और उत्साह का एहसास भी। वह जानती थी कि यह आसान नहीं होगा, लेकिन वह इस चुनौती का सामना करने के लिए तैयार थी, क्योंकि उसे पता था कि यह निर्णय उसकी अपनी खुशी और संतुष्टि पाने की दिशा में पहला कदम है।

अध्याय 9

घर पर अकेले, लेकिन कोई पार्टी नहीं।

लियाना अपने नए अपार्टमेंट के बीचोंबीच खड़ी थी, और उस जगह को निहार रही थी जो अब उसकी थी। यह एक साधारण सा फ्लैट था, जो उसके दफ्तर से थोड़ी ही दूरी पर था। दीवारों पर क्रीम रंग का हल्का सा शेड चढ़ा हुआ था, और खिड़कियों से आती धूप से पूरा कमरा गर्मजोशी और स्वागत से भरा हुआ लग रहा था। उसे यह एहसास होते ही रोमांच का अनुभव हुआ कि आखिरकार वह अपने दम पर रह रही है। अपने माता-पिता से किए वादे के अनुसार, वह हर शाम उन्हें फोन करके अपने दिन भर की बातें बताती थी। “हाय, मम्मी। हाय, पापा। आज काम अच्छा रहा। मैंने एक बड़ा प्रोजेक्ट पूरा कर लिया, और मेरे बॉस बहुत खुश लग रहे थे,” वह कहती और उनकी आवाज़ में राहत महसूस करती।
उसकी मां अक्सर चिंता जताते हुए कहती थी, "लियाना, क्या तुम ठीक से खा रही हो? तुम्हें अपना ख्याल रखना चाहिए।"
“हाँ, माँ। मैंने रात के खाने में पास्ता बनाया था। बहुत स्वादिष्ट था!” लियाना मुस्कुराते हुए अपनी माँ को आश्वस्त करती, यह कल्पना करते हुए कि उसकी माँ का चिंतित चेहरा नरम पड़ जाएगा।
अकेले रहने से लियाना को एक नई तरह की आज़ादी का एहसास हुआ। अब वह अपने माता-पिता के लगातार दबाव और रोज़ाना होने वाले झगड़ों से मुक्त हो गई थी। जीवन में पहली बार उसे लगा कि वह चैन की सांस ले सकती है।
उसकी दिनचर्या बोझ की बजाय आनंद का स्रोत बन गई थी। वह सुबह जल्दी उठती, सादा नाश्ता बनाती और शहर को जागते हुए देखते हुए चाय की चुस्की लेती। काम पर एक सफल दिन बिताने के बाद, वह अपने आरामदायक अपार्टमेंट में लौटती, जहाँ

वह गर्व के साथ अपने घरेलू कामों को निपटाती थी। उसे सफाई करना, खाना बनाना और एक ऐसी जगह बनाना पसंद था जो सचमुच उसकी अपनी लगे।
शामें ऐसी गतिविधियों से भरी होती थीं जिनसे उसे शांति और खुशी मिलती थी। कभी वह दोस्तों के साथ समय बिताती, नए कैफे और रेस्तरां खोजती या बस आस-पड़ोस में टहलती। कभी वह अपने शौकों में मग्न हो जाती—चित्रकला करना, पढ़ना या गिटार बजाना। इन पलों में उसे सुकून मिलता था, यह एहसास करते हुए कि माता-पिता की अपेक्षाओं को पूरा करने की निरंतर कोशिश में उसने कितना कुछ खो दिया था।
लियाना अपनी छोटी सी बालकनी में बैठी सुबह की चाय की चुस्कियाँ ले रही थी और नीचे शहर को देख रही थी। अकेले रहने का नयापन अब फीका पड़ने लगा था। जिस आज़ादी का उसने कभी भरपूर आनंद लिया था, अब वह उसे एकांत की तरह लगने लगी थी।
यह धीरे-धीरे शुरू हुआ। अपने घर को सजाने का जीवंत आनंद और घर-गृहस्थी संभालने की संतुष्टि फीकी पड़ने लगी। जो शामें कभी आजादी का एहसास कराती थीं, अब लंबी, खामोश घंटों में तब्दील होने लगीं। अपने-अपने जीवन में व्यस्त दोस्त उनसे मिलने कम आने लगे। जिस एकांत ने पहले शांति दी थी, वह अब बोझिल लगने लगा।
एक शाम, जब लियाना खाना बना रही थी, अचानक उसे उदासी की एक लहर महसूस हुई।
वह अपनी रसोई में खड़ी होकर काउंटर पर रखी सामग्री को निःसंकोच देखती रही।
अकेले के लिए खाना बनाने का ख्याल अचानक उसे बहुत मुश्किल लगने लगा।
उसने अपनी माँ को फोन किया, उम्मीद थी कि शायद उन्हें कुछ दिलासा मिल जाए।
"हाय माँ," उसने अपनी आवाज़ को स्थिर रखने की कोशिश करते हुए कहा।
“हेलो, लियाना! कैसी हो?” उसकी माँ की आवाज़ हंसमुख और प्रसन्न थी।
“मैं ठीक हूँ,” लियाना ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया। “बस... थोड़ी थकी हुई हूँ, शायद।”
“ध्यान रखना कि तुम अच्छे से खाओ और पर्याप्त आराम करो,” उसकी माँ ने सलाह दी। “तुम्हें पता है कि अगर तुम्हें अकेलापन महसूस हो तो तुम कभी भी घर आ सकती हो।”
“मुझे पता है, माँ। धन्यवाद,” लियाना ने फोन रखते हुए कहा और उसके गले में एक गांठ सी महसूस हुई। वह अपने माता-पिता को यह बताना नहीं चाहती थी कि वह

मुश्किल में है। उसने अपनी आज़ादी के लिए बहुत संघर्ष किया था, और अब उसे लग रहा था कि वह हार रही है।
दिन हफ़्तों में बदल गए, और लियाना की अकेलेपन की भावनाएँ और गहरी होती गईं। सुबह बिस्तर से उठना उसके लिए और भी मुश्किल हो गया। काम, जो कभी उसके लिए गर्व और उद्देश्य का स्रोत था, अब एक बोझ लगने लगा। वह सामाजिक मेलजोल से बचने लगी, अपने विचारों में खो जाना पसंद करती थी, भले ही वे विचार अक्सर उसे निराशा की ओर ले जाते थे।
लियाना को शारीरिक लक्षण भी महसूस होने लगे। उसकी नींद अनियमित हो गई; कुछ रातें वह घंटों जागती रहती, अपने विचारों को शांत नहीं कर पाती, जबकि दूसरी रातें वह बारह घंटे लगातार सोती और फिर भी थका हुआ महसूस करती। उसकी भूख कम हो गई और वजन घटने लगा, उसके कपड़े दिन-ब-दिन ढीले होते जा रहे थे। अपार्टमेंट की सफाई या खाना बनाना जैसे साधारण काम भी उसे मुश्किल लगने लगे।
एक रात, जब वह बिस्तर पर लेटी छत को घूर रही थी, तो उसे अपने सीने पर एक भारी बोझ महसूस हुआ। सन्नाटा इतना गहरा था कि कान सुन्न हो रहे थे। उसने अपना फोन उठाया और अपने कॉन्टैक्ट्स में देखा, लेकिन किसी को भी कॉल करने की हिम्मत नहीं हुई। वह अपने दोस्तों या परिवार को अपनी समस्याओं से परेशान नहीं करना चाहती थी।
अगले दिन काम पर, उसकी सहकर्मी माया ने देखा कि कुछ गड़बड़ है। "हे लियाना, क्या तुम ठीक हो? तुम आजकल बहुत चुप रहती हो।"
लियाना ने जबरदस्ती मुस्कुराते हुए कहा, "मैं ठीक हूँ, बस थोड़ी थकी हुई हूँ। आजकल बहुत काम है।"
“तुम्हें पता है ना कि तुम मुझसे बात कर सकती हो?” माया ने चिंता भरी आँखों से कहा। “अगर तुम्हें कभी ज़रूरत पड़े तो।”
“धन्यवाद, माया। मैं इसकी आभारी हूँ,” लियाना ने जवाब दिया, हालाँकि उसे अपराधबोध भी हो रहा था। वह यह स्वीकार नहीं करना चाहती थी कि वह कितनी मुश्किलों का सामना कर रही है।
कई सप्ताह बीत गए और लियाना का अवसाद गहराता चला गया। उसने अपनी पसंदीदा चीजें करना छोड़ दिया। उसकी डायरी, जिसमें वह अपने विचार लिखा करती थी, कई हफ्तों तक बिना खुली पड़ी रही। उसका गिटार कोने में धूल फांकता रहा, उसके पेंटब्रश बिना छुए पड़े रहे।

काम पर एक बेहद तनावपूर्ण दिन, लियाना के बॉस ने उसे अपने कार्यालय में बुलाया। “लियाना, सब ठीक है? तुम समय सीमा चूक रही हो और तुम्हारा प्रदर्शन गिर गया है। यह तुम्हारे स्वभाव के विपरीत है।”
“मुझे माफ कर दो,” लियाना ने धीरे से कहा, उसकी आँखों में आंसू भर आए। “मैं आगे बेहतर करने की कोशिश करूंगी।”
उसके बॉस के चेहरे पर नरमी आ गई। "मुझे तुम्हारी चिंता है, लियाना। शायद तुम्हें किसी से बात करनी चाहिए।"
उस रात, लियाना अपने बिस्तर पर बैठी छत को घूर रही थी। उसे पता था कि उसे मदद की ज़रूरत है, लेकिन उसे समझ नहीं आ रहा था कि शुरुआत कहाँ से करे। मदद मांगने का ख्याल ही उसे डरा रहा था, फिर भी वह इस रास्ते पर आगे नहीं बढ़ सकती थी। उसने अपना फोन उठाया और अपने माता-पिता का नंबर डायल किया, उसकी आँखों से आंसू बह रहे थे।
“माँ, पिताजी, मैं... मैं ठीक नहीं हूँ,” वह सिसकते हुए बोली।
उसकी मां की आवाज चिंता से भरी हुई थी। "लियाना, क्या हुआ? क्या बात है?" “मैं बहुत अकेलापन महसूस कर रही हूँ। मुझे लगा था कि मैं इसे संभाल लूँगी, लेकिन मैं नहीं संभाल सकती। मुझे मदद चाहिए,” लियाना ने लड़खड़ाती आवाज़ में स्वीकार किया।
“हम तुम्हें लेने आ रहे हैं,” उसके पिता ने दृढ़ता से कहा। “तुम्हें यह सब अकेले नहीं करना है, लियाना। हम तुम्हारे साथ हैं।”
जब उसके माता-पिता पहुंचे, तो उन्होंने लियाना को सोफे पर सिकुड़कर बैठी हुई पाया, उसका चेहरा पीला और मुरझाया हुआ था। उसकी माँ दौड़कर उसके पास गई और उसे कसकर गले लगा लिया। “ओह, लियाना, हमें बहुत दुख है। हमें एहसास नहीं था कि तुम कितनी तकलीफ में हो।”
“मुझे लगा था कि मैं इसे संभाल लूंगी,” लियाना ने फुसफुसाते हुए कहा। “लेकिन मैं नहीं संभाल सकती। मैं बहुत खोई हुई महसूस कर रही हूँ।” “तुम्हें सब कुछ अकेले संभालने की ज़रूरत नहीं है,” उसके पिता ने नरमी से कहा। “हम इस मुश्किल समय में तुम्हारी मदद करने के लिए यहाँ हैं।”
अपने माता-पिता की नई समझ और समर्थन के साथ, लियाना ने स्वस्थ होने की राह पर कदम रखा। उन्होंने अवसाद के विशेषज्ञ, दयालु और अनुभवी चिकित्सक डॉ. मेहता से थेरेपी शुरू की। पहली मुलाकात में ही डॉ. मेहता की गर्मजोशी भरी मुस्कान और आश्वस्त करने वाले व्यवहार ने लियाना को सहज महसूस कराया।

“लियाना, मैं इस मामले में तुम्हारी मदद करने के लिए यहाँ हूँ,” डॉ. मेहता ने धीरे से कहा। “हम एक-एक कदम करके आगे बढ़ेंगे।”
शुरुआती सत्र चुनौतीपूर्ण थे। लियाना को उन भावनाओं और यादों का सामना करना पड़ा जिन्हें उसने अपने भीतर गहराई से दबा रखा था। लेकिन डॉ. मेहता के सहानुभूतिपूर्ण दृष्टिकोण ने उसे खुलकर बात करने में मदद की। उन्होंने लियाना के अकेलेपन की भावना, परिवार की अपेक्षाओं से जूझने और उसे जकड़ लेने वाले गहरे खालीपन के भाव पर चर्चा की।
एक दोपहर, एक बेहद मुश्किल सत्र के दौरान, लियाना फूट-फूटकर रो पड़ी। "मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मैंने खुद को खो दिया है, जैसे मुझमें अब पहले जैसी कोई चीज नहीं बची है।"
डॉ. मेहता ने उसे एक टिश्यू दिया, उनकी आँखों में समझदारी झलक रही थी। “लियाना, ऐसा महसूस करना स्वाभाविक है। अवसाद के कारण आप खुद से अलग-थलग महसूस कर सकती हैं। लेकिन याद रखें, यह आपकी पहचान नहीं है। आप जितना सोचती हैं उससे कहीं अधिक मजबूत हैं।”
जैसे-जैसे सप्ताह महीनों में बदलते गए, लियाना में छोटे लेकिन महत्वपूर्ण बदलाव आने लगे। डॉ. मेहता ने उन्हें संज्ञानात्मक-व्यवहार चिकित्सा (सीबीटी) जैसी विभिन्न चिकित्सीय तकनीकों से परिचित कराया, जिससे उन्हें नकारात्मक विचारों को पहचानने और उनसे निपटने में मदद मिली। उन्होंने लियाना को वर्तमान क्षण में स्थिर रखने के लिए ध्यान अभ्यासों पर काम किया, जिससे चिंता और तनाव कम हुआ।
थेरेपी के अलावा, लियाना ने अपनी रिकवरी में मदद के लिए जीवनशैली में बदलाव किए। उन्होंने एक नियमित दिनचर्या बनाई, जिसमें नियमित व्यायाम, संतुलित भोजन और पर्याप्त नींद शामिल थी। उन्होंने योग और ध्यान का अभ्यास शुरू किया और इनसे मिलने वाली शांति और सुकून में उन्हें काफी आराम मिला।
एक सुबह, जब लियाना ने अपनी योगा मैट बिछाई, तो उसने महसूस किया कि वह कितनी ज़्यादा मज़बूत हो गई है। अपने शरीर को हिलाने और अपनी साँसों पर ध्यान केंद्रित करने मात्र से उसे वह शांति मिली जो उसे लंबे समय से नहीं मिल रही थी। "मुझे फिर से खुद जैसा महसूस होने लगा है," उसने सोचा, उसके होठों पर हल्की सी मुस्कान आ गई।

लियाना ने अपने शौकों से भी दोबारा जुड़ना शुरू किया। उसने गिटार उठाया, उंगलियों के नीचे तारों का परिचित स्पर्श उसके मन में पुरानी यादों और खुशी की लहर लेकर आया। उसने फिर से चित्रकारी शुरू की, जीवंत रंगों और हर ब्रशस्ट्रोक की उपचारात्मक लय में खो गई।
उसका सामाजिक जीवन भी फलने-फूलने लगा। वह दोस्तों के निमंत्रण अधिक स्वीकार करने लगी और साथ रहने और साझा अनुभवों का आनंद पुनः प्राप्त करने लगी। एक शाम, जब वह माया और कुछ अन्य दोस्तों के साथ एक आरामदायक कैफे में बैठी थी, तब उसे एहसास हुआ कि उसने कितनी तरक्की की है। हंसी और बातचीत एक गर्मजोशी भरे आलिंगन की तरह महसूस हुई, एक ऐसा एहसास जिसने उसे याद दिलाया कि वह अकेली नहीं है।
उसके माता-पिता के साथ उसके रिश्ते में काफी सुधार आया। उन्होंने मानसिक स्वास्थ्य के बारे में खुद को शिक्षित करना जारी रखा और एक अटूट सहारा बने रहे। वे नियमित रूप से उसका हालचाल पूछते थे, यह किसी दायित्व के कारण नहीं, बल्कि सच्ची चिंता और प्यार के कारण था।
“माँ, पिताजी, आपके सहयोग के लिए मैं सचमुच आभारी हूँ,” लियाना ने एक शाम वीडियो कॉल के दौरान कहा। “मैं आपके बिना यह नहीं कर सकती थी।”
“हमें तुम पर बहुत गर्व है, लियाना,” उसकी माँ ने आँखों में आँसू लिए जवाब दिया। “तुमने अविश्वसनीय शक्ति और सहनशीलता दिखाई है।”
उसके पिता ने सिर हिलाया, उनकी आवाज भावुक थी। "हम हमेशा तुम्हारे साथ रहेंगे, चाहे कुछ भी हो जाए।"
जैसे-जैसे लियाना की थेरेपी जारी रही, उसने अपनी इस यात्रा को स्वीकार करना सीख लिया। वह समझ गई कि ठीक होने की प्रक्रिया सीधी नहीं होती, बल्कि उतार-चढ़ावों से भरी होती है। कुछ दिन दूसरों की तुलना में कठिन होते थे, लेकिन उसने नए दृढ़ संकल्प और आत्म-करुणा के साथ उनका सामना किया।
डॉ. मेहता के साथ एक बेहद सार्थक सत्र में विज़न बोर्ड बनाने का काम शामिल था। लियाना ने इसे अपनी आशाओं, सपनों और लक्ष्यों को दर्शाने वाली छवियों और शब्दों से भर दिया। यह उसके लिए अपनी प्रगति और अपने भविष्य के निर्माण की दैनिक याद दिलाता रहा।
कुछ महीनों बाद, लियाना अपने विज़न बोर्ड के सामने खड़ी होकर अपनी यात्रा पर विचार कर रही थी। वह अवसाद की गहराइयों से बहुत दूर आ चुकी थी, और पहले

से कहीं अधिक मजबूत और आत्म-जागरूक बनकर उभरी थी। उसका जीवन उद्देश्य और आनंद से भरा हुआ था, जो उसकी सहनशीलता और उसे मिले समर्थन का प्रमाण था। उसने काम, आत्म-देखभाल और सामाजिक संबंधों के बीच संतुलन बनाते हुए एक नई लय पा ली थी। वह डॉ. मेहता से मिलती रही, मजबूरी में नहीं, बल्कि इसलिए कि उसे उन सत्रों से मिलने वाली अंतर्दृष्टि और विकास बहुत पसंद था।
जब लियाना ने अपने अपार्टमेंट की खिड़की से बाहर शहर को जीवंत होते देखा, तो उसे कृतज्ञता का गहरा एहसास हुआ। उसने अपने जीवन के सबसे कठिन क्षणों का सामना किया था और पहले से कहीं अधिक दृढ़ और सक्षम होकर प्रकाश में उभरी थी। उसकी यात्रा अभी समाप्त नहीं हुई थी, लेकिन वह आगे आने वाली हर चुनौती का सामना करने के लिए तैयार थी, यह जानते हुए कि उसके पास सफल होने के लिए आवश्यक साधन और समर्थन मौजूद हैं।

अध्याय 10

लेबल से परे

लियाना अपने बिस्तर के किनारे बैठी, अपने मेकअप मिरर में दिख रहे प्रतिबिंब को निहार रही थी। उसकी आंखों के नीचे के काले घेरे कई रातों की नींद हराम होने की कहानी बयां कर रहे थे, वहीं उसकी मुद्रा थकावट और दृढ़ संकल्प का मिलाजुला भाव दर्शा रही थी। उसने अपने जीवन में कई लड़ाइयाँ लड़ी थीं—अपेक्षाओं के विरुद्ध, सामाजिक मानदंडों के विरुद्ध, और सबसे बढ़कर, स्वयं के विरुद्ध। आज भी कुछ ऐसा ही था।
उसने मन ही मन फुसफुसाया, "मैं एक मजबूत महिला होने से थक गई हूँ।" उसने "मजबूत महिला" यह वाक्यांश इतनी बार सुना था कि यह उसके शरीर पर चिपके एक लेबल की तरह हो गया था, जिसे वह चाहकर भी नहीं हटा सकती थी। लेकिन वह थक चुकी थी। हमेशा मजबूत बने रहने से थक चुकी थी, हर बार गिरने पर खुद को संभालने से थक चुकी थी, लगातार संघर्ष से थक चुकी थी।
उसका फ़ोन बज उठा, जिससे उसके विचारों का सिलसिला टूट गया। उसकी स्क्रीन पर एक पुराने परिचित हार्दिक का संदेश आया। “हे लियाना, बहुत दिनों बाद मिले। आज रात खाने पर मिलना चाहोगी? ;)” लियाना ने आँखें घुमाईं। वह इस खेल को अच्छी तरह जानती थी। हार्दिक जैसे मर्द मिलना नहीं चाहते थे—उनकी कुछ और ही मंशा होती थी। उसने अनगिनत बार इसका सामना किया था: मर्द उसकी ज़िंदगी में आते थे, प्यार या सम्मान के साथ नहीं, बल्कि एक आकस्मिक रिश्ते की उम्मीद के साथ, मानो उसकी आज़ादी और ताकत क्षणिक प्रेम संबंधों के लिए निमंत्रण हों।
उसने जवाब में लिखा, "नहीं, धन्यवाद। मुझे कोई दिलचस्पी नहीं है," और भेज दिया। वह ऐसे पुरुषों से तंग आ चुकी थी जो उसे महज़ एक अनौपचारिक संबंध का

ज़रिया समझते थे। वह इससे कहीं ज़्यादा चाहती थी। वह इससे कहीं ज़्यादा की हकदार थी।
लियाना को कुछ हफ्ते पहले चाय पर आई अपनी मौसी गीता के साथ हुई बातचीत याद आ गई। वे बैठक में बैठकर चाय की चुस्कियां ले रही थीं, तभी मौसी ने casually कहा, “लड़की की शादी जल्दी कर देनी चाहिए, तुम्हें पता है। जवानी में उसे संभालना आसान होता है।”
लियाना चाय पीते-पीते लगभग अटक गई। "आपने क्या कहा, चाची?" उसने अविश्वास से भरी आवाज़ में पूछा।
गीता ने हाथ हिलाकर बात को टाल दिया। “बेटा, चीजें ऐसी ही होती हैं। एक जवान लड़की को ढाला जा सकता है, उसे तालमेल बिठाना सिखाया जा सकता है। लेकिन अगर वह बड़ी हो जाती है, तो उसके अपने बहुत सारे विचार होते हैं, बहुत ज्यादा आजादी होती है। ऐसे में उसके लिए ससुराल में ढलना मुश्किल हो जाता है।”
लियाना को अचानक गुस्सा आ गया। "तो, आप यह कह रहे हैं कि एक महिला को पूरी तरह से विकसित होने से पहले, जीवन में अपनी इच्छाओं को जानने से पहले ही शादी कर लेनी चाहिए, सिर्फ इसलिए कि उसे आसानी से नियंत्रित किया जा सके?" गीता ने सिर हिलाया, मानो यह दुनिया की सबसे स्वाभाविक बात हो। “हाँ, बिल्कुल। एक पुरुष के पास अपना घर, अच्छा पैसा होना चाहिए—ये सब ज़रूरी हैं। लेकिन एक स्त्री के लिए ये सब मायने नहीं रखते। उसकी सुरक्षा उसके पति से ही आती है।”
लियाना को अपनी बात पर यकीन नहीं हो रहा था। "लेकिन उसकी अपनी महत्वाकांक्षाओं, उसके अपने सपनों का क्या? पुरुष की स्वतंत्रता का सम्मान क्यों किया जाता है, जबकि स्त्री की स्वतंत्रता को वश में करने की वस्तु क्यों समझा जाता है?"
गीता ने कंधे उचकाते हुए कहा, "बस यही सच्चाई है। पुरुष नेतृत्व करने के लिए बना है; स्त्री अनुसरण करने के लिए।"
ये शब्द लियाना के मन में उसकी चाची के जाने के बहुत समय बाद तक गूंजते रहे। ये सिर्फ उसकी चाची के विचार नहीं थे—ये भावनाएँ हर जगह थीं। उसने इन्हें स्वयं अनुभव किया था, बार-बार गिरकर उठ खड़ी हुई थी। काम पर उसे पदोन्नति नहीं मिली, जबकि उसके पुरुष सहकर्मी, जिनमें से कुछ कम अनुभवी थे, उच्च पदों पर तेजी से पहुँच गए। उसे लगातार खुद को साबित करना पड़ता था,

अपने आस-पास के पुरुषों को आसानी से मिलने वाले सम्मान और पहचान को पाने के लिए दोगुनी मेहनत करनी पड़ती थी।
लेकिन उसने कभी हार नहीं मानी। वह गिरी, उठी, खुद को संभाला और आगे बढ़ती रही। हर बार जब वह गिरी, तो पहले से ज़्यादा मज़बूत और दृढ़ निश्चयी होकर उठी। ऐसा इसलिए नहीं था कि वह एक "मज़बूत महिला" बनना चाहती थी, बल्कि इसलिए था क्योंकि उसके पास कोई और विकल्प नहीं था।
फिर हार्दिक जैसे पुरुषों की ओर से अप्रत्यक्ष और प्रत्यक्ष दुस्साहस भरे प्रयास शुरू हुए। ऐसे पुरुष जो उसकी ताकत को सम्मान की वस्तु नहीं, बल्कि एक चुनौती या अनोखी चीज समझते थे। ऐसे पुरुष जो सोचते थे कि वे उसे तोड़ सकते हैं, उसे अपनी इच्छा के आगे झुका सकते हैं। लेकिन लियाना ऐसा होने नहीं देने वाली थी। उसने बहुत मेहनत की थी, बहुत सी लड़ाइयाँ लड़ी थीं, इसलिए वह खुद को किसी की जीत का पात्र नहीं बनने दे सकती थी।
और फिर शादी को लेकर लगातार चर्चा होती रहती थी। हर पारिवारिक समारोह में, हर सामाजिक कार्यक्रम में, वही सवाल: "लियाना, तुम शादी कब कर रही हो?" "क्या तुम घर बसाना नहीं चाहती?" "तुम्हारी उम्र बढ़ती जा रही है, तुम्हें पता है ना?"
उसने इसे नजरअंदाज करने की कोशिश की थी, अपने करियर और सपनों पर ध्यान केंद्रित करने की कोशिश की थी। लेकिन शोर हमेशा बना रहता था, पृष्ठभूमि में एक निरंतर गूंज की तरह। उसके माता-पिता, उसके रिश्तेदार, यहाँ तक कि उसके दोस्त भी—सभी को लगता था कि शादी ही अंतिम लक्ष्य है, एक महिला के जीवन का सब कुछ।
लेकिन लियाना ने मन बना लिया था। “शादी मेरे लिए कोई विकल्प नहीं है,” वह बार-बार उनसे यही कहती। ऐसा नहीं था कि उसे शादी से ही नफरत थी—बस वह गलत कारणों से शादी नहीं करना चाहती थी। वह इसलिए शादी नहीं करना चाहती थी क्योंकि उससे इसकी अपेक्षा की जाती थी, या क्योंकि यह समाज द्वारा निर्धारित जीवन पथ का “अगला कदम” था।
वह शादी करना चाहती थी, अगर कभी करे भी तो, अपनी मर्जी से, अपनी शर्तों पर। वह बराबरी का रिश्ता चाहती थी, न कि ऐसी भूमिका जहाँ उसे किसी और के इशारों पर चलना पड़े। वह चाहती थी कि उसका जीवन उसका अपना हो, न कि दूसरों की अपेक्षाओं के अनुसार चले।

वाकई यह काम संभाल पाओगी? इस प्रोजेक्ट के लिए तुम्हें तीन महीने के लिए केन्या जाना होगा, और इसमें ज़रा भी गलती की गुंजाइश नहीं है।"
एक गहरी सांस लेते हुए, लियाना ने दृढ़ निश्चय के साथ उनकी आंखों में देखा। "मुझ पर भरोसा कीजिए, महोदय। मुझे पता है कि मेरी हालिया स्वास्थ्य रिपोर्ट पूरी तरह ठीक नहीं हैं, लेकिन मैंने काफी सुधार किया है। आप मुझ पर भरोसा कर सकते हैं कि मैं इस परियोजना का नेतृत्व करूंगी और असाधारण परिणाम दूंगी।"
श्री पटेल ने कुछ क्षण लियाना को निहारा और फिर सिर हिलाते हुए कहा, "ठीक है, लियाना। मुझे तुम्हारी क्षमताओं पर पूरा भरोसा है। तुम टीम लीडर और प्रोजेक्ट मैनेजर बनोगी। क्लाइंट नैरोबी में स्थित है और यह प्रोजेक्ट हमारे लिए बेहद महत्वपूर्ण है। हमें तुम पर पूरा भरोसा है।"
इसके बाद उन्होंने परियोजना का संक्षिप्त विवरण दिया। केन्या की एक प्रमुख कंपनी को अपने संचालन को सुव्यवस्थित करने और उत्पादकता बढ़ाने के लिए एक व्यापक सॉफ्टवेयर समाधान की आवश्यकता थी। लियाना को इंजीनियरों, डिजाइनरों और विश्लेषकों की एक टीम का नेतृत्व करते हुए तीन महीने की समय सीमा के भीतर यह समाधान प्रदान करना था।
श्री पटेल ने आगे कहा, “परियोजना की जटिलता को देखते हुए आपको हर चीज़ पर पूरी नज़र रखनी होगी, चाहे वह ग्राहक से बातचीत हो या टीम का समन्वय। आपकी उड़ान अगले सप्ताह के लिए निर्धारित है, और मैंने आपके ठहरने के लिए आवश्यक व्यवस्था कर दी है। याद रखना, लियाना, इस परियोजना की सफलता हम सभी पर निर्भर करेगी।”
श्री पटेल के कार्यालय से निकलते ही लियाना में जोश का उबाल आ गया। यही वो मौका था जिसका उसे बेसब्री से इंतज़ार था, अपनी प्रतिभा और समर्पण को प्रदर्शित करने का अवसर। उसने तुरंत तैयारियां शुरू कर दीं, अपनी टीम के साथ समन्वय स्थापित किया, प्रारंभिक बैठकें तय कीं और परियोजना के विवरण में गहराई से उतर गई।
उसी शाम, लियाना ने अपने माता-पिता को यह खबर देने के लिए फोन किया। "माँ, पिताजी, मुझे अगले तीन महीनों के लिए केन्या में एक महत्वपूर्ण परियोजना का नेतृत्व करने के लिए नियुक्त किया गया है।"
"केन्या?" उसकी माँ ने हैरानी से कहा। "यह तो बहुत दूर है। क्या तुम वाकई इसके लिए तैयार हो?"

लियाना मुस्कुराई, उसे अपने जीवन में एक नया उद्देश्य महसूस हुआ। "हाँ, माँ। यही वो अवसर है जिसका मैं इंतज़ार कर रही थी। मैं तैयार हूँ।"
उसके पिता ने आगे कहा, "हमें तुम पर गर्व है, लियाना। बस अपना ख्याल रखना।" "मैं करूँगी," उसने उन्हें आश्वासन दिया।
अगला सप्ताह व्यस्तता में तेज़ी से बीत गया। लियाना ने अपने मौजूदा प्रोजेक्ट्स का काम पूरा किया, अपना सामान पैक किया और अपनी यात्रा की सारी तैयारियाँ सुनिश्चित कीं। नैरोबी जाने वाले विमान में सवार होते ही उसकी उत्तेजना स्पष्ट झलक रही थी, वह आगे आने वाली चुनौतियों का सामना करने के लिए पूरी तरह तैयार थी।

अध्याय 11

कंगनों से बंधे हुए

केन्या पहुँचते ही लियाना नैरोबी की जीवंत ऊर्जा से मंत्रमुग्ध हो गईं। यह शहर आधुनिकता और परंपरा का अनूठा संगम था, जहाँ चहल-पहल भरी सड़कें, रंगीन बाज़ार और ऊँची-ऊँची इमारतों से जगमगाता क्षितिज दिखाई देता था। ऐसे गतिशील वातावरण में काम करने के विचार से ही उन्हें रोमांच का अनुभव हुआ।
लियाना अपनी टीम से मिलीं, जो प्रतिभाशाली पेशेवरों का एक विविध समूह था, जिनमें से प्रत्येक अपने साथ अद्वितीय कौशल लेकर आया था। उन्होंने परियोजना के उद्देश्यों और अपेक्षाओं को रेखांकित करने के लिए एक प्रारंभिक बैठक आयोजित की। उन्होंने दृढ़ और आत्मविश्वास से भरी आवाज़ में उनसे कहा, "हमारे पास एक उत्कृष्ट समाधान देने के लिए तीन महीने हैं। यह हमारी कंपनी के लिए एक महत्वपूर्ण परियोजना है, और मुझे पता है कि हम इसे पूरा कर सकते हैं। चलिए इसे साकार करते हैं।"
जैसे-जैसे वे परियोजना में आगे बढ़े, लियाना का नेतृत्व स्पष्ट रूप से उभर कर सामने आया। उन्होंने ग्राहक के साथ प्रभावी ढंग से संवाद किया, उनकी आवश्यकताओं और चिंताओं को समझा, साथ ही अपनी टीम को प्रेरित और केंद्रित रखा। लंबे कार्य समय और कभी-कभार आने वाली बाधाओं के बावजूद, लियाना का समर्पण कभी कम नहीं हुआ।
परियोजना शुरू होने के तीन सप्ताह बाद, देर रात के एक विचार-मंथन सत्र के दौरान, उनके साथी राजीव ने टिप्पणी की, "लियाना, आपकी लगन और प्रतिबद्धता वास्तव में प्रेरणादायक है। मुझे नहीं लगता कि हमें आपसे बेहतर नेता मिल सकता था।"

"धन्यवाद, राजीव," लियाना ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया। "हम सब इसमें एक साथ हैं। आइए आगे बढ़ते रहें।"
जैसे-जैसे परियोजना आगे बढ़ी, लियाना के शुरुआती डर और शंकाएँ आत्मविश्वास और स्पष्टता में तब्दील हो गईं। उन्हें एहसास हुआ कि अवसाद से उबरने की उनकी यात्रा ने न केवल उन्हें मजबूत बनाया है, बल्कि उन्हें अधिक सहानुभूतिपूर्ण और लचीला भी बनाया है। वह अपनी टीम को न केवल एक नेता के रूप में, बल्कि मानसिक स्वास्थ्य के महत्व को समझने वाले व्यक्ति के रूप में भी सहयोग देने में सक्षम थीं।
समय बीतने के साथ-साथ, लियाना नैरोबी में और अधिक सहज महसूस करने लगी। शहर की जीवंत संस्कृति और मिलनसार लोगों ने उसे अपना लिया था, और वह हलचल भरी सड़कों और रंगीन बाजारों से मोहित हो गई थी। फिर भी, प्रगति और उत्साह के बावजूद, एक अप्रत्याशित घटना ने उस पर गहरा प्रभाव डाला और उसके जीवन की दिशा बदल दी।
एक धूप भरी दोपहर, लियाना ने व्यस्त प्रोजेक्ट शेड्यूल से थोड़ा ब्रेक लेने का फैसला किया और एक स्थानीय कैफे में जाने का सोचा, जिसकी सिफारिश उसके एक सहकर्मी ने की थी। उसने एक कॉफी मंगवाई और खिड़की के पास बैठ गई, शहर की चहल-पहल को निहारते हुए। जैसे ही वह अपनी किताब में मग्न हुई, एक युवती कैफे में दाखिल हुई, जो हाथ से बने कंगन बेच रही थी। उसकी त्वचा का रंग गहरा काला था और उसकी आँखों में दृढ़ संकल्प और आशा की चमक थी।
“क्या आप एक कंगन खरीदना चाहेंगी, महोदया?” लड़की ने कोमल लेकिन स्थिर आवाज में पूछा।
लियाना ने गर्मजोशी से मुस्कुराते हुए कहा, "ज़रूर, दिखाओ तुम्हारे पास क्या है।"
जब वह कंगन देख रही थी, तभी पर्यटकों का एक समूह जोर-जोर से बातें करते हुए कैफे में दाखिल हुआ। उनमें से एक लंबा-चौड़ा, घमंडी सा दिखने वाला आदमी उस लड़की को देखकर उपहास उड़ाते हुए बोला, “इस नन्ही भिखारी को देखो। क्या यहाँ इन बच्चों को सड़कों से दूर रखने के लिए कोई कानून नहीं है?”
लियाना का खून खौल उठा। उसे उसके शब्दों में छिपी अज्ञानता और क्रूरता पर विश्वास नहीं हो रहा था। उसने उस लड़की की ओर देखा, जो अब स्पष्ट रूप से परेशान थी, उसके छोटे हाथ कांप रहे थे।
"माफ़ कीजिए," लियाना ने खड़े होकर उस आदमी की ओर मुँह करते हुए कहा।

“यह युवती अपनी हस्तकला की चीजें बेच रही है, भीख नहीं मांग रही। थोड़ा सम्मान दिखाओ।”
उस आदमी ने आंखें घुमाईं। "मैं ऐसा क्यों करूं? वे तो हर जगह हैं, एक झंझट हैं।"
लियाना का दिल उस लड़की के लिए दुख से भर गया। "वह ईमानदारी से जीविका कमाने के लिए कड़ी मेहनत कर रही है। अगर तुम यह नहीं देख सकते, तो शायद तुम ही यहाँ रहने लायक नहीं हो।"
उस आदमी ने उपहास उड़ाया और मुँह फेर लिया, लेकिन नुकसान हो चुका था। लड़की रोने ही वाली थी। लियाना घुटनों के बल बैठी और धीरे से उसका हाथ पकड़ा। "तुम्हारा नाम क्या है?"
“ज़ूरी,” लड़की ने फुसफुसाते हुए कहा।
“ज़ूरी, यह बहुत ही सुंदर नाम है। ऐसे लोगों को अपने ऊपर हावी मत होने देना, ठीक है? तुम मजबूत और सक्षम हो।”
ज़ूरी ने सिर हिलाया, उसकी आँखों में अभी भी आँसू चमक रहे थे। "धन्यवाद, महोदया।"
लियाना ने कई कंगन खरीदे और ज़ूरी को आश्वस्त करने वाली मुस्कान दी। "इन्हें बनाती रहो। ये बहुत प्यारे हैं, बिल्कुल तुम्हारी तरह।"
ज़ूरी के कैफ़े से निकलते ही, लियाना के मन से वह घटना नहीं निकल पा रही थी। वह सोच रही थी कि कैसे नस्लवाद और भेदभाव किसी व्यक्ति, खासकर बच्चे के मनोबल को तोड़ सकते हैं। इस घटना ने उसे समाज में कई लोगों द्वारा झेले जाने वाले संघर्ष की भयावहता का एहसास कराया, जो अक्सर अनदेखा और अनसुना रह जाता है।
जैसे ही लियाना अपने काम में रम गई, उसे कैफे में कंगन बेचने वाली छोटी बच्ची ज़ूरी की याद सताने लगी। उस घटना ने उस पर गहरा प्रभाव डाला था और वह लगातार ज़ूरी के बारे में सोचती रहती थी। वह जानती थी कि वह उस बच्ची के जीवन में बदलाव लाना चाहती है और उसने उसे गोद लेने का फैसला किया। हालांकि, जल्द ही उसे पता चला कि गोद लेने की प्रक्रिया कई मुश्किलों से भरी है।
अगले कुछ सप्ताह उन्होंने गोद लेने की प्रक्रिया पर शोध करने में बिताए।
उन्हें जल्द ही एहसास हो गया कि किसी दूसरे देश से बच्चे को गोद लेना,

खासकर एक अविवाहित महिला के लिए, आसान नहीं होगा। लेकिन उनका दृढ़ संकल्प कभी नहीं डिगा।
अगले दिन, लियाना ने प्रक्रिया को बेहतर ढंग से समझने के लिए एक स्थानीय दत्तक ग्रहण एजेंसी से मुलाकात का समय लिया। उनकी मुलाकात श्री मवांगी से हुई, जो एक दयालु और जानकार सामाजिक कार्यकर्ता थे, जिन्होंने उन्हें इसमें शामिल कानूनी पहलुओं के बारे में विस्तार से बताया।
“श्रीमती लियाना, ज़ूरी को गोद लेने की आपकी इच्छा की मैं सराहना करता हूँ, लेकिन आपको कई चुनौतियों के बारे में जानकारी होनी चाहिए,” श्री मवांगी ने बात शुरू की। “केन्याई कानून में अंतरराष्ट्रीय गोद लेने के लिए सख्त नियम हैं, और अविवाहित होने से मामला और भी जटिल हो जाता है।”
लियाना ने दृढ़ निश्चय के साथ सिर हिलाया। "मैं समझ गई, श्रीमान मवांगी। क्या आप मुझे बता सकते हैं कि असल मुद्दे क्या हैं?"
श्री मवांगी ने बताया, “सबसे पहले, केन्या देश के भीतर के परिवारों को ही बच्चों को सौंपने को प्राथमिकता देता है। दूसरे, एक अविवाहित महिला होने के नाते, आपको उपयुक्त दत्तक माता-पिता माने जाने के लिए असाधारण परिस्थितियों को साबित करना होगा। इसमें आपकी आर्थिक स्थिरता, एक प्यार भरा और सुरक्षित घर प्रदान करने की आपकी क्षमता और व्यापक पृष्ठभूमि जांच शामिल है।”
लियाना ने गहरी सांस ली। “मैं इसके लिए कुछ भी करने को तैयार हूं। मेरे पास एक स्थिर नौकरी है, अच्छी आमदनी है, और मैं सचमुच ज़ूरी के लिए एक बेहतर भविष्य बनाना चाहती हूं।”
श्री मवांगी ने गर्मजोशी से मुस्कुराते हुए कहा, “आपका दृढ़ संकल्प सराहनीय है। हम घर पर अध्ययन और पृष्ठभूमि जांच से शुरुआत करेंगे। आपको केन्या और आपके गृह देश दोनों के अधिकारियों से भी अनुमोदन प्राप्त करना होगा।”
अगले कुछ हफ्तों तक, लियाना ने गोद लेने की प्रक्रिया में खुद को पूरी तरह से लगा दिया। उन्होंने श्री मवांगी के साथ मिलकर सभी आवश्यक दस्तावेज जुटाए, साक्षात्कार दिए और यह सुनिश्चित किया कि उनका घर ज़ूरी के लिए तैयार हो। यह प्रक्रिया लंबी और अक्सर निराशाजनक रही, लेकिन लियाना का संकल्प कभी नहीं डिगा।

दफ्तर लौटने पर, लियाना के सहकर्मियों ने उसमें आए बदलाव को महसूस किया। वह पहले से कहीं अधिक एकाग्रचित्त थी, और उसमें एक नए उद्देश्य की भावना जागृत हो गई थी। केन्या में परियोजना लगभग पूरी होने वाली थी, और टीम असाधारण परिणाम देने की दिशा में अग्रसर थी।
जिस दिन लियाना की टीम ने प्रोजेक्ट पूरा किया, वह दिन राहत और उपलब्धि की मिली-जुली भावनाओं से भरा हुआ था। केन्या स्थित ग्राहक परिणामों से बेहद खुश थे, और उनके बॉस भी बेहद प्रसन्न थे। अंतिम प्रस्तुति में तालियों और प्रशंसाओं की गड़गड़ाहट गूंज उठी।
मीटिंग के बाद, लियाना के बॉस, श्री पटेल, उनके पास आए। “लियाना, तुमने यहाँ असाधारण काम किया है। इस प्रोजेक्ट के लिए हमें तुमसे बेहतर लीडर नहीं मिल सकता था।”
“धन्यवाद, महोदय,” लियाना ने उत्तर दिया, उसका हृदय गर्व से भर गया था। "क्या आप भारत वापस जाने के लिए तैयार हैं?" उन्होंने अपना कार्य पूरा होने का जिक्र करते हुए पूछा।
लियाना हिचकिचाई और कोने में चुपचाप किताब लिए बैठी ज़ूरी की ओर देखा। "दरअसल, श्रीमान पटेल, मुझे आपसे कुछ बात करनी है।"
श्री पटेल ने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं। "तुम्हारे मन में क्या चल रहा है?" “सर, मैं ज़ूरी को गोद लेने की प्रक्रिया में हूँ, जिसका ज़िक्र मैंने पहले किया था। हालाँकि, कानूनी कार्यवाही मेरी अपेक्षा से कहीं अधिक जटिल है। मुझे सब कुछ अंतिम रूप देने के लिए केन्या में अपना प्रवास बढ़ाना होगा। मैं अभी भारत वापस नहीं जा सकता।”
श्री पटेल ने सोच-समझकर सिर हिलाया। “मैं समझता हूँ, लियाना। गोद लेना एक बड़ा कदम है और काफी चुनौतीपूर्ण हो सकता है। आपको क्या लगता है कि इसमें कितना समय लगेगा?”
“मुझे पूरी तरह से यकीन नहीं है, महोदय। यहाँ और भारत में अधिकारियों को और अधिक कागजी कार्रवाई और कई और प्रक्रियाओं की आवश्यकता होती है। इसमें कुछ और महीने लग सकते हैं,” लियाना ने चिंता भरी आवाज में समझाया।
“खैर, आपके उत्कृष्ट कार्य को देखते हुए, मुझे पूरा विश्वास है कि हम आपके लिए यहाँ अधिक समय तक रुकने की व्यवस्था कर सकते हैं। हम यहाँ आपकी नियुक्ति की अवधि बढ़ा देंगे, और आप आवश्यकतानुसार दूर से भी काम करना

जारी रख सकती हैं। मैं मानव संसाधन विभाग से इस बारे में बात कर लूंगा,” श्री पटेल ने उन्हें आश्वासन दिया।
"आपका बहुत-बहुत धन्यवाद, सर। मैं आपको बता नहीं सकती कि यह मेरे लिए कितना मायने रखता है," लियाना ने राहत भरी सांस लेते हुए कहा।
उसी शाम, जब लियाना और ज़ूरी अपने अपार्टमेंट की ओर वापस जा रही थीं, तो ज़ूरी ने उत्सुकता भरी निगाहों से लियाना की ओर देखा। "क्या हम जल्द ही भारत वापस जा रहे हैं, लियाना?"
“अभी नहीं, ज़ूरी,” लियाना ने उसका हाथ दबाते हुए जवाब दिया। “हमें यहाँ थोड़ा और रुकना होगा ताकि तुम्हारे गोद लेने की सारी प्रक्रिया पूरी हो जाए। लेकिन चिंता मत करो, हम यहाँ अपने समय का पूरा फायदा उठाएंगे।”
इसके बाद के सप्ताह कानूनी बैठकों, घर-घर जाकर मुलाक़ातों और अंतहीन कागज़ी कार्रवाई में व्यस्त रहे। लियाना को अपनी आर्थिक स्थिरता साबित करनी पड़ी, चरित्र प्रमाण पत्र देने पड़े और मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन से गुज़रना पड़ा। तमाम चुनौतियों के बावजूद, वह दृढ़ निश्चयी रहीं, क्योंकि उन्हें पता था कि अंततः परिणाम उनके हर प्रयास के लायक होगा।
एक दोपहर, जब वह दत्तक ग्रहण एजेंसी के कार्यालय में बैठी थीं, श्री मवांगी ने उनके नवीनतम दस्तावेजों की समीक्षा की। “सुश्री लियाना, मुझे कहना होगा, आपका समर्पण सराहनीय है। हम अच्छी प्रगति कर रहे हैं, लेकिन अभी कुछ और चरण पूरे करने बाकी हैं।”
लियाना ने सिर हिलाया। “मैं समझ गई, श्रीमान मवांगी। मैं हर संभव प्रयास करूंगी। ज़ूरी एक स्थिर और प्यार भरे घर की हकदार है।”
श्री मवांगी मुस्कुराए। “आपकी प्रतिबद्धता स्पष्ट है। मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि आप सफल होंगे।”
दत्तक ग्रहण प्रक्रिया के दौरान, लियाना अपनी कंपनी के प्रोजेक्ट्स पर दूर से ही काम करती रहीं। उन्होंने अपनी पेशेवर जिम्मेदारियों और निजी मिशन के बीच संतुलन बनाए रखा, और अक्सर ज़ूरी को सुलाने के बाद देर रात तक काम करती रहीं। लंबे समय तक काम करना थका देने वाला था, लेकिन लियाना को ज़ूरी के लिए एक बेहतर भविष्य बनाने के अपने दृढ़ संकल्प से शक्ति मिली। जैसे-जैसे महीने बीतते गए, लियाना और ज़ूरी का रिश्ता और मज़बूत होता गया। उन्होंने साथ मिलकर नैरोबी की सैर की, पार्क, संग्रहालय और स्थानीय बाज़ार

घूमे। लियाना इन पलों को संजोकर रखती थी, क्योंकि वह जानती थी कि वे जीवन भर की यादें बना रहे हैं।
एक शाम, जब वे साथ मिलकर खाना बना रहे थे, ज़ूरी ने लियाना की ओर देखकर कहा, "लियाना, क्या हम हमेशा साथ रहेंगे?"
लियाना ज़ूरी के स्तर तक घुटनों के बल बैठ गई, उसकी आँखों में प्यार भरा हुआ था। “हाँ, ज़ूरी। हम हमेशा साथ रहेंगे। मैं वादा करती हूँ।”
आखिरकार, लंबे इंतजार और कानूनी प्रक्रिया के बाद, श्री मवांगी ने लियाना को वह खुशखबरी दी जिसका उन्हें बेसब्री से इंतजार था। “श्रीमती लियाना, मुझे आपको यह बताते हुए खुशी हो रही है कि सभी आवश्यक स्वीकृतियां प्राप्त हो गई हैं। गोद लेने की प्रक्रिया पूरी हो गई है। ज़ूरी अब कानूनी रूप से आपकी बेटी है।”
लियाना की आंखों से खुशी के आंसू बह रहे थे, उसने ज़ूरी को कसकर गले लगा लिया। "हमने कर दिखाया, ज़ूरी। अब हम आधिकारिक तौर पर एक परिवार हैं।"
गोद लेने की प्रक्रिया पूरी होने पर लियाना को गहरी संतुष्टि का अनुभव हुआ। वह जानती थी कि यह सफर चुनौतीपूर्ण रहा है, लेकिन हर बाधा का सामना करना सार्थक था। ज़ूरी की माँ बनकर उसे जीवन का नया उद्देश्य और अपार आनंद मिला था।

अध्याय 12

छोटी लक्ष्मी

आखिरकार वह दिन आ ही गया। लियाना भारत में अपने माता-पिता के घर के प्रवेश द्वार पर ज़ूरी का हाथ पकड़े खड़ी थी। यह एक लंबी यात्रा थी, शाब्दिक और लाक्षणिक दोनों अर्थों में, लेकिन वह अपने परिवार को अपनी नई बेटी से मिलवाने के लिए तैयार थी।
"क्या तुम उत्साहित हो, ज़ूरी?" लियाना ने छोटी बच्ची का हाथ आश्वस्त करते हुए दबाते हुए पूछा।
ज़ूरी ने जिज्ञासा से आँखें चौड़ी करते हुए सिर हिलाया। "हाँ, माँ। लेकिन मैं थोड़ी घबराई हुई भी हूँ।"
“चिंता मत करो, मेरी प्यारी। वे तुम्हें बहुत पसंद करेंगे,” लियाना ने मुस्कुराते हुए उससे कहा।
जैसे ही वे दरवाजे के पास पहुँचे, लियाना के माता-पिता, श्रीमान और श्रीमती शर्मा, बाहें फैलाए उनका इंतजार कर रहे थे। श्रीमती शर्मा के हाथ में आरती की थाली थी और उनका चेहरा स्नेह और स्नेह से दमक रहा था।
“लियाना, घर में तुम्हारा स्वागत है,” श्रीमती शर्मा ने भावुक होकर कहा। “और ज़ूरी, हमारे परिवार में तुम्हारा स्वागत है।”
ज़ूरी ने आश्वासन के लिए लियाना की ओर देखा, और लियाना ने सिर हिलाया। "आगे बढ़ो, प्यारी।"
श्रीमती शर्मा ने आरती करके ज़ूरी का अपने घर में स्वागत किया। उन्होंने कहा, “हमारा मानना है कि जब कोई बच्चा पहली बार घर में आता है, तो वह देवी लक्ष्मी का आशीर्वाद लेकर आता है। ज़ूरी, तुम हमारी छोटी लक्ष्मी हो, जो समृद्धि और आनंद लेकर आई हो।”

श्री शर्मा नम आंखों से आगे बढ़े। “स्वागत है, ज़ूरी। हम आपसे मिलने का बेसब्री से इंतजार कर रहे थे।”
"धन्यवाद," ज़ूरी ने धीरे से कहा, उसकी आवाज़ श्रद्धा से भरी हुई थी।
जैसे ही वे घर में दाखिल हुए, पूरा परिवार नए सदस्य से मिलने के लिए उत्सुकता से इकट्ठा हो गया। लियाना का भाई राज मुस्कुराते हुए आगे आया। “अरे, ज़ूरी! मैं तुम्हारा चाचा राज हूँ। हमें तुम्हें यहाँ देखकर बहुत खुशी हो रही है,” उसने उसे गले लगाते हुए कहा।
पूरी शाम परिवार ने ज़ूरी पर खूब प्यार और स्नेह बरसाया। वे उसकी बुद्धिमत्ता, जिज्ञासा और दयालुता से चकित थे। लियाना ने गर्व से देखा कि उसका परिवार बिना किसी संकोच के ज़ूरी को गले लगा रहा है, उसे परिवार के एक प्रिय सदस्य की तरह समान भाव से व्यवहार कर रहा है।
रात के खाने के दौरान, श्री शर्मा ने टोस्ट उठाया। “परिवार, प्यार और नई शुरुआत के लिए। हम ज़ूरी के आभारी हैं, जिसने हमारे जीवन में बहुत सारी खुशियाँ लाई हैं। और लियाना के लिए, उसकी ताकत और साहस के लिए। आपने हमें गर्व महसूस कराया है।”
लियाना के बगल में बैठी ज़ूरी ने ऊपर देखा और फुसफुसाते हुए कहा, "वे मुझसे बहुत प्यार करते हैं, माँ।"
“हाँ, ज़ूरी,” लियाना ने खुशी से भरते हुए जवाब दिया। “और वे हमेशा ऐसा करते रहेंगे।”
रात के खाने के बाद, जब परिवार बैठक कक्ष में इकट्ठा हुआ, तो श्रीमती शर्मा ने लियाना के बचपन की कहानियाँ सुनाना शुरू किया। “जानती हो, ज़ूरी, तुम मुझे लियाना की बहुत याद दिलाती हो जब वह तुम्हारी उम्र की थी। हमेशा जिज्ञासु, हमेशा सीखने के लिए उत्सुक।”
ज़ूरी खिलखिलाकर हंस पड़ी। "सच में?"
“बिल्कुल,” श्रीमती शर्मा ने मुस्कुराते हुए कहा। “और लियाना की तरह, आप भी हमें दिखा रही हैं कि आप कितनी खास हैं।”
उसी रात, जब लियाना ज़ूरी को बिस्तर पर सुला रही थी, तो ज़ूरी ने बड़ी-बड़ी आँखों से उसकी ओर देखा और बोली, "माँ, मुझे हमारा परिवार बहुत प्यारा है।" लियाना की आँखों में खुशी के आँसू आ गए। "ज़ूरी, मुझे भी ये बहुत प्यारे लगते हैं। और मुझे बहुत खुशी है कि अब तुम भी इसका हिस्सा हो।"

ज़ूरी के कमरे से निकलकर अपने कमरे की ओर बढ़ते हुए लियाना को गहरी शांति का अनुभव हुआ। सफ़र लंबा और चुनौतीपूर्ण रहा था, लेकिन अंततः वह इस खूबसूरत पल तक पहुँचा था। उसके परिवार ने ज़ूरी का खुले दिल से स्वागत किया था, उसे भी वही प्यार और अपनापन दिखाया था जो उन्होंने हमेशा लियाना को दिखाया था।
उस पल, लियाना को पता चल गया कि उसने सही फैसला लिया है। उसे अपना रास्ता मिल गया था, न सिर्फ अपने लिए बल्कि ज़ूरी के लिए भी। साथ मिलकर, वे भविष्य में आने वाली हर चुनौती का सामना करने के लिए तैयार थे, यह जानते हुए कि उनके साथ एक प्यार करने वाला और सहयोगी परिवार है।
और जैसे ही लियाना को नींद आने लगी, उसने मन ही मन अरोरा को धन्यवाद कहा, जिसकी यात्रा ने उसे प्रेरित किया था। चुनौतियों और सफलताओं के बीच, लियाना ने परिवार और प्रेम का सच्चा अर्थ खोज लिया था। और अब, ज़ूरी के साथ, वह पूर्ण महसूस कर रही थी।

अध्याय 13

नए भविष्य का निर्माण

लियाना ने कॉर्पोरेट जगत में वर्षों तक तरक्की की थी, अपनी उपलब्धियों और नौकरी से मिली आर्थिक स्थिरता पर उसे गर्व था। लेकिन सफलता के बावजूद, उसके भीतर एक खालीपन घर करने लगा था। हर सुबह, वह अपनी परछाई को देखती और महसूस करती कि मानो कुछ बहुत ज़रूरी चीज़ गायब है। वह बहुराष्ट्रीय कंपनियों के ग्राहकों को मुनाफा बढ़ाने में मदद कर रही थी, लेकिन वह इस भावना को दूर नहीं कर पा रही थी कि उसका काम वह प्रभाव नहीं डाल पा रहा था जिसका उसने कभी सपना देखा था।
अंतिम निर्णायक मोड़ देर रात की एक बैठक के दौरान आया। वह कांच की दीवारों वाले एक बोर्डरूम में बैठी थीं, जहाँ उनके सहकर्मी लाभ मार्जिन और तिमाही लक्ष्यों पर चर्चा कर रहे थे, लेकिन उनका मन कहीं और ही था। उन्हें हाल ही में देखी गई एक खबर याद आई, जिसमें महिलाएं और बच्चे संघर्ष क्षेत्रों से भाग रहे थे, उनके पास अपने शरीर पर पहने कपड़ों के अलावा कुछ नहीं था। इस घटना ने उन्हें गहराई से झकझोर दिया; उनकी वास्तविकता उनके आरामदायक जीवन से बिलकुल अलग थी, फिर भी मदद करने की इच्छा इतनी प्रबल थी कि इसे अनदेखा करना लगभग असंभव हो गया।
कई हफ्तों तक वह इस फैसले को लेकर दुविधा में रही, अपने करियर की सुख-सुविधा और उस अनजान राह के बीच फंसी रही जो उसे पुकार रही थी। अपनी स्थिर और अच्छी तनख्वाह वाली नौकरी छोड़ने का ख्याल ही डरावना था, लेकिन लियाना अपनी अंतरात्मा की आवाज को दबा नहीं सकी। उसने सप्ताहांत में स्थानीय दान संस्थाओं में स्वयंसेवा करना शुरू कर दिया, जहाँ भी संभव हो मदद करने लगी। हर सोमवार को जब वह अपने कार्यालय लौटती, तो उसके कॉर्पोरेट काम और जरूरतमंदों के साथ बिताए समय के बीच का अंतर और भी स्पष्ट होता चला जाता।

एक शाम, एक और नीरस दिन के बाद, लियाना को एहसास हुआ कि अब समय आ गया है। सबके चले जाने के बाद भी वह काफी देर तक अपनी डेस्क पर बैठी रही, खाली दफ्तर की हल्की गूंज उसके विचारों को और गहरा कर रही थी। उस शांत क्षण में, उसे एहसास हुआ कि जिस जीवन की वह सचमुच इच्छा रखती है, उसके लिए एक बड़ा कदम उठाना ज़रूरी है। वह अपनी पूरी ऊर्जा उन लोगों को देना चाहती थी जिन्हें वास्तव में मदद की ज़रूरत थी, अन्याय और उपेक्षा से भरी दुनिया में बदलाव की ताकत बनना चाहती थी।
अगली सुबह, लियाना ने अपना इस्तीफा सौंप दिया। उसके सहकर्मी हैरान थे, कुछ तो यह समझ ही नहीं पा रहे थे कि वह इतनी प्रतिष्ठित नौकरी क्यों छोड़ रही है। लेकिन लियाना को हल्कापन महसूस हुआ, मानो उसके कंधों से कोई बोझ उतर गया हो। उसके पास सभी सवालों के जवाब नहीं थे, और आगे का रास्ता अनिश्चित था, लेकिन वर्षों में पहली बार, उसे एक उद्देश्य का एहसास हुआ जो किसी भी कॉर्पोरेट सफलता ने उसे कभी नहीं दिया था। दृढ़ विश्वास और अनिश्चितता का सामना करने की हिम्मत के साथ, लियाना ने अपनी नौकरी छोड़ दी, और खुद को पूरी तरह से उस काम के लिए समर्पित करने को तैयार थी जो लोगों के जीवन को बदल सकता था—शुरुआत खुद उसके जीवन से हुई।
कॉर्पोरेट नौकरी छोड़ने के बाद, लियाना ने एक सार्थक बदलाव लाने की तीव्र इच्छा महसूस की। वह सिर्फ काम नहीं करना चाहती थी; वह बदलाव की वकालत करना चाहती थी। गैर-सरकारी संगठनों में शामिल होने का उनका निर्णय इस बात से प्रेरित था कि वह अपनी आवाज़ और संसाधनों का उपयोग समाज द्वारा उपेक्षित लोगों, विशेष रूप से महिलाओं और हाशिए पर पड़े समुदायों के उत्थान के लिए कर सकती हैं। उनके सक्रियता के सफर की शुरुआत तीन मुख्य उद्देश्यों से हुई: शरणार्थी महिलाओं को सशक्त बनाना, आर्थिक रूप से आश्रित महिलाओं का समर्थन करना और यौनकर्मियों के अधिकारों की वकालत करना।

शरणार्थी शिविर मिशन: गरिमा की बहाली
सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में लीसा की यात्रा उन्हें कई स्थानों पर ले गई थी, लेकिन किवारा के पास शरणार्थी शिविर के बारे में सुनकर उनका दिल गहरा प्रभावित हुआ। यह युद्ध और हिंसा की क्रूरता से भाग रहे लोगों को आश्रय देने के लिए जल्दबाजी में बनाया गया एक अस्थायी शिविर था। हालांकि लीसा ने पहले भी मानवीय पीड़ा देखी थी, लेकिन उन्हें लगा कि यह स्थिति अलग है।

किवारा से सामने आ रही कहानियों में असहनीय आघात की बात कही गई थी, जहां कई महिलाएं हिंसा के ऐसे घावों को झेल रही थीं जो न केवल शारीरिक थे बल्कि गहरे भावनात्मक भी थे। मदद करने के लिए दृढ़ संकल्पित होकर, लीसा ने अपना सामान पैक किया और इन महिलाओं के सामने आने वाली चुनौतियों को अपनी आँखों से देखने के लिए निकल पड़ीं।
शिविर में पहुँचते ही लीसा के मन में दुख और दृढ़ संकल्प की लहर दौड़ गई। उसके सामने का दृश्य हृदयविदारक था: तंबुओं और अस्थायी आश्रयों की कतारें थके-हारे चेहरों से भरी हुई थीं। कई महिलाएं स्पष्ट रूप से सदमे में थीं, उनके अनुभवों का बोझ उनकी खाली आँखों और मौन भावों में झलक रहा था। अंतर्राष्ट्रीय सहायता संगठनों ने भोजन, पानी और बुनियादी चिकित्सा सुविधाएँ प्रदान कीं, लेकिन उनकी दर्दनाक यात्राओं से हुए भावनात्मक घावों के लिए कोई सहारा नहीं था। लीसा जानती थी कि वह सब कुछ ठीक नहीं कर सकती, लेकिन उसे पूरा विश्वास था कि वह बदलाव ला सकती है।
एक दोपहर, जब लीसा शिविर के धूल भरे रास्तों से गुज़र रही थी, तो उसकी नज़र कुछ महिलाओं के एक समूह पर पड़ी जो एक साथ बैठी थीं, उनके चेहरे दर्द और चिंता से भरे हुए थे। उन्होंने न केवल युद्ध की हिंसा झेली थी, बल्कि भागने के दौरान उनकी रक्षा करने वालों द्वारा किए गए दुर्व्यवहार का भी सामना किया था। लीसा ने कोमल भाव से उनके पास जाकर उनकी बातें सुनीं और सहानुभूति दिखाई। वह उन्हें शिविर के एक शांत कोने में ले गई, जहाँ उन्होंने खुलकर बातें कीं, यह जानते हुए कि उनकी बात सुनी और समझी जाएगी। एक-एक करके महिलाओं ने अपनी कहानियाँ सुनाईं। कई महिलाओं ने अपने घरों में हुई हिंसा, शिविर तक की खतरनाक यात्रा और बस्ती में जीवित रहने की चुनौतियों के बारे में बताया। उन्होंने दुर्व्यवहार के उन अनुभवों को बयान किया जिन्होंने उन्हें गहरे घाव दिए थे, हर कहानी उनके जीवित रहने के लिए दिखाए गए साहस का एक जीता-जागता प्रमाण थी। उनकी कहानियाँ सुनते हुए, लीसा ने उन बोझों को देखा जिन्हें वे अकेले उठा रही थीं, और उसे एहसास हुआ कि आखिरकार अपनी आवाज़ सुनाए जाने से उन्हें कितना बड़ा सहारा मिल सकता है।
लीसा ने तुरंत कार्रवाई की और शिविर में मौजूद इन महिलाओं के अधिकारों की वकालत की। उन्होंने शिविर के आयोजकों से संपर्क किया और उन महिलाओं के लिए बेहतर सुरक्षा की मांग की, जिन्होंने पहले ही बहुत कुछ सहा था। यह समझते

हुए कि एक दीर्घकालिक समाधान की आवश्यकता है, लीसा ने आघात परामर्श और कानूनी सहायता में विशेषज्ञता रखने वाले स्थानीय गैर-सरकारी संगठनों के साथ समन्वय किया, जिससे यह सुनिश्चित करने में मदद मिली कि महिलाओं को भावनात्मक सहारा मिले और वे अपने अधिकारों के बारे में जान सकें। उन्होंने अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार संगठनों से भी संपर्क किया और शिविर में बेहतर सुरक्षा उपायों की तत्काल आवश्यकता पर प्रकाश डाला।
अगले कुछ हफ्तों में, लीसा की उपस्थिति महिलाओं के लिए आशा की किरण बन गई। उन्होंने नियमित बैठकें आयोजित कीं जहाँ वे अपने अनुभव साझा कर सकें और एक-दूसरे का समर्थन कर सकें। उन्होंने उन्हें शिविर के भीतर एक सहयोग नेटवर्क बनाने के लिए प्रोत्साहित किया, जिससे उन सभी महिलाओं को भावनात्मक शक्ति और व्यावहारिक सहायता मिल सके जो बोलने से डरती थीं। इन बैठकों के माध्यम से, महिलाओं ने एकजुटता पाई और यह महसूस किया कि वे अपने संघर्षों में अकेली नहीं हैं। साथ मिलकर, उन्होंने अपने मनोबल को फिर से मजबूत करना शुरू किया और एक समुदाय के रूप में अपनी शक्ति को पहचाना। अपने प्रभाव को और व्यापक बनाने के लिए, लीसा ने एक वेबसाइट शुरू की, जो जरूरतमंद महिलाओं की मदद के लिए समर्पित एक मंच है। उन्होंने इसका नाम वुमन रिक्लेमिंग स्ट्रेंथ (डब्ल्यूआरएस) रखा और टैगलाइन दी, "आपकी आवाज, हमारी ताकत"। वेबसाइट पर सदमे से उबरने, कानूनी सहायता और सुरक्षित रूप से मदद मांगने के तरीकों के बारे में संसाधन उपलब्ध थे। लीसा ने उन महिलाओं की सफलता की कहानियाँ भी साझा कीं जिन्होंने अपनी ताकत वापस पाई थी, जिससे प्रोत्साहन मिला और यह दिखाया गया कि उबरना संभव है।
यह वेबसाइट संकट में फंसी महिलाओं के लिए जीवन रेखा बन गई। इसमें एक गोपनीय हेल्पलाइन थी, जो महिलाओं को सदमे से निपटने में विशेषज्ञता रखने वाले परामर्शदाताओं से जोड़ती थी। इसमें एक कानूनी सलाह अनुभाग भी था, जहां महिलाएं अपने अधिकारों के बारे में मुफ्त मार्गदर्शन प्राप्त कर सकती थीं, जिससे यह सुनिश्चित होता था कि यदि वे अपनी वर्तमान परिस्थितियों से बाहर नहीं निकल सकतीं, तब भी उनकी सुरक्षा हो। लीसा नियमित रूप से वेबसाइट को अपडेट करती रहती थीं और यह जानकारी साझा करती थीं कि महिलाएं अलग-थलग या खतरनाक परिस्थितियों में भी संसाधनों तक कैसे पहुंच सकती हैं।

वेबसाइट की सफलता के साथ, लीसा ने इसका दायरा बढ़ाते हुए इसमें आत्मरक्षा ट्यूटोरियल, भावनात्मक उपचार पद्धतियाँ और ऐसे मंच शामिल किए जहाँ महिलाएँ गुमनाम रूप से अपनी कहानियाँ साझा कर सकें और समान चुनौतियों का सामना कर रही अन्य महिलाओं से जुड़ सकें। वेबसाइट तेज़ी से पूरे क्षेत्र में कठिनाइयों का सामना कर रही महिलाओं के लिए एक सहायक और सशक्त मंच बन गई। इसने महिलाओं को, चाहे वे कहीं भी हों, मदद मांगने, संसाधन खोजने और यह जानने का अवसर दिया कि वे अकेली नहीं हैं।
शिविर में वापस आकर बदलाव स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था। जो महिलाएं कभी डर के मारे अलग-थलग पड़ गई थीं, वे अब एक-दूसरे से शक्ति प्राप्त कर रही थीं और एक मजबूत समुदाय का निर्माण कर रही थीं। लीसा अथक परिश्रम करती रही। हर गुजरते दिन के साथ, वे और अधिक सशक्त होती गईं और अपने जीवन के उन हिस्सों को पुनः प्राप्त करती गईं जो कभी खोए हुए प्रतीत होते थे।
जब लीसा के जाने का समय आया, तो महिलाओं ने विदाई देने के लिए एक छोटा सा जमावड़ा किया। उन्होंने हार्दिक भावों से आभार व्यक्त किया, और हर किसी की परिवर्तन की कहानी उस शक्ति का प्रमाण थी जिसे उन्होंने खोज निकाला था। अपने शहर में वापस आकर, लिसा ने वुमन रिक्लेमिंग स्ट्रेंथ वेबसाइट का संचालन जारी रखा, जिसका उपयोग उन्होंने लचीलेपन की कहानियों को बढ़ावा देने और दुनिया भर की महिलाओं को संसाधन प्रदान करते रहने के लिए एक माध्यम के रूप में किया।
वित्तीय स्वतंत्रता: सशक्तिकरण के लिए कार्यशालाएँ
लीसा की भारत के ग्रामीण इलाकों की यात्रा हमेशा से सामाजिक न्याय के प्रति उनकी अटूट प्रतिबद्धता से प्रेरित रही थी, लेकिन इस विशेष यात्रा ने उनके दिल पर गहरी छाप छोड़ी। जिस छोटे कस्बे में उन्होंने दौरा किया, वह संस्कृति से भरपूर था, फिर भी पीढ़ियों से जड़े गहरे पितृसत्तात्मक मानदंडों से दबा हुआ था। वहाँ पहुँचकर उन्होंने एक ऐसे समुदाय को पाया जहाँ परंपरा महिलाओं को बुरी तरह बांधे रखती थी, और पतियों पर आर्थिक निर्भरता ने कई महिलाओं को दुर्व्यवहारपूर्ण रिश्तों में जकड़ रखा था, जिनसे निकलने का कोई रास्ता नज़र नहीं आता था।
गांव भर की महिलाओं से बात करते हुए लीसा ने एक दुखद प्रवृत्ति देखी: परिवार अक्सर अपनी जीवन भर की बचत भव्य शादियों में लगा देते थे, जिससे नवविवाहितों पर भारी दबाव पड़ता था। ये शादियां परिवार की प्रतिष्ठा का

प्रतीक बन जाती थीं, और महिलाएं, हालांकि शादी समारोह में सम्मानित होती थीं, अक्सर आर्थिक रूप से कमजोर हो जाती थीं और उनसे उम्मीद की जाती थी कि वे अपनी स्वतंत्रता को शादी के अधीन कर लें। इस निर्भरता के कारण महिलाओं के लिए शादी छोड़ना मुश्किल हो जाता था, यहां तक कि जब उन्हें भावनात्मक और मौखिक दुर्व्यवहार का सामना करना पड़ता था - दुर्व्यवहार का एक ऐसा रूप जिसे उनके समुदाय में अक्सर नजरअंदाज या कम करके आंका जाता था।
उनकी कहानियाँ सुनकर लीसा का संकल्प और भी दृढ़ हो गया। उसने महसूस किया कि ये महिलाएँ बदलाव के लिए उत्सुक तो थीं, लेकिन उनके पास इसके लिए साधन, समर्थन और आत्मविश्वास की कमी थी। बदलाव लाने के दृढ़ निश्चय के साथ, उसने एक योजना बनानी शुरू की। उसका लक्ष्य उनकी परंपराओं को खत्म करना नहीं था, बल्कि उन्हीं परंपराओं के भीतर उन्हें वह स्वायत्तता दिलाना था जिसकी वे हकदार थीं। अगर वह उन्हें वित्तीय साक्षरता, करियर कौशल और कानूनी जागरूकता प्रदान कर सके, तो वे अपने जीवन पर पुनः नियंत्रण पा सकती हैं। लीज़ा ने अपने सपने को साकार करने के लिए कार्यशालाओं की एक श्रृंखला आयोजित की। वह जानती थीं कि एक सुरक्षित, गैर-भेदभावपूर्ण वातावरण बनाना कितना महत्वपूर्ण है जहाँ ये महिलाएं सहारा महसूस कर सकें। पहली कार्यशाला सरल थी—गाँव के सामुदायिक केंद्र में एक सभा, जहाँ लीज़ा और उनकी टीम ने अपना परिचय दिया। उन्होंने समान पृष्ठभूमि वाली अन्य महिलाओं की कहानियाँ साझा करके शुरुआत की, जिन्होंने सफलतापूर्वक निर्भरता से मुक्ति पाई थी। महिलाओं ने आशा और सावधानी के मिश्रण के साथ सुना, अनिश्चित होते हुए भी उत्सुकता से।
बाद की कार्यशालाओं में, लीसा ने व्यक्तिगत बजट, बचत और वित्तीय स्वतंत्रता की शक्ति जैसी अवधारणाओं से परिचित कराया। उन्होंने उन्हें बैंक खाते खोलना, आपातकालीन निधि बनाना और कम से कम आय में भी पैसे का प्रबंधन करना सिखाया। कई महिलाएं इन बुनियादी कौशलों के प्रभाव को देखकर आश्चर्यचकित रह गईं; उन्हें वित्तीय स्वायत्तता के बारे में बहुत कम जानकारी थी और वे मानती थीं कि उनके पति ही हमेशा पैसों का प्रबंधन करेंगे।
महिलाओं का उत्साह बढ़ता देख, लीसा ने अतिथि वक्ताओं को आमंत्रित किया— आस-पास के कस्बों और शहरों की सफल महिलाएं जिन्होंने सिलाई, कढ़ाई और छोटे पैमाने की खेती में अपना करियर बनाया था। इन वक्ताओं ने अपनी यात्रा,

शुरू में, उनमें से कई हिचकिचाईं, अपने पतियों और परिवारों को चुनौती देने के विचार से असहज महसूस कर रही थीं। लेकिन सलाहकारों के बोलने के साथ ही, उन्हें बदलाव महसूस होने लगा। कुछ महिलाओं ने तो संपत्ति के अधिकारों के लिए आवेदन करने और पति से अलग होने की प्रक्रिया के बारे में भी सवाल पूछे। यह नई जानकारी उनके लिए एक तरह की मुक्ति थी; उन्हें एहसास हुआ कि वे एक ऐसे पिंजरे में रह रही थीं जिसका दरवाजा खुला था—उन्हें बस यह पता नहीं था कि वे बाहर निकल सकती हैं।
कार्यशालाओं के समापन पर, लीसा ने समूह से अंतिम बार बात की। उन्होंने कहा, “निर्णय आपका है। मैं केवल आपका मार्गदर्शन कर सकती हूँ। चाहे आप अभी कदम उठाएँ या बाद में, यह जान लें कि आपकी पहचान आपके विवाह, आपके परिवार या किसी और से नहीं होती। आपकी पहचान आपकी शक्ति और आपके द्वारा चुने गए जीवन से होती है।”
उनकी बातों ने सबका दिल छू लिया। कई महिलाएं खड़ी हो गईं और उन्हें गले लगा लिया, उन्होंने जो उम्मीद और हिम्मत दी थी, उसके लिए वे आभारी थीं। कुछ ने पहले ही छोटे व्यवसाय शुरू करने या अंशकालिक काम करने का फैसला कर लिया था, जबकि अन्य ने घर में होने वाले दुर्व्यवहार से निपटने के लिए कदम उठाए। कई महिलाओं के लिए यह सफर अभी शुरू ही हुआ था, लेकिन उनमें जो सशक्तिकरण का भाव था, वह स्पष्ट था।
यौनकर्मियों की आवाज़: बदलती कथाएँ
लियाना का काम शिविरों और कार्यशालाओं तक ही सीमित नहीं था। गैर-सरकारी संगठनों के साथ अपने सफर के दौरान, लीसा कई हाशिए पर पड़े समुदायों से मिलीं, जिनमें से प्रत्येक को अनूठी चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा था, जिन्हें अक्सर मुख्यधारा का समाज अनदेखा कर देता था। हालांकि, यौनकर्मियों की दुर्दशा ने उनके दिल को गहराई से झकझोर दिया। इस समुदाय को सामाजिक कलंक के सबसे कठोर रूपों का सामना करना पड़ता था, उन्हें अक्सर बुनियादी अधिकारों से वंचित रखा जाता था, और वे लगातार आलोचना के साये में जीती थीं। लीसा के लिए, इन महिलाओं को अपनी बात कहने का अधिकार, सम्मान का एहसास और सबसे महत्वपूर्ण बात, ऐसे अवसरों तक पहुंच मिलनी चाहिए जो उन्हें स्वस्थ और अधिक स्थिर जीवन जीने के लिए सशक्त बना सकें।
असंख्य साक्षात्कारों और चर्चाओं के माध्यम से, लीसा ने इन महिलाओं के दैनिक संघर्षों को गहराई से समझा। उन्हें नियमित स्वास्थ्य सेवाओं तक

कार्यकर्ताओं, पत्रकारों और कलाकारों के साथ मिलकर, उन्होंने सामुदायिक कार्यक्रम, सार्वजनिक वार्ताएं और कला प्रदर्शनियां आयोजित कीं, जिनमें उन महिलाओं की वास्तविक कहानियों और दृढ़ता को दर्शाया गया जिनके साथ उन्होंने काम किया था।
लिसा ने सरकारी अधिकारियों से भी संपर्क साधा और यौनकर्मियों को बेहतर सुरक्षा और अवसर प्रदान करने वाली नीतियों के लिए दबाव डाला। उनके प्रयासों से इन महिलाओं के संघर्षों को सार्वजनिक रूप से देखा गया और जनता उन्हें केवल आंकड़ों के रूप में नहीं, बल्कि सपनों, आशंकाओं और संभावनाओं से भरी व्यक्तियों के रूप में समझने लगी।
समय बीतने के साथ, लीसा की पहल के उल्लेखनीय परिणाम दिखने लगे। समुदाय यौनकर्मियों को अधिक सहानुभूति और समझ के साथ देखने लगा, और महिलाओं ने स्वयं को अभूतपूर्व रूप से सशक्त महसूस किया। कई महिलाओं के लिए, यह पहली बार था जब उन्होंने वास्तव में समर्थन और सम्मान का अनुभव किया था। स्वास्थ्य सेवाओं से उनके जीवन स्तर में सुधार हुआ और सुरक्षा की भावना बढ़ी। कानूनी सहायता कार्यक्रम ने उन्हें अपने हक के लिए खड़े होने का साहस दिया, कौशल प्रशिक्षण ने उन्हें वैकल्पिक करियर के रास्ते दिखाए और वकालत अभियान ने जनमानस में बदलाव लाना शुरू कर दिया। लीसा ने उन्हें सिर्फ संसाधन ही नहीं दिए, बल्कि उन्हें गरिमा और आत्मसम्मान का एहसास भी दिलाया।
इस पहल ने जिंदगियां बदल दीं। कई महिलाएं जो पहले खुद को फंसा हुआ महसूस करती थीं, उन्हें संभावनाओं से भरा भविष्य दिखने लगा। वे अब समाज द्वारा तय किए गए ढर्रों से खुद को परिभाषित नहीं करती थीं, बल्कि अपनी आकांक्षाओं और दृढ़ता से खुद को परिभाषित करती थीं। लीसा के लिए यह एक बेहद संतोषजनक सफर था। उन्होंने हाशिए पर पड़े समुदायों के लिए स्थायी बदलाव लाने में लक्षित समर्थन की शक्ति को समझा, जिससे सहानुभूति, सशक्तिकरण और वकालत के महत्व में उनका विश्वास और मजबूत हुआ।
अपने आस-पास उन महिलाओं को देखते हुए, जो उसकी मित्र, सहयोगी और बदलाव की सह-निर्माता बन चुकी थीं, लीसा को गर्व का गहरा अहसास हुआ। वह हमेशा से समुदाय की शक्ति में विश्वास करती थी, लेकिन इस अनुभव ने उसे दिखाया कि जब इसे सच्चे समर्थन और समझ के साथ जोड़ा जाता है तो यह कितना परिवर्तनकारी हो सकता है। उसने सशक्तिकरण की एक विरासत बनाने में मदद की थी, इन महिलाओं

को यह दिखाया था कि वे अकेली नहीं हैं और उनकी आवाज़ मायने रखती है। और जैसे-जैसे यह पहल बढ़ती गई, उसे पता था कि साथ मिलकर वे एक ऐसी दुनिया का निर्माण कर रही हैं जहाँ हर कोई, अपने अतीत की परवाह किए बिना, गरिमा, सम्मान और आशा से भरा एक नया मार्ग बना सकता है।
इन अनुभवों के माध्यम से, लियाना का सामाजिक न्याय के प्रति समर्पण और भी गहरा हो गया। वह केवल सहायता प्रदान नहीं कर रही थीं; वह व्यक्तियों को सशक्त बना रही थीं। चाहे वह शरणार्थी महिलाओं को उनकी गरिमा पुनः प्राप्त करने में मदद करना हो, आर्थिक रूप से आश्रित महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने में सहायता करना हो, या यौनकर्मियों को सुरक्षित और स्वस्थ जीवन सुनिश्चित करने में मदद करना हो, लियाना आशा की किरण बन गईं। उनका काम हर समस्या का समाधान करना नहीं था, बल्कि यह विश्वास जगाना था कि एक बेहतर जीवन संभव है।
लियाना अपने घर में बैठी थी, चारों ओर कागज़ बिखरे हुए थे जिनमें उसकी महिला सशक्तिकरण वेबसाइट के लिए अगले कदमों की रूपरेखा लिखी थी। ज़ूरी पास ही ज़मीन पर लेटी हुई थी और अपनी स्केचबुक में खुशी-खुशी कुछ न कुछ बना रही थी। तभी दरवाजे पर दस्तक हुई और उस पल की शांति भंग हो गई।
यह उनकी सहकर्मी, श्रीमती कपूर थीं, जो हंसमुख स्वभाव की एक बुजुर्ग महिला थीं और विवाह कराने में माहिर थीं। लियाना ने गर्मजोशी भरी मुस्कान के साथ उनका अभिवादन किया, हालांकि उसे आने वाले खतरे का अंदाजा था।
"शुभ संध्या, लियाना," श्रीमती कपूर ने अंदर कदम रखते हुए चहकते हुए कहा। "मैं तुम्हारे लिए कुछ घर के बने लड्डू लाई हूँ—और एक खबर भी।"
"श्रीमती कपूर," लियाना ने डिब्बा स्वीकार करते हुए उत्तर दिया, "अगर यह मुझे किसी के योग्य बेटे से मिलवाने का एक और प्रयास है, तो आपको पता होना चाहिए कि मैं इस समय दुनिया को जीतने में काफी व्यस्त हूं।"
श्रीमती कपूर ने बेफिक्र होकर हंसते हुए कहा, "अरे, लियाना, तुम तो वाकई कमाल की महिला हो, लेकिन तुम्हें भी थोड़ी मदद की ज़रूरत पड़ सकती है। मतलब, खुद को देखो! एक एनजीओ संभालना, बच्चे की परवरिश करना और अब तुम्हारी ये वेबसाइट—एक इंसान इतना सब कुछ कैसे संभाल सकता है?"
लड्डू रसोई के काउंटर पर रखते हुए लियाना ने भौंहें चढ़ा लीं। "तो तुमने तय कर लिया है कि मुझे एक पति की ज़रूरत है जो मेरे स्प्रेडशीट का हिसाब-किताब रखे और ज़ूरी को सुलाए, बस यही बात है?"

श्रीमती कपूर ने अपनी हथेलियाँ आपस में जोड़ीं, मानो किसी अदृश्य देवता से प्रार्थना कर रही हों। "बेटा, मेरी बात सुनो। एक प्यारा सा नौजवान है - अर्जुन, लंदन में एक सॉफ्टवेयर इंजीनियर। सुंदर, स्थिर और बच्चों से बेहद प्यार करने वाला। ज़रा सोचो। थोड़ी सी मदद से बहुत फर्क पड़ सकता है। तुमने पहले ही साबित कर दिया है कि तुम काबिल हो, लेकिन सबसे मजबूत पेड़ को भी सीधा बढ़ने के लिए सहारे की ज़रूरत होती है।"
लियाना काउंटर से टेक लगाकर खड़ी थी, उसकी बाहें मुड़ी हुई थीं और होठों पर एक शरारती मुस्कान थी। "श्रीमती कपूर, मैं आपकी चिंता और आपके उपमाओं की सराहना करती हूँ। लेकिन मैं आपको एक बात बताना चाहती हूँ। मैं कोई पेड़ नहीं हूँ। मुझे सीधा खड़ा रखने के लिए किसी सहारे, रस्सी या किसी बड़े पद वाले आदमी की ज़रूरत नहीं है। मैंने कई तूफान देखे हैं और आज भी मैं फल-फूल रही हूँ। यह विचार कि मुझे 'पूर्ण' होने के लिए किसी पुरुष की ज़रूरत है, पूरी तरह से पुराना हो चुका है, क्या आपको ऐसा नहीं लगता?"
श्रीमती कपूर एक पल के लिए स्तब्ध दिखीं, लेकिन जल्दी ही संभल गईं। "लियाना, तुम हमेशा से स्वतंत्र रही हो। मैं इसकी प्रशंसा करती हूँ, सचमुच। लेकिन साथ के बारे में क्या? साझेदारी के बारे में? कोई ऐसा जिसके साथ बोझ बाँटा जा सके?"
लियाना मुस्कुराई, उसकी आवाज़ थोड़ी नरम हो गई। "आह, बोझ! हाँ, कभी-कभी बहुत भारी लगता है। लेकिन आप जानती हैं, श्रीमती कपूर? मैंने इसे उठाना सीख लिया है। मैंने एक ऐसा जीवन जीना सीख लिया है जिसे मैं प्यार करती हूँ, एक ऐसा जीवन जहाँ ज़ूरी और मैं खुश, संतुष्ट और स्वतंत्र हैं। मुझे किसी राजकुमार की ज़रूरत नहीं है जो आकर मुझे 'बचाए'। मेरे पास अपना घोड़ा है - और वह किसी भी राजकुमार के घोड़े से तेज़ है।"
ज़ूरी, जो ज़मीन पर चुपचाप बैठी सुन रही थी, ने ऊपर देखा और बोली, "मम्मी को राजकुमार की ज़रूरत नहीं है। वो तो रानी हैं!"
लियाना हंस पड़ी और झुककर ज़ूरी के बालों को सहलाते हुए बोली, "तुमने बिल्कुल सही कहा, मेरी नन्ही कलाकार।"
श्रीमती कपूर ने आह भरी, हालांकि उनकी आँखों में प्रशंसा की झलक थी। "तुम बड़ी जिद्दी हो, लियाना। लेकिन शायद इसीलिए तुम इतनी प्रेरणादायक हो। ठीक है, अर्जुन नहीं। पर वादा करो कि कम से कम लड्डू तो रखोगी।"

"यह सौदा मैं कर सकती हूँ," लियाना ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया और अपने मेहमान को दरवाजे तक छोड़ने लगी।
जैसे ही दरवाजा बंद हुआ, लियाना हल्के मन से अपने कागजों पर लौट आई। वह कड़वाहट या विद्रोह के कारण शादी को अस्वीकार नहीं कर रही थी। वह बस अपने भीतर गहराई से जानती थी कि वह पूर्ण है—अपने जीवन की रानी, जिसे किसी राजा की आवश्यकता नहीं है।

उपसंहार

लियाना का हमेशा से सपना था कि उसका अपना घर हो—एक ऐसा घर जो पूरी तरह से उसका हो, मायके (माता-पिता का घर) या ससुराल (वैवाहिक घर) की अपेक्षाओं से मुक्त। उसके दिल में एक ऐसी जगह की चाह थी जहाँ वह बस खुद को महसूस कर सके, एक ऐसी जगह जो स्वतंत्रता, शांति और अपनेपन की भावना से भरी हो, जो पूरी तरह से उसकी अपनी हो। स्वतंत्रता की ओर उसकी यात्रा ने उसे एक ऐसा सुरक्षित स्थान बनाने का महत्व सिखाया था जहाँ वह अपने जीवन और महत्वाकांक्षाओं को पूरी तरह से जी सके।
यह सफर आसान नहीं था। गैर-सरकारी संगठनों के साथ काम करना, परिवार की अपेक्षाओं को संभालना और डाउन पेमेंट के लिए लगन से बचत करना, दृढ़ संकल्प की एक बड़ी उपलब्धि थी। बचाया गया हर रुपया उसके सपने के एक कदम और करीब ले जा रहा था। महीनों की सावधानीपूर्वक योजना के बाद, उसने आखिरकार गृह ऋण के लिए आवेदन किया। जब उसे स्वीकृति पत्र मिला, तो उसने उसे कसकर पकड़ लिया, दस्तावेज़ पर अपना नाम देखते हुए उसके हाथ कांप रहे थे। बस यही था। यही उसका भविष्य था, यही उसका घर था।
अगले कुछ सप्ताह कागजी कार्रवाई, संपत्ति देखने और अनगिनत विकल्पों में व्यस्त रहे। अपनी बेटी ज़ूरी के साथ, लियाना को एक सुंदर, आरामदायक अपार्टमेंट मिला जो उसे तुरंत पसंद आ गया। यह बहुत बड़ा नहीं था, लेकिन इसमें धूप से जगमगाती बालकनी, पौधों के लिए एक छोटा सा बगीचा और एक शांत कोना था जिसे उसने पढ़ने के लिए एक आरामदायक जगह और ज़ूरी के लिए एक प्यारा कमरा बनाने की कल्पना की थी। यह बिल्कुल सही था।
जिस दिन लियाना ने अंतिम कागजात पर हस्ताक्षर किए, उसे गर्व और उपलब्धि का असीम एहसास हुआ। यह अपार्टमेंट उसके लिए महज़ एक जगह नहीं थी—यह उसकी आज़ादी थी, खुद के प्रति उसकी प्रतिबद्धता थी, और आत्म-खोज और दृढ़ता की उसकी यात्रा का प्रमाण था। नए घर में कदम रखना मानो एक नए अध्याय में प्रवेश करने जैसा था, एक ऐसा अध्याय जहाँ वह अब अपेक्षाओं या परंपराओं से बंधी नहीं थी। यह घर उसका अपना था।
वहाँ बसने के बाद, लियाना और ज़ूरी ने उस जगह को अपना बना लिया। उन्होंने पुरानी चीज़ों, स्थानीय कारीगरों की कलाकृतियों और अपनी साझा यादों को दर्शाने वाली छोटी-छोटी चीज़ों से उसे सजाया। जल्द ही दीवारें गर्माहट और

हंसी से भर गईं, और वह जगह अपनेपन की उस भावना से गूंज उठी जिसकी लियाना को लंबे समय से चाह थी।
नई मिली आज़ादी के बावजूद, लियाना अपने परिवार के प्रति समर्पित थी। वह जानती थी कि परिवार उससे "राजा बेटा" (परिवार की ज़िम्मेदारियाँ उठाने वाला प्रिय पुत्र) की भूमिका निभाने की उम्मीद करता है, क्योंकि राज, जो कभी परिवार का प्रिय पुत्र था और स्वाभाविक रूप से परिवार की ज़िम्मेदारियाँ संभालने की उम्मीद की जाती थी, अब अपना अलग रास्ता बनाने में व्यस्त हो गया था। उसने विदेश में आगे की पढ़ाई के लिए छात्रवृत्ति प्राप्त की, और जो शुरू में एक अस्थायी कदम था, वह स्थायी निवास में बदल गया। घर पर फोन कम होने लगे, और हालाँकि वह अपने माता-पिता की परवाह करता था, शारीरिक दूरी के कारण व्यावहारिक ज़िम्मेदारियाँ लियाना पर आ गईं। फिर भी, वह अपने तरीके से उन उम्मीदों को पूरा करने के लिए दृढ़ थी। उसने अपने नए घर और माता-पिता के प्रति अपनी ज़िम्मेदारियों के बीच समय का संतुलन बनाए रखा, यह सुनिश्चित करते हुए कि उनकी अच्छी तरह से देखभाल और सहायता हो। उसने आर्थिक ज़िम्मेदारियाँ संभालीं, अपने माता-पिता और भाई का भी सहारा बनी रही, यह सुनिश्चित करते हुए कि उनके पास ज़रूरत की हर चीज़ हो।
साथ ही, गैर सरकारी संगठनों के साथ उनका काम जारी रहा। हर दिन नई चुनौतियाँ और कहानियाँ सामने आती थीं, जो बदलाव लाने के उनके जुनून को और भी बढ़ाती थीं।
शाम को वह अपने अपार्टमेंट में लौट आती, जहाँ ज़ूरी अक्सर कहानियों की किताब लेकर उसका इंतज़ार करती रहती और उसके दिन भर की बातें सुनने के लिए उत्सुक रहती। वे अपनी कहानियाँ और हँसी-मज़ाक बाँटतीं, और अपने छोटे से घर को खुशी, दृढ़ता और साझा सपनों से भरे एक स्वर्ग में बदल देतीं। ऐसे भी दिन आते थे जब ज़िम्मेदारियों का बोझ असहनीय लगता था, लेकिन लियाना को इस बात से सुकून मिलता था कि उसने यह जीवन अपनी शर्तों पर, पूरी तरह से अपने निजी स्थान पर बनाया है।
उसका अपार्टमेंट महज रहने की जगह से कहीं बढ़कर बन गया था; यह उसके आत्मसम्मान का प्रतीक था, इस बात का प्रमाण था कि उसे अपनी पहचान पाने के लिए किसी मायके या ससुराल की ज़रूरत नहीं थी। यहाँ उसे अपने परिवार की देखभाल और आत्मनिर्भर जीवन जीने के बीच संतुलन मिला। यह संतुलन उसे एक

□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□, □□ □□□ □□□□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□